

नर-पशु

रूस के संसार प्रसिद्ध लेखक

मैक्सिम गोर्की

का सुन्दर और सजीव उपन्यास ।

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178800

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. **H83**
G66N Accession No. **PG**
H595
Author **गोपी, मैसिम**
Title **नरयणु . अडु . गंगापतिसिंह**

This book should be returned on or before the date
last marked below.

नर-पशु

अनुवादक

श्रीगंगापति सिंह, बी० ए०

[भूतपूर्व हिन्दी-अध्यापक, कलकत्ता-विश्वविद्यालय]

प्रकाशक



द्वितीय संस्करण

मूल्य एक रुपया

मुद्रक

ह० मा० सप्रे,

श्रीलक्ष्मीनारायण प्रेस, जतनवर, बनारस ।

१

हाई-स्ट्रीट के दोनों बगल की एकतल्ला शोपड़ियाँ लगातार एक दूसरे के आमने-सामने बसी हुई थीं। वे बहुत पुरानी थीं। उनकी दीवारें झुकी हुई, खिड़कियाँ टेढ़ी-मेढ़ी और छतें टूटी-फूटी थीं। कालचक्र ने उनकी सूरत बिगाड़ डाली थी। वे पतले-पतले तख्तों से पटी हुई थीं। उनके आसपास की ऊँची ज़मीन में ऊँचे-ऊँचे मकानों के लम्बे-लम्बे खम्भे खड़े थे।

उन शोपड़ियों की छतों को धूल से भरे बेंत के पौधों तथा अन्य बड़े-बड़े वृक्षों ने ढँक लिया था। पड़ोस में जो झुरमुट नज़र आते थे, उनमें विचित्र घनी झाड़ियाँ फैली हुई थीं। वहीं पर निहायत गरीब लोगों की बस्ती थी। शोपड़ियों की खिड़कियों के शीशे पर हरे रङ्ग के धब्बे पड़ गये थे। ऐसा प्रतीत होता था, मानों वे खिड़कियाँ एक दूसरे को चोरों की नाई, चञ्चल और डरती हुई नज़रों से, घूर रही हैं।

सड़क के बीच से एक टेढ़ी नहर, गहरे गड्ढों से होकर, बहती थी, जिसके द्वारा वर्षा का सारा पानी निकलता था। उस नहर के अड़ोस-पड़ोस में टूटे-फूटे ईंट-पत्थरों के ढेर पड़े थे। उन ढेरों पर घास जम गई थी। ईंट-पत्थर के वे ढेर बहुत पुराने ज़माने से वहाँ पड़े रह गये थे; क्योंकि वहाँ के निवासियों ने समय-समय पर वहाँ मकान बनवाने के प्रयत्न तो बहुत किये थे, किन्तु इसलिये विफल होते चले आते थे कि उससे कहीं ऊँची ज़मीन पर जो एक शहर बसा हुआ था, उसके पानी का बहाव उन्हें नष्ट-भ्रष्ट कर डालता था।

पास की पहाड़ी पर, जहाँ वृक्षों के घने कुञ्ज छा रहे थे, पत्थर की बनी बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएँ थीं। उनके साथ-साथ गिरजा-घरों के मीनार, मानों बड़े गर्व के साथ, नीले आकाश को चूम रहे थे—उनके मुनहले रङ्ग के 'क्रॉस' * सूर्य की किरणों से चमक रहे थे।

बरसात में शहर-भर का पानी बह कर शहर के बाहरी निकास पर गिरता था। गर्मी के मौसम में सारी धूल उड़ कर छप्परोँ पर पड़ती थी। शोपड़ियों की दुहरी कतार को देखने से मालूम पड़ता था कि कभी किसी शक्तिशाली पुरुष की विशेषज्ञता द्वारा ये बसाई गई थीं।

यह ग्राम किसी प्रकार कुछ मनुष्यों के लिये एक शरण-स्थल था। इसकी दुर्दशा का अनुमान केवल इतने ही से किया जा सकता है कि इसका लगभग आधे से अधिक हिस्सा नष्ट-भ्रष्ट हो गया था। इस बस्ती की आड़ में एक पहाड़ी पड़ती थी। धूप, धूल और वर्षा की वजह से प्रायः यह बस्ती विचित्र शोभा को प्राप्त होती थी—जान पड़ता था, जैसे यह अपने स्थान के पुराने नष्टप्राय जङ्गलों की प्रतिनिधि हो। इस बस्ती की सड़क के अन्तिम छोर पर एक लम्बा सा दो-मखिला पुराना मकान था, जिसे देखने ही से मालूम पड़ता था कि शहर ने मानों इसे अपनी सीमा से बहिष्कृत कर दिया हो—जैसे शहर से इसका कोई सरोकार ही न हो। इस मकान को 'पेटनिकफ' नामक किसी सौदागर ने खरीदा था। यही अपनी पंक्ति का आखिरी मकान था। यह पहाड़ी की जड़ या तलहटी के बिल्कुल पास ही पड़ता था। इसी के सामने एक

* जैसे शिव-मन्दिर के गुम्बद की चोटी पर त्रिशूल और विष्णु-मन्दिर के शिखर पर चक्र रहता है, वैसे ही ईसाइयों के गिरजों पर वह क्रॉस।—अनुवादक

मैदान भी था, जो इससे लगभग एक मील की दूरी तक नदी की ओर ढालू पड़ता था ।

यह बड़ा और बहुत दिनों का पुराना मकान अपने पड़ोस के मकानों से सर्वथा विचित्र था । इसकी दीवारें टेढ़ी थीं । इसकी खिड़कियों में से कोई एक भी ऐसी नहीं थी, जिसके पूर्व रूप में कोई परिवर्तन न हुआ हो । उन खिड़कियों के बचे-खुचे शीशों के टुकड़ों पर वैसी ही काँई जम गई थी, जैसी बँधे पानी वाले पोखरे के जल पर जम जाती है । खिड़कियों के बीच की दीवारों के पलस्तर के गिर जाने के कारण मकान बदसूरत हो गया था । दर्शकों को ऐसा ज्ञात होता था, मानों नक्कासियों को उजाड़ कर ही भ्रष्ट लिपि में क्रूर काल ने इस मकान का इतिहास लिखा है । सचमुच करुणा-जनक दृश्य था ! इसकी छत भी सड़क की तरफ झुकी हुई थी, मानों मकान झुक कर जमीन को सलाम कर रहा था—नहीं, बल्कि नम्र भाव से प्रतीक्षा कर रहा था कि भाग्य-विधाता अपने अन्तिम दंड-प्रहार से मुझे मिट्टी में मिला देंगे अथवा भग्न-प्राय कुरूप खँड़हर के रूप में परिणत कर देंगे ।

इस मकान के—सामने वाले—दरवाजे खुले थे । फाटक का एक खम्भा, जिससे किवाड़ के कब्जे हट गये थे, जमीन पर गिर गया था । किवाड़ों के तख्तों के दरारों में घास जम गई थी । भीतर का उजाड़ आँगन भी घासों से आच्छादित हो रहा था । आँगन के आखिरी हिस्सों में एक महज़ छोटी-सी शोपड़ी थी, जो धुएँ से काली पड़ गई थी । शोपड़ी का छप्पर लोहे की चद्दर का बना था ।

इस मकान में कोई रहता नहीं था, लेकिन प्रायः वह भाड़े पर चलता था । इसमें भूतपूर्व फौजी अफसर 'फोमिच' रहने लगा था । इसमें एक लम्बी-सी अँधेरी गुफा थी, जिसके अन्दर चार सम-वस्तुभुज

नर-पशु

आकार की खिड़कियाँ थीं। साथ ही, एक चौड़ा दरवाज़ा भी था, जिससे होकर गुफा के अन्दर काफी रोशनी पहुँचती थी। बिना पलस्तर लगी ईंट की दीवारें, धुएँ की वजह से, भयावनी काली हो गई थीं। धुएँ ही के कारण भीतरी छत भी काली हो गई थी।

बीच आँगन में एक बड़ी भट्टी थी, जिसके चारों ओर—दीवारों के पास—लकड़ी के तख्तपोश रखे थे, जिनपर चिथड़ों के ढेर पड़े रहते थे, जो भट्टियों के बिछाने के काम में आते थे। दीवारें तो धुएँ से बदरंग हो ही गई थीं, मिट्टी का फर्श भी सील से भरा था। मालिक का तख्तपोश ठीक भट्टी पर था, जिसके आसपास के बिछौने बड़े सम्मान के स्थान समझे जाते थे—वहाँ उन्हीं अन्तरङ्ग मित्रों को जगह दी जाती थी, जो मालिक की कृपा और मित्रता का सानन्द उपभोग कर सकते थे।

मालिक, दिन का अधिकतर भाग, वहीं बिताता था। उसी झोपड़े के दरवाजे पर कुर्सी डटाये बैठा रहता था। कुर्सी भी कैसी? उसी ने ईंटों से खुद अपने हाथों बनाई थी! कभी कभी वह 'बेबिलफ' के शराबखाने में बैठकर अपना समय काटता था। वह शराबखाना रास्ते के ठीक उस पार था, जहाँ फोमिच प्रायः खाना खाता और शराब पीता था। वह पहले शहर की कोठियों में नोकरो की हाजिरी लिखा करता था। उसके जीवन के पूर्वार्द्ध पर दृष्टिपात करने से यह ज्ञात होता है कि उसने कोई छापाखाना भी खोला था। उसकी उम्र लगभग पचास बरस की थी। उसके कन्धे चौड़े थे। मुखड़े पर चेचक के दाग थे। आँखें भूरे रङ्ग की बड़ी-बड़ी और चमकीली थीं। प्रायः अपने दाँतों के बीच चीनी मिट्टी के बने जर्मन हुक्के की टेढ़ी नली को दबाये रहता था। जब क्रोध करता था, उसके नथने फड़कने लगते थे—जीभ काँपने

लगती थी। जब हँसता था, उसके पीले दाँतों की दोनों पंक्तियाँ भेड़िये के कल्ले की-सी मालूम पड़ती थीं। उसके पैर धनुष के समान थे। उसकी पौशाक भी विचित्र थी! पुराना और मैला फौजी ओवर-कोट तथा चिकनी टोपी, जिसमें लाल फीता तो लगा था, पर चोटी नहीं थी! वह जो पुराना फटा बूट पहनता था, सो उसके घुटने तक आता था। सबेरे तो वह बराबर शराब के नशे में चूर रहता था, लेकिन शाम को बड़ा खुश मिजाज नज़र आता था। वह कभी शराबियों की नाईं बेहोश नहीं होता था—ऐसी आदत पड़ गई थी कि चाहे कितना भी शराब ढालता जाय, अपना मौज-मजा और बुद्धि कभी नहीं खोता था।

शाम को वह अपनी—ईंटों की बनी—आरामकुर्सी पर, हुक्के की नली दाँतों-तले दबाये, बैठा-बैठा उस सराय में डेरा डालने वालों का स्वागत किया करता था। जब कभी कोई आदमी अपने घर से, शराबखोरी या और किसी वजह से, निकाला जाकर फटे कपड़े और खिन्न चेहरे के साथ वहाँ आता, तो वह उससे यही प्रश्न करता—तुम कौन हो? और, जब वह आदमी जवाब दे लेता, तब कहीं बैठने पाता। उससे प्रायः वह यह भी कहता कि तुम अपना कागजी सबूत पेश करके इस बात को साबित करो कि तुम झूठ नहीं बोल रहे हो। यदि उस आदमी के पास कोई कागज-पत्र रहता, तो उसे दिखाना पड़ता था। लेकिन उसे लेकर वह धीरे-धीरे अपने कोट की जेब में रख देता था, उसके मजमून को पढ़ने की ज़रा भी परवा नहीं करता था। वहाँ टिकने वालों से वह पहले ही कह देता था।

एक रात के लिये दो आने, एक हफ़्ते के लिये दस आने और एक महीने के लिये सवा रुपया भाड़ा देना होगा। जाओ, अपनी-अपनी जगहों पर चले जाओ। लेकिन सावधान रहना, कहीं दूसरे के स्थान

को न देखकर लेना; नहीं तो पकड़ जाओगे। जो लोग यहाँ रहते हैं, उनको इन नियमों का विशेष ध्यान रखना ही पड़ता है।

नवागन्तुक उससे पूछता—क्या आप चाय और रोटी मँगवा सकते हैं ? क्या आप ये चीजें बेचते हैं ?

वह व्यापारिक ढंग से उत्तर देता—मैं सिर्फ दीवार और छत बेचता हूँ, जिसके लिये मैं इस कन्दरा के मालिक—ब्रदमाश 'पेटनिकफ़'—को महीने में पाँच रुपये देता हूँ। जो लोग मेरे यहाँ आते हैं, वे दुर्व्यसनी नहीं होते ! यदि तुम्हें रोज-रोज शराब पीने की आदत हो, तो वह देखो—ठीक सामने शराब की दूकान है। लेकिन, जहाँ तक सम्भव हो, तुम इस बुरी आदत को छोड़ दो। सचमुच तुम भले आदमी नहीं हो। भला तुम भोजन करना चाहते हो ? इससे तो यही अच्छा होता कि तुम अपने-आप ही को खा जाते।

ऐसे ही विलक्षण व्याख्यानों के कारण, घर से बहिष्कृत लोगों में, 'फोमिच' बड़ा ही लोक-प्रिय हो गया था। उसकी वक्तृता के शब्दों में कृतिम कठिनता होती थी, किन्तु उसकी हास्य-विकसित आँखों से उनमें रोचकता आ जाती थी। अपने किरायेदारों के सुख-सुबीते का वह बड़ा ध्यान रखता करता था। उसकी सर्वप्रियता के ये ही दो कारण थे।

कभी-कभी संयोगवश उसका कोई पुराना किरायादार आ पहुँचता था। वह अन्य किरायेदारों की नाई फटी-पुरानी पोशाक नहीं पहने रहता—न उसका चेहरा ही उदास रहता था, बल्कि उसकी पोशाक बढ़िया और चेहरा प्रसन्न रहता था। दोनों में इस तरह बातें होती थीं—

बन्दगी साहब, आप सकुशल तो हैं ?

सब ठीक है, कुशल ही कुशल है। तुम चाहते क्या हो ?

आप क्या मुझे पहचानते नहीं ?

नहीं तो ।

क्या आपको याद नहीं है कि पिछले जाड़े के मौसम में आपके साथ मैं एक महीने तक था ? उस समय आपके मकान पर पुलिसवालों ने धावा किया था—तीन आदमी गिरफ्तार भी हुए थे ।

भाई मेरे, यह बात तो सचमुच ठीक है कि मेरे यहाँ पुलिस अक्सर आया करती है ।

क्या आपको स्मरण नहीं है कि आपने किस तरकीब से पुलिस के अफसरों को मकान के बाहर रोक रक्खा था ?

खैर, ये सब याद रखने की बातें नहीं हैं । तुम पहले यह बताओ कि चाहते क्या हो ?

मुझे आपसे कुछ कहना है । जब मैं आपके साथ रहा, आप ऐसे—

दोस्त ! कृतज्ञता को बराबर उत्तेजन देना चाहिये । कारण, संयोग-वश ही यह हम लोगों को मिलती है । तुम निस्सन्देह सज्जन पुरुष हो । यद्यपि मुझे कुछ याद नहीं है, तथापि मैं सहर्ष तुम्हारे साथ शराब की दूकान पर चलूँगा और तुम्हारी शुभ-कामना के लिए मदिरा का स्वास्थ्य-पान भी करूँगा ।

वाह जी वाह ! रह गये आप वैसे ही ! आप सदा हँसी-दिल्लगी ही करते रहते हैं ।

अरे भाई, आखिर इन्सान और क्या कर सकता है—खासकर जब वह तुम्हारे ऐसे बदनसीबों के दल में रहे !

नये लोग तो भाग जायँगे आपकी बातें सुनकर ! नया किरायादार तो हिचकिचाहट के साथ डेरे पर लौट ही आवेगा । लेकिन दूसरे दिन जब उसका जल्मा फिर नये सिरे से शुरू होगा, तब मुहावने प्रभात में नशे

नर-पशु

की खुमारी मिटने और होश-हवास दुरुस्त होने पर पर उसे ज्ञात होगा कि उसके पास जो कुछ पैसे थे, सब शराब पीने में खर्च हो गये ! देखिये साहब, चाहे जो हो, एक बार मैं फिर आपके साथ हूँ । अब मैं अधिक क्या करूँ ?

कप्तान (फ़ोमिच) ने कहा—अरे यह शराबखोरी एक ऐसी चीज़ है, जिसके लिये तुम गर्व नहीं कर सकते । लेकिन जब तुम इसमें फँस गये हो, तब रोने—चिल्लाने की क्या ज़रूरत ! दोस्त, तुम्हें अपनी स्थिति पर गम्भीरता-पूर्वक ध्यान देना चाहिये । अपने अमूल्य मानव-जीवन को तर्क-वितर्क में ही न बिताओ । मेरे जानते तत्व-ज्ञान का अनुसन्धान करना सर्वथा निरर्थक है । जब तक शराब का नशा दिमाग से बाहर नहीं निकलता, तब तक तत्वानुसंधान अथवा तर्क-शास्त्र का अनुशीलन महज़ बेवकूफी है । जब तुम्हें एक गिलास शराब पीने को मिलती है, तब तुम्हें उससे भी और बढ़िया शराब पीने की इच्छा होती है । तुम्हें पश्चात्ताप भी नहीं होता ! तुम्हें अपने दाँतों की भी रक्षा करनी चाहिये, नहीं तो आनेवाले दुर्दिन में फिर क्या दिखाकर दया की याचना करोगे ? यह सवा रुपये रखे हैं—जाओ, थोड़ी-सी मदिरा खरीद लाओ । गरम चौप, कटलेट, आध सेर रोटी और दो ककड़ियाँ भी लेते आना । हम लोगों की यह आदत हो गई कि जब हमारा नशा टूट जायगा, तब काम काज के विषय में सोचेंगे । कार्य-प्रणाली भी दो-तीन दिनों में ही स्पष्ट हो जायगी । मालिक-मकान को चार पाँच रुपये देने हैं । एक कृतज्ञ किरायेदार ने जाते वक्त जेब में कुछ रुपये डाल दिये थे, उतने ही से काम चल जायगा ।

इसके बाद भी कप्तान (फ़ोमिच) कहता ही चला गया—यहाँ हम लोग कर्म-रज्जु के अन्तिम छोर में बँधे हैं । हम लोगों के पास जो

कुछ बचा था, सब पी चुके ; अब हमलोगों को संयम-नियम और धर्म की राह पर चलना चाहिये । यह पुरानी कहावत अक्षरशः सत्य है—बड़ी ही सुन्दर है—

जब किसी ने पाप ही नहीं किया, तो वह पश्चात्ताप क्यों करे ? और जब उसने पश्चात्ताप नहीं किया, तो वह कदापि पाप के परिणाम से नहीं बच सकता ।

फ्रोमिच रुका नहीं, कहता ही गया—हम लोगों ने ईश्वर का पहला आदेश तो पूर्ण कर डाला है, इसलिये पश्चात्ताप करने से कुछ लाभ नहीं । हमलोग मुक्ति-पथ पर सीधे चले चलें । नदी के किनारे जाकर अपना रोज़गार शुरू करो । यदि तुम्हें अपने ऊपर विश्वास नहीं है, तो ठेकेदार से कह दो कि वह तुम्हारी मजूरी का रुपया अपने ही पास रखे या मुझे रखने के लिये दे दो । जब शराब छोड़ देने पर हमलोगों के पास काफी बचत हो जायगी, तब मैं तुम्हें बढ़िया पायजामा खरीद दूँगा । साथ ही, उन वस्तुओं को भी ला दूँगा, जिनके उपयोग से तुम वैसे ही सुन्दर दीख पड़ोगे, जैसे भाग्य-विधाता के सताये हुए लोग दीख पड़ते हैं ! जब तुम बढ़िया पायजामा पहनोगे, तभी तुम्हें काम करने का अच्छा मौका हाथ लग सकता है । खैर, अब तुम चले जाओ ।

फ्रोमिच की लम्बी वक्तृता पर मन-ही-मन मुस्कराता हुआ किराया-दार, नदी किनारे अपने काम पर चला गया । वह शनोपदेश का मर्म नहीं समझता था सही, लेकिन फ्रोमिच की आनन्दमयी आँखों और उसकी प्रसन्नचित्ता के प्रभाव को देखकर वह जान गया था कि वाचाल कप्तान उसका एक ऐसा दोस्त है, जो वक्त पड़ने पर जरूर उसकी मदद करेगा ।

सचमुच एक या दो ही महीने के कठिन परिश्रम से उस भड़ैत ने

अपने को घोर आर्थिक संकट से उबार लिया। अब उसने अपने-आपको पहले से कहीं उन्नत और सुधरी हुई दशा में पाया। कोटिशः धन्यवाद है कप्तान फ्रोमिच को, जिसकी सिर्फ कड़ी निगरानी ही नहीं, बल्कि पूरी सहायता से वह इस प्रकार दुर्व्यसन के पंजे से छुटकारा पा सका।

एक दिन फ्रोमिच अपने एक नव परिचित मित्र को शौर से देखकर बोला—दोस्त, आज तो तुम कोट और पायजामा पहने हुए हो ! मेरी बात मान गये न ! सचमुच ये वस्तुएँ बहुत ही आवश्यक हैं। जब तक मेरे पास बढ़िया पायजामे थे, मैं सभ्य पुरुषों की भाँति शहर में रहता था। लेकिन जब वे बुरी तरह से फटकर चीथड़े बन गये, तब मैं लोगों की नज़रों से गिर गया; लाचार हो मुझे शहर छोड़कर यहाँ पर आना पड़ा। याद रखो, लोग सिर्फ बाहरी दिखावे से ही निर्णय करते हैं, स्वाभाविक मूढ़ता के कारण वे भीतरी तात्पर्य समझ ही नहीं सकते। तुम भी इस कोट-पाजामे को चिज़म में रखकर पी डालो ! यदि तुम दे सको तो अपने ऋण का आधा हिस्सा दे दो और मौज से चले जाओ। खोजो, कहीं मिल ही जायगा।

भड़ैत ने घबरा कर पूछा—मेरे जिम्मे आपका कितना निकलेगा ?

फ्रोमिच ने बड़ी बेफिक्री से कहा—सिर्फ दो रुपये और सात पैसे ! तुम चाहे मुझे रुपये ही दे दो या सात पैसे ही। जो तुम्हारी मर्जी हो। बाकी के लिये मैं तब तक प्रतीक्षा करूँगा, जब तक तुम चोरी-चमारी करके—अभी जितना कमा लाये हो, उससे कहीं अधिक—न कमा लाओ।

फ्रोमिच की बातें सुनकर किरायेदार का हृदय विचलित हो गया। बोला—महाशय, मैं आपकी इस कृपा के लिये कोटिशः धन्यवाद देता हूँ। यह सचमुच आश्चर्यजनक और दयनीय बात है कि आपके सदृश

सबजन पुरुष का जीवन इतना दुःखमय हो । यदि आप अपने उचित स्थान पर रहते, तो निश्चय ही आप स्वामिमानी गीध की तरह मौज की जिन्दगी बिताते होते !

कप्तान फ्रोमिच को जब तक बड़े-बड़े लच्छेदार और रङ्गीन वाक्य-समूह उच्चारण करने का अवसर नहीं मिलता था, तब तक वह बोल ही नहीं सकता था । उसने पूछा—उचित स्थान पर रहने से तुम्हारा क्या तात्पर्य है ? कौन जानता है, किसका उचित स्थान क्या होना चाहिये ? सभी चाहते हैं कि अपनी गर्दन दूसरों के जुए के नीचे न रखें । हाँ, पेटनिकफ को कोई नौकरी करनी चाहिये । लेकिन वह तो शहर में स्वच्छन्दता-पूर्वक घूमता-फिरता है, एक नया गुदाम भी बनवा रहा है । हम लोगों के स्कूल-मास्टर का स्थान तो एक सुन्दरी, मोटी-ताजी और शान्ति-प्रिय स्त्री की बगल में होना चाहिये । साथ ही, उनके चारों ओर कम-से-कम छः सात बच्चे भी रहने चाहियें ! लेकिन वह तो वेविलफ की दूकान पर शराब पीकर एक 'कोने में मस्त पड़े रहते हैं । औरों की क्या बात, तुम अपनी ही बात लो न । तुम एक दरवानी की खोज में हो, लेकिन मैं समझता हूँ कि तुममें सैनिक बनने की काफी योग्यता है । तुम बहुत कष्ट-सहन कर सकते हो । तुम काहिल भी नहीं हो । तुमको कवायद करने की तालीम भी मिली हुई है । देखो, संसार के काम-काज किस प्रकार चल रहे हैं । ताश के खेल की नाई मनुष्य-जीवन में घटनाओं का हेर-फेर हुआ करता है । जिस प्रकार ताश के पत्ते, फेटने से, अपने-अपने उचित स्थान पर न रहकर कहीं-कहीं चले जाते हैं, उसी प्रकार मनुष्य भी अपने जीवन-भर में कदाचित् ही कभी अपने योग्य या उचित स्थान पर रह पाता है, महीं तो बराबर भाग्य से ठुकराया जाकर इधर-उधर मारा-मारा फिरता है ।

कभी-कभी बिदा के वक्त की ऐसी-ऐसी वक्तृताएँ नई दोस्ती की भूमिका का काम देती थी। यह दोस्ती शराब पीने के साथ ही शुरू होती है, और तब तक खत्म नहीं होती जब तक एक एक पैसा चुक नहीं जाता। बाहुल्य में इसका आरम्भ होता है और अभाव में अन्त। उस समय भी कप्तान फ़ोमिच फिर ढालने का आयोजन करता है; किन्तु जब दोनों ही अभाव के कारण एकदम लाचार हो जाते हैं, तब छोड़ देते हैं।

यद्यपि उक्त दोनों पियक्कड़ मित्र रुपये-पैसे के अभाव में प्रायः विवश हो जाया करते थे, तथापि दोनों में सदा सद्भाव बना रहता था।

उक्त स्कूल-मास्टर बहुत ही सीधे-सादे मिजाज का आदमी था। मानसिक विकास में वह कप्तान से थोड़ा ही श्रेष्ठ था। यही कारण था कि जब कभी वह उस अड्डे पर आ बैठता, तब उठने का नाम न लेता। वही एक ऐसा आदमी था, जिसके साथ फ़ोमिच तर्क-वितर्क कर सकता था और उसे इस बात की दिलजमई रहती थी कि उसके विचार और वादविवाद के भावों को स्कूल-मास्टर भली भाँति समझता है। इसीलिये वह स्कूल-मास्टर की विद्या-बुद्धि की कद्र भी करता था।

जब कभी स्कूल-मास्टर कुछ रुपये कमाकर, शहर में जा, एक सुन्दर कमरा भाड़े पर ले, वहाँ रहने के इरादे से उस अड्डे को छोड़ने की तैयारी करता, तब कप्तान फ़ोमिच इस तरह उदास होकर उलाहना देने का सिलसिला बाँधता कि दोनों फिर से शराब ढालना शुरू कर देते—फिर एक दफे कुछ रुपये—पैसे बरबाद कर डालते! सम्भवतः फ़ोमिच यह भली भाँति समझता था कि वह क्या कर रहा है। स्कूल मास्टर भी चाहता जरूर था कि वह उस अड्डे को छोड़ दे, लेकिन नहीं छोड़ पाता था। कारण ! बस यही कि फ़ोमिच—जो कुलीन था, जिसे कुछ शिक्षा

भी मिली थी, जिस शिक्षा की झलक उसकी बातचीत में आ जाती थी, जो बहस या तर्क-वितर्क करने में अत्यन्त आमोद पाता था—भला कब इस सुख से वञ्चित रहना चाहता है कि एक योग्य पुरुष सुप्त ही उसके पास बैठा रहे !

यह स्कूल-मास्टर 'बालगा'—नदी पर बसे हुए एक शहर के ट्रेनिङ्ग स्कूल में पढ़ाया करता था। उसमें शिक्षकों को तालीम दी जाती थी। संयोगवश कुछ ऐसी आकस्मिक घटनाएँ हुई कि वह वहाँ से निकाला गया। बाद को वह एक चमड़े के व्यापारी की दुकान पर किरानी हुआ। कुछ दिनों के बाद यह नौकरी भी छोड़नी पड़ी। फिर वह एक सार्वजनिक पुस्तकालय का पुस्तकाध्यक्ष नियुक्त हुआ। इसी तरह कई पैसे इखित-यार किये। सब को आजमाया, मगर कहीं तसल्ली न मिली। आखिर एटर्नी का इम्तहान पास किया। तब फिर मद्य पान करना भी शुरू कर दिया। उसी समय कप्तान फोमिच के साथ परिचय हुआ।

वह खलवाट् था—सिर पर, आगे के हिस्से में, बाल नहीं थे। नाक नुकीली और लम्बी। दाढ़ी भी नोकदार थी, जो उसके पतले चेहरे पर खूब फबती थी। आँखें कान्तिहीन और धसी हुई थीं। मुँह गोल था।

वह अपने गुज़र-बसर के लिये—खासकर शराब पीने का खर्च चलाने के लिये—स्थानीय अखबारों का संवाददाता बन गया था। उसी से कुछ रुपये कमा लेता था। कभी-कभी हफ्ते-भर में पंद्रह-बीस रुपये कमा लेता था। ये रुपये देकर वह कप्तान फोमिच से कहता—यही इस हफ्ते की कुल कमाई है। दूसरे हफ्ते में, कठिन परिश्रम करके, मैं काफ़ी रुपये कमा लाऊँगा, तब मैं भली भाँति अपनी सुन्दर पोशाक खरीद सकूँगा।

कप्तान फोमिच गम्भीर स्वर में उत्तर देता—ठीक है, बहुत दुरुस्त

है। तुम्हारी बात से मैं पूर्णतया सहमत हूँ। इस हफ्ते में तुम्हें शराब का एक घूंट भी न दूँगा।

स्कूल-मास्टर—मैं तुम्हारा बहुत कृतज्ञ होऊँगा। घूंट की तो बात ही क्या, मुझे एक बूँद भी न देना।

इतने पर भी कप्तान फोमिच बड़ी कठोरता से फिर कहता—तुम इसके लिये भले ही चिल्लाया करो, लेकिन मैं तुम्हें सचमुच एक बूँद भी न दूँगा।

खैर, यह किस्सा भी खतम हुआ—ऐसा कहकर और लम्बी साँस लेकर मास्टर अपने काम पर चला जाता था। लेकिन, एक दो रोज के बाद, जब उसे थकावट मालूम होती और बड़े ज़ोर की भूख-प्यास लगती, तब वह चुपके से आकर कप्तान से मिलता था—उसकी ओर उदास और सतृष्ण नेत्रों से देखकर इस अभिप्राय से चिन्तापूर्ण आशा की टकटकी लगाता था कि अब भी उसका दिल पिघल जाय। लेकिन कप्तान फोमिच गम्भीर दृष्टि से देखता हुआ, मनुष्य के हृदय की दुर्बलता पर शोक प्रकट करता हुआ, मादकता को पाशविक प्रवृत्ति के सदृश घृणित बताता हुआ, और इस तरह की इन्द्रिय-परवशता को आपत्ति-जनक सिद्ध करता हुआ, सर्वथा दृढ़ बना रहता था। यदि वास्तव में उसे उचित सम्मान दिया जाय, तो यह कहना बहुत ठीक होगा कि यह एक सच्चा सलाहकार और पक्का चरित्रवान् मनुष्य था। लेकिन उस अड़्डे वाले मकान के मालिक लोग बराबर उसे मुँहफट, बातूनी और नास्तिक तक कह डालते थे। वे लोग जब कभी उसकी बहकी-बहकी बातें सुनते, आँखों के ईशारे से आपस में कहते—यह बड़ा ही खालाक आवामी है यह अपनी जिम्मेवारी को दूसरों के सिर फेंकने में बड़ा ही सिद्धहस्त है। पुराना सैनिक है। जब तक पीछे लौटने का मौका नहीं देखता, आगे बढ़ नहीं सकता।

कभी-कभी स्कूल-मास्टर अपने दोस्त कप्तान को अँधेरे कोने में पकड़ता ! उसके मैले ओवर-कोट को इस तरह पकड़ता—अपने सूखे होठों को अपनी जीभ से तर करता हुआ, कप्तान की आँखों की तरफ, इस तरह देखता—कि वह दृश्य देखते ही बनता, वस्तुतः वह इतना करुणापूर्ण दृश्य होता कि वह वर्णनातीत है ।

कप्तान फोमिच घीरे से पूछता—क्या तुम असमर्थ हो ?

स्कूल-मास्टर सिर्फ चुपचाप सिर हिलाता, फिर अपने सिर को नीचे की ओर झुकाकर अपने पतले बदन को कँपाता ।

फोमिच प्रस्ताव करता—एक रोज और कोशिश करो । शायद तुम अपने को जीत सकोगे ।

स्कूल-मास्टर सिर्फ आह भरता—निराशा-द्योतक, असमर्थता-बोधक और निषेध-सूचक सिर हिलाता ।

जब कप्तान देखता कि उसके दोस्त का दुबला-पतला शरीर उस विष की प्यास से दुर्बल होता जाता है, तब वह उसकी जेब से रुपये-पैसे निकाल लेता था ।

वह बेचारा मानों अपने काम को ठीक बताने की कोशिश करता हुआ कहता—भाग्य के साथ बहस करना साधारणतः व्यर्थ है ।

परन्तु, यदि स्कूल-मास्टर पूरे हफ्ते-भर अपने मन को काबू में रख सकता, तो उसके दोस्तों के उन शब्दों का रूप ही बदल जाता, जिन्हें वे बेविलफ की दूकान पर उस समय कहा करते थे, जब शराब पीकर वहाँ से बिदा होने लगते थे ।

स्कूल-मास्टर कभी अपना सब रुपया मद्यपान में नहीं उड़ाता । कम-से-कम आधा वह हाई-स्ट्रीट केलड़कों के पीछे खर्च करता । सचमुच गरीब लोग, बच्चों की संख्या के खयाल से, अवश्य धनी होते हैं । हाई स्ट्रीट के

धूल-भरे गड़हों में खेलनेवाले छोकरे, सबेरे से रात तक, फटे कपड़े पहने, भूखे, शोर-गुल मचाते हुए देख पड़ते थे। बच्चे पृथ्वी पर के हरे-भरे फूल कहलाते हैं; किन्तु हाई-स्ट्रीट में खेलने वाले बालक मानों उन फूलों के सदृश थे, जो असमय ही में मुरझा जाते हैं। इसका कारण यह था कि शायद वे उस भूमि पर जनमे थे, जिसकी उर्वरा-शक्ति नष्ट हो गई थी।

कभी-कभी स्कूल-मास्टर बच्चों को अपने चारों ओर इकट्ठे कर लेता—कुछ रोटियाँ, अंडे, सेब, बादाम आदि खरीद लेता; और नदी की तरफ उन लोगों के साथ मैदान में चला जाता। वहाँ वे लोग बड़ी रुचि से उसके दिये हुए फल-मूल और मिठाइयाँ खा डालते—खुशी के मारे शोर-गुल मचाते और हँसी से आकाश को भी गुँजा देते।

स्कूल-मास्टर का कमज़ोर पतला शरीर ऐसा मालूम पड़ता, मानों वह उन्हीं लड़कों में से एक हो। इसी कारण वे लोग भी, समवयस्क की भाँति, उसके साथ बिना संकोच आचरण किया करते। वे लोग उसे सिर्फ 'फिलिप्पे' कहा करते थे—उसके साथ 'चचा' शब्द तक नहीं जोड़ते थे। कभी-कभी वे लोग हँसी-मजाक में उसे धक्का दे डालते, उसकी पीठ पर चढ़ जाते, उसको चपत मारते; यहाँ तक कि उसकी नाक-कान भी ऐंठ दिया करते थे। सम्भवतः स्कूल-मास्टर इसे पसन्द करता था। कारण, न वह इसके लिये ज़रा भी आपत्ति करता और न उन लोगों के प्रति क्रोध-प्रकाश ही करता। वह उन लोगों से बहुत कम बोलता भी था। उसके शब्द नम्र और शान्त होते थे, मानों वह इस डर से कड़ा शब्द व्यवहार नहीं करता था कि कोमल-मति बालकों को कहीं चोट न पहुँचे। उन लोगों के साथ वह कई घंटे बिताता था। कभी उन लोगों के साथ खेला करता और कभी इधर-उधर की फालतू बातें किया करता। बड़ी कठिनता से उन लोगों का सङ्ग छोड़कर वहाँ से वह चुपके से शराब

की दूकान पर जा डटता और इतना मद्यपान करता कि वहीं पर बेहोश हो पड़ रहता ।

लगभग प्रति दिन, जब वह अखबारों की रिपोर्टें लिखकर लौटता, तो नगर से एक अखबार साथ लिये आता । घर से निकाले हुए लोग उसे चारों ओर से घेर लेते । जमी वे लोग उसे आते हुए देखते, भिन्न-भिन्न स्थानों से दौड़-दौड़ कर उसके समीप एकत्र हो जाते । कुछ लोग शराब के नशे में चूर रहते, कुछ ऊँघते, कुछ गिरते पड़ते रहते, और कुछ फटे पुराने मैले-कुचैले वस्त्र पहने रहते थे ।

उस दल में सबसे पहले 'सिमूत जोफ' ही नजर आता था । पहले वह जङ्गली जमीनों का कानूनगो था; लेकिन इन दिनों दियासलाई, रोशनाई, कागज, नीबू आदि की फेरी किया करता था । साठ बरस का बूढ़ा था ! किरमिच का कोट और चौड़ी टोपी पहना करता था । गोल और लाल चेहरा, घनी पकी दाढ़ी, नाक और होठ लाल, आँखें कमजोर—लेकिन कुटिल, आवाज़ गहरी और जोरदार थी । लोग उसे 'कुवर' उपनाम से पुकारा करते थे ।

दूसरा था 'ल्यूका', जिसका उपनाम लोगों ने 'कोनेज़' रक्खा था । वह चुपचाप शराब ढाला करता था । पहले वह जेबों का इन्स्पेक्टर रहा; लेकिन आज-कल वह जुए के खेलों से जीविका-निर्वाह करता था । कभी वह ताश के तीन पत्तों से जूआ खेला करता—कभी और-और तरह के ऐसे जुए भी खेलता, जिन्हें पुलिस ने जुर्म करार दिया था । वह कभी-कभी स्कूल-मास्टर के पास, घास के फर्श पर, लेट जाता । उसकी काली-काली आँखें चमकती रहती थीं । वह शराब की बोतलों पर हाथ फैलाकर दबी जवान से पूछता—क्या मैं.....

उक्त दोनों के अतिरिक्त एक तीसरा व्यक्ति भी—तीस बरस का 'सैंट-

सेफ'—उस मंडली में सम्मिलित होता था। उसकी बायें भाग की पस-लियाँ टूट गई थीं। उसका बदन पीला और फुर्तीला था। उसकी मुस-कान बड़ी धीमी और चालाकी-भरी होती थी। उसके होंठ पतले और काले दाँतों की दोनों पंक्तियों के कुछ दाँत टूटे-फूटे थे। उसके क्षीण कन्धे पर चिथड़े ऐसे मालूम पड़ते थे, मानो वे खूँटियों से लटक रहे हों, जिन्हें लोग 'स्क्रेप' कहा करते थे। वह स्वयं शाङ्ख बनाकर बेचता और अपनी जीविका चलाता था। एक तरह की घास से कूचियाँ—ब्रश—भी बनाता था, जो कपड़ों की गर्द झाड़ने में बहुत उपयोगी होती थीं।

इन तीन के सिवा उस दल में एक लम्बा-सा काना आदमी और था। पहले वह क्या काम-काज करता था, इसकी निश्चित जानकारी किसीको न थी। उसकी आँखें बड़ी-बड़ी, गोली और चमकीली थीं। वह चोरी के जुर्म में तीन बार पकड़ा जाकर सजा पा चुका था। उसका नाम 'किसल-निकफ़' था, पर लोगों ने उसे अद्धा 'टरास' उपनाम दे रक्खा था। यह उपनाम पड़ने का कारण बताया जाता था—उसका एक दिली दोस्त 'टरास' नाम का था, जिससे क्रोध में यह आधा छोटा पड़ता था !

'टरास' पहले एक गिरजा-घर का पादरी था, लेकिन अत्यधिक मद्य-पान के कारण उस पद से च्युत हो गया। क्रोध का बहुत बड़ा तो न था, लेकिन छाती खूब चौड़ी थी—केशों में जटाएँ बँध गई थीं—नाचने में बड़ा उस्ताद था; लेकिन क्रसम खाने में तो और भी निपुण था।

'टरास' और 'अद्धा टरास'—दोनों—ने नदी-किनारे लकड़ी चीरने का ठेका लिया था। वहीं पर एक पादरी लुट्टी के वक्त अपनी लिखी हुई कहानियाँ सुनाया करता था। कहानियों के चरित-नायक अधिकतर साधु-सन्त, महात्मा, राजे-महाराजे, पादरी, मन्त्री या सेनापति होते थे। कहानियाँ कभी-कभी ऐसी बीभत्स और असम्भव होती थीं कि

नर-पशु

सुननेवालों को भी अरुचिकर हो जाती थीं—खासकर जब वह बड़े जोश और उत्साह से आँखें बन्द करके कहने लगता था। उसकी कल्पना-शक्ति भी अद्भुत और विचित्र थी। वह दिन-भर नई-नई कहानियाँ बना-बनाकर कहा करता था। एक बार कहीं हुई कहानी को कभी दुहराता न था। उसके मर जाने से शायद संसार-भर में ऐसे कवि या कथाकार का अभाव-सा हो गया, जिसमें यह सामर्थ्य थी कि पत्थर या मिट्टी जैसी निर्जीव वस्तु को भी सजीव कर डालता—केवल अपने दूषित एव काल्पनिक विचारों की बदौलत !

हाँ, उक्त तीन व्यक्तियों के अलावा एक नवयुवक और भी था, जिसे 'कप्तान फोमिच' प्रायः 'मीटियर' कहकर पुकारता था। जब वह उस अड्डे पर आया था, तब सिर्फ एक रात के लिये टिकने की जगह खोजता था। लेकिन सबको यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता था कि वह फिर वहाँ से कभी कहीं गया नहीं ! पहले तो किसी ने उसकी ओर ध्यान ही नहीं दिया; क्योंकि वह दिन भर अन्य लोगों की तरह, जीविका-निर्वाह के हेतु; बाहर जाया करता था; लेकिन शाम को उस अड्डे की गोष्ठी में निश्चय सम्मिलित होता था।

एक दिन कप्तान फोमिच ने उससे पूछा—इस दुनिया में तुम क्या काम करते हो ?

उसने बहुत संक्षेप में, किन्तु साहस के साथ, उत्तर दिया—मैं ! रसोइया हूँ !

कप्तान फोमिच ने बड़े गौर से उसकी ओर देखा। उसके बाल लम्बे थे। बेवकूफ का-सा चौड़ा चेहरा और छोटी-सी चिपटी नाक थी। नीले रंग की जाकेट पहने हुए था। सिर पर पुआल का बना फटा टोप विचित्र शोभा दे रहा था। पाँव नंगे थे।

नर-पशु

कप्तान फोमिच बोला—तुम बेवकूफ हो। वहाँ तुम कर क्या रहे हो ? तुम हम लोगों के किसी काम के नहीं हो। शराब पीते हो !

नहीं।

चोरी कर सकते हो ?

नहीं।

तब जाओ, यह सब सीख आओ। पहले जाकर आदमियत सीखो, तब लौटकर हमारी मंडली में आओ।

नवयुवक 'मीटियर' मुस्कराया। बोला—नहीं, मैं यह सब कुछ नहीं करूँगा। मैं जहाँ पर हूँ, वहीं रहूँगा।

क्यों ?

क्योंकि.....।

कप्तान बीच ही में बोल उठा—अरे तुम पुच्छल तारा हो !

स्कूल-मास्टर बोला—मुझे इसके कुछ दाँत उखाड़ डालने दो।

मीटियर ने पूछा—लेकिन तुम उखाड़ोगे क्यों ?

क्योंकि.....।

मीटियर क्रोध करके बोला—अरे तब तो मुझे पत्थर के टुकड़े से तुम्हारा सिर फोड़ देना चाहिये !

स्कूल-मास्टर उसे जमीन पर पटक डालता, लेकिन फोमिच ने बीच-बचाव कर उस कांड को रोका—दोनों को ठठा किया। फिर अन्त में स्कूल-मास्टर से कहा—उसे अकेला रहने दो। वह जिस तरह हम लोगों का दूर का रिश्तेदार है, उसी तरह तुम्हारा भी है। तुम भी नाहक ही उसके दाँत उखाड़ डालना चाहते हो और वह भी निष्प्रयोजन ही हम लोगों के साथ रहना चाहता है। अरे हम सब लोगों को धिक्कार है ! हम लोग व्यर्थ ही बहुत-से बुरे काम भी कर डालते हैं। हम लोग करते

तो हैं, लेकिन जब पूछो कि क्यों करते हैं, तब हम लोग कारण नहीं बता सकते। यदि उसकी यही मर्जी है कि अकेले ही रहे और हमारी मंडली में शामिल न हो, तो छोड़ दो, क्या हर्ज है, रहे।

स्कूल-मास्टर उस नवयुवक को उदासीनतापूर्ण दृष्टि से, किन्तु ध्यानपूर्वक, देखकर बोला—छोकरा, तेरे लिये यही अच्छा होता कि तू यहाँ से दूसरी जगह चला जाता।

छोकरे ने कुछ जवाब नहीं दिया, वहीं पर ठहरा रह गया। आखिर वे लोग उसके आचरणों से इस तरह परिचित हो गये कि अब कभी उसकी तरफ ध्यान ही नहीं देते थे। लेकिन वे लोग जो कुछ बोलते या करते थे, वह सब बातों को ध्यान-पूर्वक देखता-सुनता जाता था।

उपर्युक्त सभी पुरुष कप्तान फ्रोमिच के पार्श्वचर थे। वह उन्हें समय-समय पर भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा करता था। उन लोगों के अतिरिक्त उस अड्डे पर प्रति दिन आने वाले पाँच-छः व्यक्ति और भी थे, जो देहात के रहने वाले किसान थे। कप्तान के उपर्युक्त पार्श्वचरों की भाँति उन बेचारे किसानों ने न तो सात घाट का पानी पिया था और न अपने घरों से निकाले गये थे—यद्यपि उन लोगों ने भी अपने जीवन में कम विपत्तियाँ नहीं झेली थीं। वे लोग यद्यपि इन लोगों से भी कहीं कम पतितावस्था में थे, तथापि इन्हीं लोगों की भाँति पूरी तरह बरबाद भी हो चुके थे।

यह सम्भव है कि शिक्षित-समाज का भद्र मनुष्य, किसान-समाज के भले आदमी से, कुछ ऊँचे दर्जे का हो; लेकिन शहर का पापी देहात के पापी से कहीं बड़ा-चढ़ा पतित होता है।

इस सिद्धान्त का ज्वलन्त उदाहरण, फ्रोमिच के अड्डे में रहने वाले किसानों और शिक्षितों के आचरणों में ही, मिलता था।

किसानों का सब से बड़ा प्रतिनिधि 'टायपा' था। उसका काम चिथड़े चुनने का था। कद का लम्बा और अत्यन्त दुबला-पतला था। जब कभी चलता, सिर उसका इस तरह झुका रहता कि छाती से उड़ुई भिड़ी रहती। जब कभी वह इस तरीके से खड़ा होता, उसकी छाया अँकुसी की तरह टेढ़ी मालूम पड़ती। उसका पूरा चेहरा कोई भी देख नहीं पाता; लेकिन उसके चेहरे के एक ओर का नकशा देखकर लोगों को पता चल जाता कि उसकी नाक गीध की-सी, अधरोष्ठ नीचे झुके हुए, भवें भूरे रंग की और घनी थीं। वही कप्तान का सब से पहला भड़ैत था। उसके बारे में लोगों में ऐसी अफवाह फैली हुई थी कि उसके पास बहुत बड़ी रकम जमीन के अन्दर गड़ी हुई है। इसी अफवाह की वजह से, दो बरस पहले, किसी ने उसकी गर्दन पर लाठी मारी थी; तभी से उसकी गर्दन टेढ़ी हो गई थी। वह बराबर कहा करता था कि उसके पास कुछ भी रुपया-पैसा नहीं है। लोगों से तो कहा करता था कि हँसी-मजाक में किसी की छुरी लग गई थी। तारीफ़ यह कि इसी दुर्घटना से उसे अपने पेशे में बड़ी मदद मिलती थी। चूँकि वह सिर झुका कर चला करता था, इसलिये उसे चिथड़े या हड्डियाँ देखने और चुनने में बड़ी सहायता मिलती थी। जब कभी वह हिलता-डोलता और अनियमित चाल से घूमता-फिरता रहता था—जब उसके हाथ में न छड़ी-रहती थी और न थैला, जो उसके पेशे के प्रधान चिह्न थे; तब वह ऐसा मालूम पड़ता था, मानों वह अपने विचारों की धुन में मस्त है।

फ़ोमिच अपनी अँगुली से उसकी ओर इशारा करता हुआ कहता था—देखो, ज़रा नज़र उठा कर देखो, वहाँ 'पेटनिकफ' कूड़ा-करकट खोजता हुआ जा रहा है। देखो तो, यह कैसा मैग-कुचैला आदमी,

भगोड़ा सा, शरण खोजने को भागा जा रहा है। देखने में इसकी सूरत कैसी लगती है !

‘टायपा’ इस तरह कर्कश स्वर में बोलता था कि उसकी बातों को समझना लगभग असम्भव-सा था। शायद इसी कारण वह बहुत कम बोलता था और प्रायः एकान्त स्थान ही पसन्द करता था। हर दफे, जब कभी कोई नवागन्तुक, देहात से भगाया जाकर, उस अड्डे पर टिकने को आता, ‘टायपा’ उसे देखते ही क्रोध के मारे बहुत बिगड़ उठता—उसे बड़ी बेचैनी होने लगती। वह उस बेचारे आदमी को, क्रोधपूर्ण कड़े शब्दों में बातें करके, बहुत खिझा देता था। साथ ही, उसे दिक करने के लिये अपने गुंडों में से एक ऐसे को उसके पीछे लगा देता था, जो उसे मारने-पीटने और लूट-पाटकर खपा डालने की धमकी देने से भी बाज़ न आता था। आखिर विवश होकर उस सीधे मिजाज वाले किसान को भाग जाना ही पड़ता था—वह फिर कभी उस अड्डे पर लौटकर आने का नाम नहीं लेता था !

जब कभी ‘टायपा’ का चित्त शान्त रहता था, वह एक कोने में छिपकर पुराने कपड़ों की मरम्मत करने लगता था। कभी-कभी अपने मैले और फटे-पुराने धर्म-ग्रंथ ‘बाइबिल’ को भी पढ़ने लगता था। फिर, उस कोने से तभी निकलता था, जब स्कूल-मास्टर पढ़ने के लिये अखबार लाता था। साधारणतः वह चुपचाप खबरों को सुना करता था—गंभीर आहें भरता सही, लेकिन कभी कोई सवाल नहीं करता था। जब स्कूल-मास्टर समाचार-पत्र का पढ़ना बन्द कर देता, तब वह अपने मज़बूत हाथों को आगे फैलाकर कहता—अब मुझे दो।

तुम किस लिये चाहते हो ?

दे तो दो, शायद हम लोगों के बारे में कुछ लिखा हो।

किसके बारे में ?

गाँव के बारे में ।

सब लोग हँस पड़ते और उसपर अखबार फेंक देते थे । वह उसे लेकर उन्हीं अंशों को पढ़ता, जिनमें यह लिखा रहता कि ओले पड़ने से फ़सल मारी गई है, आग लगने से तीस घर जल कर खाक हो गये हैं, एक औरत ने किसी परिवार के सब लोगों को विष खिलाकर मार डाला है ! सारांश यह कि ग्रामीण समाचारों के वे ही अंश उसे रुचिकर प्रतीत होते थे, जिनमें आकस्मिक विपत्ति, नीचता और निर्दयता के खेल रहा करते थे । वह प्रायः धीमी आवाज़ से खबरों को पढ़ता और मुँह से यों शब्द निकालता, जिससे मालूम पड़ता कि वह मानों दया अथवा आनन्द का अनुभव कर रहा है ।

रविवार को वह चिथड़े चुनने नहीं जाता था—सारा दिन बाइबिल पढ़ने में ही बिता देता था । पढ़ते वक्त वह केवल कराहता और आहें भरता जाता था । किताब को वह अपनी छाती से लगाये रहता था । यदि कोई उसकी किताब को छूता या उसके पढ़ने में बाधा डालता, तो उसे बड़ा रंज होता—वह उसी दम बिगड़ खड़ा होता ।

फ़ोमिच कभी कह देता—ऐ जादूगर, तुम इसे ज़रा भी नहीं समझ सकोगे । रख दो किताब ।

और तुम ? तुम्हीं क्या समझते हो ?

यदि मैं कुछ नहीं समझता, तो मैं पुस्तकें पढ़ता भी तो नहीं ।

लेकिन मैं तो पढ़ता हूँ ।

तब तुम भारी बेबकूफ हो । दीमाग़ में कीड़े रखना बहुत बुरा है । पुस्तक पढ़ने से विचार-शक्ति की वृद्धि की आशा रखना महा-मूर्खता है ।

ऐ पुराने मेढ़क ! तुम इस तरीके से बहुत दिनों तक कैसे जीवित रह सकोगे ?

‘टायपा’ ने धीरे से कहा—मुझे बहुत दिनों तक जीना नहीं है ।

इसी तरह, एक दिन, स्कूल-मास्टर ने उससे पूछा—तुमने लिखना-पढ़ना कहाँ सीखा ?

उसने संक्षेप में उत्तर दिया—जेल में !

तुम जेल से हो आये हो ?

हाँ, हो आया हूँ ।

किस वजह से ?

वजह... ..! मैंने गलती की । वहीं पर मुझे बाइबिल की पुस्तक मिली । एक रमणी ने मुझे दी । जेल में शान्तिदायिनी पुस्तक का पाठ बड़ा आनन्ददायक होता है । क्या तुम यह बात नहीं जानते ?

यह कभी हो नहीं सकता । वहाँ क्या इसका विशेष सुभीता होता है ?

वे ही लोग वहाँ सिखला देते हैं । देख लो, मुझे कैसे पढ़ना सिखाया गया । उन लोगों ने मुझे मुफ्त ही किताब दी थी ।

एक दिन, जब स्कूल-मास्टर अड्डे पर आया, वहाँ ‘टायपा’ बहुत देर पहले ही से आया हुआ था । उसने स्कूल-मास्टर को बड़े गौर से देखा । वह अपने शरीर को एक तरफ इसलिये झुकाता था कि स्कूल-मास्टर की सुन्दर दृष्टि उसपर पड़े और वह उसकी बातचीत भी ध्यान-पूर्वक सुने ।

एक दफे उसने कहा—अरे ! मैं देखता हूँ, तुम विद्वान हो ! तो क्या तुमने कभी बाइबिल पढ़ी है ?

हाँ, पढ़ी तो है ।

क्या तुम्हें कुछ याद है ?

हाँ-हाँ, मुझे स्मरण है ।

नर-पशु

बूढ़े 'टायपा' ने एक तरफ अपना शरीर झुकाया और स्कूल-मास्टर की ओर अपनी भूरी-भूरी रूखी आँखों से—सन्देह-जनक दृष्टि से—देखा।
पूछा—तुम्हें एमलकाइटों के विषय में कुछ स्मरण है ?

क्यों नहीं ?

वे लोग आज-कल कहाँ हैं ?

मर-मिट गये, अदृश्य हो गये हैं।

बूढ़ा टायपा चुप था, लेकिन जल्दी से फिर उसने पूछा—और फिलिस्टाइन लोग ?

वे लोग भी चल बसे !

क्या ये सभी वंश लुप्त हो गये हैं ?

हाँ, सब-के-सब।

इसके मानी क्या यह है कि लोग भी अदृश्य हो जायेंगे ?

स्कूल-मास्टर ने लापरवाही-भरी आवाज़ में जवाब दिया—हाँ, जब समय आवेगा।

अच्छा, हम लोग इज़रियल-जाति की किस शाखा के हैं ?

स्कूल-मास्टर ने उसकी ओर स्थिर दृष्टि से देखा, फिर क्षण-भर विचार किया; इसके बाद उसे सिमरी, सीथियन, इन्स और स्लैव्स लोगों की कहानी सुनाना शुरू किया।

बूढ़ा 'टायपा' एक तरफ ऐसा झुका जैसा पहले कभी नहीं झुका था। झुक कर स्कूल-मास्टर को बड़ी अर्द्धापूर्ण दृष्टि से देखने लगा।

जब स्कूल-मास्टर ने जातियों की कहानी समाप्त की, तब वह सिसकता हुआ बोल उठा—तुम झूठ कह रहे हो !

स्कूल-मास्टर ने बड़े आश्चर्य के साथ पूछा—तुम क्या समझते हो कि मैं झूठ कह रहा हूँ ?

नर-पशु

वह बड़े क्रोध से शाप देता हुआ बोला—जिन लोगों के बारे में तुमने जिक्र किया है, उनमें से एक का भी उल्लेख बाइबिल में नहीं मिलता ।

स्कूल-मास्टर उसकी तरफ देखकर चिन्ताता हुआ बोला—टायपा, तुम पागल हो रहे हो ?

वह बुढ़ा आदमी एकाग्र हो गया । अपना हाथ बढ़ा कर, धमकी देते हुए, अपनी मैली और टेढ़ी तर्जनी अँगुली को हिलाया । कहा—ईश्वर से बाबा आदम पैदा हुए । आदम से यहूदी लोग हुए । यहूदियों से और सब लोगों की पैदाइश है । हम लोग उन्हीं सबों में तो हैं ।

ऐं !

इशमियल से तातारों का जन्म हुआ—उनकी उत्पत्ति एक यहूदी से हुई ।

ऐ ! तब क्या हुआ ?

कुछ नहीं । तुम सिर्फ झूठ क्यों बोल रहे हो ?

यह कहता हुआ, अपने साथी (स्कूल-मास्टर) को स्तब्ध-दशा में अकेला छोड़ कर, वह चला गया । लेकिन दो-तीन दिनों में वह फिर उसके पास आ पहुँचा । बोला—चूँकि तुम एक विद्वान् हो, इसलिये तुम्हें कम-से-कम इतना तो जानना चाहिये कि हम लोग कौन हैं ?

स्कूल-मास्टर ने जवाब दिया—टायपा, हम लोग स्लैव्स हैं, स्लैव्स !

इतना कह कर वह ध्यानपूर्वक 'टायपा' के उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा । उसे आशा हुई कि टायपा उसकी बात समझ गया है । फिर कहा—बाइबिल के अनुसार बोलो । बाइबिल में इस तरह के कोई नाम नहीं मिलते । हम लोग कौन हैं—बेबीलोनियन या एडमाइट्स ?

स्कूल-मास्टर ने बाइबिल का खंडन करना शुरू किया । 'टायपा' ने

बहुत देर तक ध्यान-पूर्वक सुना, अन्त में रोक कर कहा—चुप रहो । तुम्हारा क्या मतलब है कि उन लोगों में—जिन्हें ईश्वर जानते हैं—राशियन (रूसी) लोग नहीं थे ? क्या ईश्वर हम लोगों को नहीं जानते थे ? तुम्हारे कहने का क्या यही तात्पर्य है ? जिन लोगों का उल्लेख बाइबिल में है, केवल उन्हें ही ईश्वर जानते थे ? उन्हें ही वह आग में जला कर और तलवार से काट कर सज़ा देते थे ? यह ठीक है कि उन्होंने ही उन लोगों के नगर और ग्राम नष्ट कर दिये; परन्तु फिर भी तो उन्होंने उन लोगों को धार्मिक शिक्षा देने के लिये उनके पास पैगम्बर भेजे ! इसका स्पष्ट तात्पर्य यह है कि ईश्वर उन्हें प्यार करते थे । उन्होंने यहू-दियों और तातारों तितर-वितर कर दिया सही; लेकिन फिर भी उन लोगों की रक्षा तो की । और, हमलोगों के विषय में क्या बात है ? हम-लोगों के पैगम्बर क्यों नहीं हैं ?

स्कूल-मास्टर बूढ़े का मतलब समझने की वृथा चेष्टा करता हुआ बोला—जाओ, हटो, मैं कुछ नहीं जानता ।

बूढ़ा किसान, स्कूल-मास्टर के कन्धे पर हाथ रखकर, उसे हिलाने-डुलाने लगा । मास्टर खड़ा-खड़ा घुटकता और मुँह चलाता, मानों कोई चीज निगल रहा हो ।

‘टायपा’ कठोर स्वर में बड़बड़ाता ही रहा—कितना अच्छा होता, यदि तुम पहले ही कह दिये होते । लेकिन तुम तो इस तरह बातें करते थे, मानों तुम सर्वज्ञ हो । तुम्हारी बातें सुनकर मैं बीमार-सा पड़ जाता हूँ । सुझे आन्तरिक दुख होने लगता है । तुम चुपचाप बैठे रहो, इसी में तुम्हारी भलाई है । देखो, तुम इतना भी नहीं जानते कि हमलोगों में कोई पैगम्बर नहीं हुए । तुम यह भी नहीं जानते कि जब ईसा-मसीह पृथ्वी पर थे, तब हमलोग कहाँ थे । क्या यह कभी

सम्भव है कि समस्त मानव-जाति का एकवारगी नामोनिशान मिट जाय ? रूसी जाति के लोग कभी अस्तित्व-हीन नहीं हो सकते। ये सब झूठी बातें हैं। इन सब बातों का उल्लेख बाइबिल में कहीं पर है जरूर; लेकिन मैं सिर्फ इतना ही नहीं जानता कि किस स्थल पर। क्या तुम नहीं जानते कि जाति किसे कहते हैं ? इसकी बड़ी विस्तृत व्याख्या है। देखो, यहाँ कितने ही—असंख्य—गाँव हैं। हर-एक गाँव में लोगों की संख्या भी काफी अधिक है। और तुम्हारा कहना है कि वे सभी मर मिटेंगे। ऐसा क्यों कर होगा ? किसी क़ौम के लोग कभी मरकर नेस्तनाबूद नहीं हो सकते—हाँ, लेकिन एक आदमी हो सकता है। ईश्वर कौम को आबाद रखता है; क्योंकि क़ौम के लोग ही ज़मीन आबाद करते हैं। एमलकाइट लोग सब-के-सब हरगिज़ नहीं मरे हैं ? वे लोग या तो फ़्रान्स के अधिवासी हैं अथवा जर्मनी के। लेकिन देखो, तुम मुझसे क्या कहते आये हो ? तुम्हें यह बात जानना उचित है कि हमलोगों को ईश्वर की कृपा क्यों नहीं प्राप्त होती रही। अब तो वह हमलोगों के यहाँ न भ्रम भेजता है, न पैगंबर। बताओ, हमलोग कैसे शिक्षा या उपदेश पा सकते हैं ?

‘टायपा’ के व्याख्यान में भयंकर शक्ति थी। यह उपालम्भपूर्ण जोशीला आक्षेप बड़ा ही मर्म-भेदी था। वह बहुत देर तक बोलता रहा ?

स्कूल-मास्टर, जो पहले की अपेक्षा आधे नशे में चूर और शान्तचित्त-सा था, सुनते-सुनते थक गया। उसे मालूम पड़ता था, मानों उसकी नसें लकड़ी के चोखे आरे से चीरी जाती हों।

वह उस बूढ़े के ऐंठ-भरे शरीर को ध्यान-पूर्वक देखता क्योंकि उसके शब्दों में अपूर्व एवं कठोर दमन-शक्ति थी। अन्त में वह अपने ही ऊपर तरस खाने लगा। इसके बाद उसके मानसिक भाव में उदासीनता और थकावट-सी आ गई। फिर उसने बूढ़े ‘टायपा’ से कुछ जोशीली बातें

भी कहने की कोशिश की। साथ ही, कुछ असली बात भी कहनी चाही, ताकि वृद्ध 'टायपा' उसपर कृपालु हो जाय; और उसका व्यङ्गमय तथा उपालम्भपूर्ण स्वर बदलकर कोमल एवं स्नेहपूर्ण हो जाय।

स्कूल-मास्टर को ऐसा अनुभव होता था कि शब्द उसके होठों तक तो आते हैं; परन्तु उन्हें स्पष्ट व्यक्त करने की शक्ति उसे नहीं प्राप्त होती।

'टायपा' बोला—हाँ! तुम बरबाद हो गये हो। तुम्हारी आत्मा चूर्ण हो गई है। फिर भी तुम सब प्रकार के भाव शून्य मनोहर शब्द बोलते हो। तुम्हारी भलाई इसी में होगी की तुम चुप रहो।

स्कूल-मास्टर उदासीनता-पूर्वक बोला—तुम जो कुछ कह रहे हो, सब सच है; और जिन लोगों के विषय में कह रहे हो, सो भी ठीक है। मनुष्यों की संख्या अगणित है। लेकिन न उन लोगों को मेरा ज्ञान है और न मुझे उन लोगों का। यही मेरे जीवन का दुःखान्त नाटक है। लेकिन अब उपाय क्या है? मैं इसी प्रकार दुःख भोगता चला जाऊँगा। सचमुच मेरे जानते कोई पैगम्बर नहीं हैं—कोई भी नहीं—कहीं भी नहीं। साथ-ही-साथ यह बात भी सच है कि मैं बकबक करता हूँ और निरर्थक ही बोलता हूँ मेरे लिये तो यही अच्छा होता कि मैं बोलता ही नहीं। लेकिन तुम्हें मेरे प्रति इतना कठोर नहीं होना चाहिये। तुम नहीं जानते, तुम नहीं समझते; तुम समझ ही नहीं सकते।

आखिर स्कूल-मास्टर रोने लगा—फूट-फूट कर रोया—इतनी सरलता और स्वच्छन्दता से रोया—इतने प्रचुर आँसू बहाये—कि पीछे उसे स्वयं मालूम पड़ने लगा कि उसका हृदय हल्का हो गया है—उसे शान्ति मिल रही है।

'टायपा' ने कहा—तुम्हें देहात जाना चाहिये। तुम्हें किसी स्कूल

की मास्टरी या किरानीगरी मिलनी चाहिये। वहाँ तुम आराम से रह सकोगे, हवा-पानी भी बदल जायगा। यहाँ यह दुःख-पूर्ण जीवन बिताने से क्या लाभ ?

यह कह कर टायपा रुखाई के साथ आह भरने लगा। लेकिन स्कूल-मास्टर रोता ही रहा। रोने ही में उसे आनन्द मिलता था।

उस समय से दोनों में गाढ़ी दोस्ती हो गई। जो लोग वहाँ उपस्थित रहकर उन्हें एक जगह पर देखा करते थे, उनका कहना था कि स्कूल-मास्टर टायपा को ठगने और उससे रुपये छँसने का ढोंग रच रहा है। कोई-कोई तो यह भी कहा करता कि मालूम होता है, 'फोमिच' ने इसे बूढ़े के पीछे इसलिये लगा दिया है कि यह उसके गड़े हुए घन का पता लगा ले।

बहुत सम्भव है कि लोगों के कथन उनके विचारों के अनुकूल हों। कारण, उन लोगों के स्वभाव में एक अपूर्व समानता थी; वे एक दूसरे को अपनी वास्तविक योग्यता भी कम दिखाना चाहते थे।

जिसमें एक भी गुण नहीं है, वह भी प्रायः अवगुणी मनुष्य की भाँति अपने-आपमें कुछ दिखाना ही चाहता है।

जब सब-के-सब स्कूल-मास्टर को चारों तरफ से घेर कर बैठते, तब वह हाथ में अखबार लेकर पढ़ना शुरू करता।

कप्तान फोमिच कहता—अच्छा आज का अखबार हमलोगों को क्या कोई नई खबर दे रहा है ? क्या उसमें कोई क्रमबद्ध कहानी निकल रही है ?

स्कूल मास्टर जवाब देता—नहीं।

तब तुम्हारा सम्पादक नीच है। कोई सम्पादकीय अग्रलेख है ? हाँ, आज एक है। मैं समझता हूँ, यह गुलियफ का लिखा हुआ है।

ज़रा हमलोगों को सुनाओ तो । यह पट्टा अच्छा लिखता है । देशा-
नुरागी है ।

स्कूल-मास्टर पढ़ता है—पन्द्रह वर्ष पहले असल जमींदारी का जो
मूल्य निर्धारित हुआ था, आज तक वही चला आता है । उसी की भित्ति
पर आज-कल की मालगुजारी की दर ठीक होती है, जिसमें शहर के लोगों
को बहुत फायदा होता है ।

कप्तान फ़ोमिच बीच ही में बोल उठा—वे लोग शैतान हैं । अभी
तक वही सिलसिला जारी है ! सचमुच यह असम्भव है । यह बात उन
व्यापारियों के लिये भले ही लाभदायक हो सकती है, जो शहर में काम-
काज करते हैं । बस यही कारण है कि यह क्रम अभी तक चला आता है ।

स्कूल-मास्टर—अरे उसी विचार के आधार पर यह लेख भी लिखा
गया है ।

कप्तान—अहा ! यही है ? कैसे आश्चर्य की बात है ! यह तो क्रम-
वद्ध कहानी के लिये बहुत बढ़िया मसाला है । इसमें ठिकाने से नोन-
मिर्च मिलाकर लिखा जा सकता है ।

इसपर थोड़ा विवाद उठा । मंडली के लोग भी ध्यान-पूर्वक सुनते
रहे । कारण, अभी तक शराब की एक ही बोतल ढली थी !

अग्रलेख की समालोचना के बाद उन लोगों ने स्थानीय समाचारों
पर विचार प्रकट करना प्रारम्भ किया । बाद उसके पुलिस-सम्बन्धी
खबरों पर टूट पड़े । फिर कानूनी मुकद्दमों पर झुके ।

यदि इन समाचारों में किसी सौदागर को नुकसान पहुँचने की बात
होती, तो फ़ोमिच बड़ी खुशी मनाता । यदि कोई व्यापारी लुट जाता, तो
उसे बड़ा अच्छा मालूम होता । दुःख का विषय इतना ही रहता कि लुटेरे
और नहीं लूट ले गये ! यदि व्यापारी का घोड़ा भी उसे ले भागे और पटक

दे, तो सुनने में बड़ा ही सुखप्रद प्रतीत होता; और दुःख तब होता, जब यह ज्ञात होता कि घोड़े के पटकने पर भी कम्बख्त जिन्दा बच गया। यदि कोई दूकानदार मुकद्दमा हार जाता, तो यह समाचार उन लोगों के लिये बड़ा ही श्रवण-सुखद प्रतीत होता; लेकिन उसमें अफसोस की बात सिर्फ इतनी ही रह जाती कि उस दूकानदार से मुद्दाल्द को दुबारा खर्च नहीं दिलाया गया !

इसपर स्कूज़-मास्टर कहता—यह न्यायसंगत नहीं होता ।

फोमिच उत्तेजित होकर कहता—क्या न्यायसंगत नहीं होता ? तो क्या दूकानदार ही खुद कानून के मुताबिक सब काम करता है ? दूकानदार है क्या ? पहले हमलोग इस बेचारे जीव की जाँच तो करें । सच बात तो यह है कि सभी बनिये किसान हैं, देहात ही से आते हैं और थोड़े समय के बाद भाड़े पर एक दूकान लेकर व्यापार करने लगते हैं । लेकिन दूकान चलाने के लिए तो रुपये की ज़रूरत पड़ती है । भला किसान रुपये कहाँ पावें ? यह तो सभी लोग जानते हैं कि रुपये ईमानदारी की कमाई से नहीं मिलते । इसके मानी यह हैं कि किसान ने किसी-न-किसी तरीके से किसी को ठगा है । तब तो इसका यह मतलब हुआ कि दूकानदार बेईमान किसान है !

यह बुद्धिमानी और चतुरता का प्रदर्शन है—ऐसा कह कर मंडली के लोगों ने उस बहस और वक्ता के तर्क-वितर्क को पसन्द किया ।

टायपा आह भरता और अपने सीने को मलता था । उसकी आवाज़ उस समय ठीक वैसी ही थी, जैसी कि शराब का एक गिलास पी लेने पर उसकी होती थी ।

कप्तान खुश-मिजाज था । वे लोग जब प्रन्तीय समाचारों को पढ़ने

लगे, तब कप्तान अपनी मस्ती में था, जैसा कि खुद उसकी हरकतों से ज़ाहिर होता था ।

यहाँ यह स्पष्ट है कि दूकानदार कैसी बेशर्मी के साथ रहता है और वह ज़िन्दगी को किस तरह बरबाद करता है ।—फोमिच की यह वक्तृता मानों दूकानदार के चारों ओर गर्जन करती हुई उसपर विजय प्राप्त कर रही है । लोग उसे बड़े चाव के साथ सुनते हैं । कारण, वह बड़े ही ज़ोरदार शब्दों में कहता है ।

वह फिर चिल्लाता है—हाय ! यदि मैं अखबारों में सिर्फ लिख सकता, तो दूकानदार की असली सूरत दिखला देता । मैं भली भाँति दिखला कर यह सिद्ध कर देता कि वह केवल एक जानवर है, जो थोड़े ही दिनों के लिये मनुष्य का कर्त्तव्य पालन कर रहा है । चूँकि मैं उसके स्वभाव से खूब परिचित हूँ और उसकी भीतरी हालत को खूब जानता हूँ; इस लिये कह सकता हूँ कि वह एक कोरा बेवकूफ है, जिसे ज़िन्दगी का कुछ भी लुफ्त नहीं मिलता—जिसके हृदय में स्वदेश-नुराग नहीं होता और जो रुपये-पैसे से बढ़कर और किसी चीज को कुछ नहीं समझता ।

उसी दल का एक गरीब साथी, किसान के पक्ष को दुर्बल समझ कर, उसके क्रोध को बढ़ाकर मज़ा लेने के लिये, बोला—हाँ, जब शहर के रईस तक भूखों मर रहे हैं, तब संसार के अन्य लोगों की बात कौन चलाये ।

कप्तान—ऐ मकड़े और मेढ़क के बच्चे ! तुम बहुत ठीक कह रहे हो । जब रईस लोगों की ही मिट्टी खराब हो रही है, तब तो भब कोई भी बच नहीं रहा । बच रहे हैं सिर्फ दूकानदार लोग, लेकिन मैं उनसे घृणा करता हूँ । रईसों की दुर्गति देखना बड़ा सुखकर है । क्या उन लोगों ने तुम्हें पद-दलित नहीं किया है ?

तो इससे मुझे क्या ? मैं तो संसार में अपने जीवन के प्रेमवश अवतीर्ण हुआ हूँ। दूकानदार को जानता ही नहीं। यही कारण है कि मैं उससे घृणा करता हूँ। इसका यह मतलब नहीं है कि मैं स्वयं भला-मानस हूँ। मैं सिर्फ़ एक जानवर हूँ, जो पहले कभी मनुष्य था। मैं अब अपने पूर्व जन्म की छाया मात्र हूँ। मैं दुनियाँ की दौलत पर थूकता और पेशाब करता हूँ। जिन्दगी मेरे लिये ऐसी स्त्री के समान है, जिसने मुझे तलाक दे दिया है। यही कारण है कि मैं इससे घृणा करता हूँ और इसके प्रति पूर्ण रूप से उदासीन रहता हूँ।

सब झूठ है। बिलकुल झूठ है।

फोमिच बहुत गरम होकर गर्ज उठा—क्या मैं झूठा हूँ ?

स्कूल-मास्टर ठपठा होकर धीरे से बोला—तुम इस तरह गर्जते क्यों हो ? इसमें बहस की क्या दरकार है ? दूकानदार हो या रईस, हमलोगों को इससे मतलब !

टरास बोला—यह बहुत दुरुस्त है, क्योंकि हमलोग न मछली हैं, न चिड़िया, न खरगोश।

स्कूल-मास्टर को लड़ाई-झगड़ा या हल्ला गुल्ला पसन्द नहीं था। जब उसे बड़ा गुस्सा आता, उसके होंठ फड़कने लगते। तो भी मेल-मिलाप करने की कोशिश करता। यदि इसमें वह सफल नहीं होता, तो उनलोगों का संग छोड़कर भाग जाता।

कप्तान यह बात भली भाँति समझता था। जब वह बहुत ढाले नहीं रहता, तब अपने को काबू में रख सकता था। कारण, वह कभी ऐसे साथी को नाहक खोना नहीं चाहता था, जो उसकी अनुपम वक्तृता का सबसे बढ़कर समझनेवाला हो।

वह अब और अधिक धीरज के साथ कहने लगा—मैं यह देख रहा

नर-पशु

हूँ कि जीवन शत्रुओं के हाथ में है। वे शत्रु केवल कुलीनता ही के शत्रु नहीं हैं, किन्तु सब अच्छे कामों के शत्रु हैं। साथ ही, ये लोग उनके भी दुश्मन हैं, जो बड़े लालची और जाहिल हैं और जो जीवन की कुछ भी उन्नति नहीं करना चाहते।

स्कूल-मास्टर से नहीं रहा गया। वह बहुत जोशीले ढंग से बोल उठा—क्या आप सौदागरों की घोर निन्दा कर रहे हैं? इन्हीं लोगों ने तो जिनेवा, वेनिस और हौलैंड जैसे अनुपम नगरों का निर्माण किया। भारतवर्ष को जीत कर हस्तगत करनेवाले सौदागर ही तो थे?—इङ्ग-लैण्ड के सौदागर! ये लोग ऐसे वणिक् थे, जैसे स्ट्रोगनफ़....!!

मुझे इन सौदागरों से भी क्या मतलब? मैं तो 'पेटनिफ़' या उमी के दर्जे के बनियों से ही सम्बन्ध रखता हूँ, जिनसे हमलोगों का कुछ काम पड़ता है।

स्कूल-मास्टर धीरे से बोला—तुम्हें इन लोगों से क्या करना धरना है!

अरे! मैं जीवित हूँ, इस संसार में रहता हूँ। मुझे ज़रूर इन असभ्यों का खयाल आ जाने पर गुस्सा आ ही जायगा। ये जङ्गली लोग ज़िन्दगी पर अधिकार जमा चुके हैं और अपनी शक्ति-भर इसको बरबाद करने की कोशिश कर रहे हैं।

और, साथ-साथ वे लोग भी ऐसा ही कर रहे हैं, जो कप्तान के उचित क्रोध पर हँस रहे हैं!

यह महज़ वेवकूफी है। मैं तुम्हारी राय से सहमत हूँ। कप्तान का पार्श्वचर होने के कारण, मैं उन विचारों और भावों को अवश्य नष्ट कर डालूँगा, जो कभी मुझे जकड़े हुए थे। यह शायद सच है; परन्तु यदि हम लोग इन भावों को अपने हृदय से निकाल दें, तो फिर हमलोगों के पास कौन-से अस्त्र-शस्त्र रह जायेंगे,

नर-पशु

स्कूल-मास्टर उत्साह पूर्वक बोला—हाँ, अब तुम युक्तियुक्त बातें करने लगे ।

वस्तुतः हमलोग एक दूसरी ही चीज चाहते हैं । जीवन-समस्या पर विचार करने के लिये नवीन पथ, नये भाव—जिनमें कुछ ताज़गी हो; हमलोग यही खोजते हैं । कारण, हमलोग स्वयं जीवन के नये ढंग पर हैं ।

स्कूल-मास्टर ने कहा—हाँ, ठीक है । हमलोग जो खोज रहे हैं, वही यह है ।

एक बनिये का लड़का, जिसे लोग 'एण्ड' कहकर पुकारते थे, पूछ बैठा—इतने वाद-विवाद और दिमागपट्टी की क्या जरूरत है ? हम-लोगों को अब अधिक दिन जीना तो है नहीं । मैं चालीस बरस का हूँ और तुम पचास के । हम लोलों की मण्डली में तीस बरस से कम का कोई नहीं है । और, यदि कोई बीस बरस का होता भी, तो इन परिस्थितियों में पड़कर बहुत दिनों तक जी नहीं सकता था ।

अच्छा, तो हम लोग किस नये ढंग पर हैं ?—वह गरीब आदमी, जिसका उपनाम 'लीविंग' था, व्यङ्गपूर्ण वचनों में बोला—मुझे मालूम पड़ता है, इस संसार में बनिये-व्यापारी हर युग में रहे हैं ।

स्कूल-मास्टर बोला—व्यापारियों ने ही 'रोम' जैसे सुन्दर नगर का निर्माण किया ।

कसान गद्गद होकर बोला—हाँ, यह ठीक है । 'रोमुलस' और 'रेमूस्' ने ही 'रोम' शहर बसाया । क्या वे लोग बनिया नहीं थे ? और हम लोग ! हम लोगों का भी जब समय आवेगा, तब तो हम लोग भी कुछ-न-कुछ निर्माण करेंगे ही ।

'लीविंग' अपने मन में बड़ा ही खुश होकर, हँसता हुआ, बीच ही में बोल उठा—सामाजिक शान्ति भंग हो रही है !

उसकी हँसी दुष्टता-भरी हुई होती थी, जो लोगों के हृदय पर चोट पहुँचाती थी। उसका साथ देने वाले सिम्तजोफ, पादरी, अद्धा-टरास आदि भी थे। 'पुच्छल तारा' की वक्र दृष्टि बड़ी तेजी से चमक रही थी।

'एण्ड' इस तरह से जोरदार शब्दों में बोलता था, मानों सुननेवालों के सिर पर हथौड़ी की चोट पड़ रही हो—ये सब कूड़ा-करकट, फालतू और बे मतलब की बातें हैं—सपने हैं।

हम लोगों की बातें आश्चर्यजनक थीं। ये जाति से निकाले गये थे।

वास्तव में ये फटे-चिथड़े पहनने वाले, शराब के नशे में चूर, क्रोधी, तानेबाज और भ्रष्ट लोग थे, जो जीवन के विषय में इस प्रकार निरर्थक वाद-विवाद किया करते थे।

किन्तु कस्तान के लिये इस तरह की बहस बहुत ही आनन्द-प्रद होती थी। वह उसमें औरों से कहीं अधिक बोल लेता था और उसे अपने-आपको बड़ा समझने का मौका मिल जाया करता था।

मनुष्य कितनी ही गिरी दशा में क्यों न हो, वह अपने समाज में औरों की अपेक्षा अपने-आपको ही श्रेष्ठ समझने में विशेष आनन्द अनुभव करता है। यह एक निश्चित बात है।

कस्तान फोमिच अपने जोश का दुरुपयोग करता था, जिससे 'टायपा' या अन्य जाति-बहिष्कृत लोग तङ्ग आ जाते थे। उन लोगों के लिये राज-नीति बहुत ही प्रिय विषय थी। जब भारतवर्ष को जीतने में इङ्गलैंड के बल-प्रयोग को रोकने की आवश्यकता के विषय में बहस शुरू होती, तब उस बहस का अन्त होना कठिन हो जाता था। साथ ही, जब यहूदियों के अस्तित्व को पृथ्वी-तल से मिटा देने के उपायों को सोच निकालने का विषय विचाराधीन होता, तब तो जोश का ठिकाना न रहता था।

इस दूसरे प्रश्न में प्रमुख नेता 'लीविंग' था, जो अद्भुत निर्दयता-

नर-पशु

पूर्ण उग्राय सुझाया करता ; लेकिन कप्तान—जो बहस में मुखिया होना चाहता था—इस विषय को अलग कर देता था ।

स्त्रियों के विषय में भी बराबर, बड़े चाव से, बहस चलती थी; लेकिन अधिकतर उनके दुःख पूर्ण इतिहासों और स्वभावों का ही वर्णन हुआ करता था ।

स्कूल-मास्टर सदैव स्त्री-जाति का पूर्ण पक्षपाती था । जब कभी कोई उसके प्रति आक्षेप-पूर्वक कड़ी समालोचना करता, तब वह क्रुद्ध हो उठता था । सब लोग उसके विचारों के सामने दब जाते थे । कारण, उसे लोग अपने से श्रेष्ठ समझते थे । साथ ही, हर शनिवार को, वे लोग उससे—उसकी हफ्ते-भर की कमाई में से—रुपये उधार लेते थे । इसके सिवा उसको और भी अनेक प्रकार की सुविधाएँ थीं । उदाहरणार्थ—जब कभी जोश के साथ भी बहस होती रहती थी, उसे बोलने का मौक़ा ज़रूर दिया जाता था । इतना ही नहीं, उस सराय में वह स्त्रियों को भी अपने साथ लाने पाता था; और किसी को इस बात का अधिकार नहीं था । कारण, कप्तान फोमिच अपने किरायेदारों को बराबर इस बात की चेतावनी दिया करता और इस बात पर कड़ी निगाह भी रक्खा करता था । वह प्रायः कहा भी करता—यहाँ किसी औरत को मैं नहीं आने दूँगा । स्त्रियाँ, दूकानदार और दर्शन-शास्त्र—यही तीन मेरे सर्वनाश के कारण हैं । यदि मैं किसी को स्त्री के साथ देखूँगा, तो उसे निकाल-बाहर करूँगा और उसके साथ-साथ औरतों को मार भगाऊँगा । अपने अटल सिद्धान्त के अनुसार मैं उसकी गर्दन पकड़कर—

सचमुच वह चाहे जिसकी गर्दन पकड़कर उसे पछाड़ सकता था; क्योंकि यद्यपि वह कुछ अधिक उम्र का था, तथापि उसमें आश्चर्य-

नर-पशु

जनक शक्ति थी। साथ ही, जब कभी किसी के साथ वह लड़ाई-झगड़ा करता, स्कूल-मास्टर जरूर उसका साथ देता था।

यद्यपि स्कूल-मास्टर साधारणतः धुएँ की तरह धुँधला मुँह बनाये और क्रूर की तरह निस्तब्ध रहता, तथापि जब कभी मार-पीट का मौक़ा आ पड़ता, यह फोमिच की पीठ पर खड़ा रहकर उसकी रक्षा में सावधान रहता। उस समय इन दोनों साथियों का मेल, भिड़नेवाले लोगों के नाश का कारण बन जाता था—इन दोनों का सहयोग इनके अजेय होने का साधन बन जाता था—इतना ही क्यों, जब कभी फोमिच किसी के साथ मल्ल युद्ध करने लगता, तब 'एंड' भी दौड़कर उसके प्रतिपक्षी को ज़मीन पर पटक देता था।

एक दफे सिस्तजोफ बेतरह शराब ढाल कर आया। उसने बिना किसी कारण के ही स्कूल-मास्टर के सिर के बाल पकड़कर मुट्ठी-भर उखाड़ लिये। फोमिच ने एक ही घूसे में उसे बेहोश कर नीचे गिरा दिया। यह आध घंटे तक मूर्च्छितावस्था में पड़ा रहा। जब उसे होश हुआ, उसे उन उखाड़े हुए बालों को निगलना ही पड़ा ! कारण, यदि वह ऐसा न करता, तो वह मार डाला जाता !

उस मंडली के आमोद-प्रमोद की वस्तुओं में अखबार पढ़ना, वाद-विवाद करना और इन दो के सिवा ताश खेलना भी था। वे लोग स्कूल-मास्टर को अपने ताश के खेल में शामिल नहीं करते थे; क्योंकि वह बड़ी बेईमानी के साथ खेलता था। खेल में धोखेबाजी और गड़बड़ किये बिना वह रह ही नहीं सकता था। जब वह बार-बार पकड़ा गया, तब उसने साफ-साफ स्वीकार कर लिया। कहा—मुझे बेईमानी किये बिना रहा नहीं जाता। ऐसी मेरी आदत पड़ गई है।

पादरी 'टरास' उसकी बातों को पुष्ट करता हुआ बोला—हाँ, सच-

नर-पशु

मुच ऐसा प्रायः हो जाता है। मुझे भी प्रति रविवार को, पूजा-पाठ के बाद, अपनी स्त्री को मारने की आदत पड़ गई थी। तुम लोग विश्वास करो या न करो, मैं सच बताता हूँ; जब मेरी स्त्री मर गई, मुझे प्रति रविवार को ऐसा उद्वेग-जनक ज्ञान उत्पन्न होता था कि मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। एक रविवार बीता, कुछ अवस्था नहीं सुधरी। दूसरा रविवार भी बीत चला, मुझे बड़ा बुरा मालूम होने लगा। तीसरे रविवार को नहीं रहा गया। मैंने नौकर की लड़की को मारा। वह बेतरह बिगड़ उठी। उसने मजिस्ट्रेट के पास नालिश करने की धमकी दी। ज़रा मेरी परिस्थिति पर शौर करो। फिर चौथे रविवार को मैंने उसे उसी तरह मारा, जैसे अपनी स्त्री को मारा करता था। उस रोज़ मुझे हर्जाने के तौर पर, उसे शान्त करने के लिये, दस-रुपये देने पड़े। साथ ही यह समझौता भी करना पड़ा कि जब तक मैं दूसरी शादी न करूँ; उसी तरह बर्ताव करता रहूँगा—कभी-कभी धौल-धप्प जमाता रहूँगा।

स्कैप बोल उठा—टरास, तुम झूठ बोल रहे हो तुम फिर व्याह कैसे कर सके ?

टरास—अरे मैं...व...ह बात दर असल यह है कि हमलोगों ने बिना कोई रस्म पूरा किये, बिना बाजे-गाजे के, व्याह कर लिया। उसने मेरे लिये मकान तक ले रक्खा।

स्कूल-मास्टर ने पूछा—तुम्हें बाल-बच्चे भी हुए ?

टरास—हाँ, पाँच ! एक, सबले बड़ा, डूब मरा; वह विचित्र लड़का था। दो रक्त-आमाशय-रोग से मरे। एक लड़की, एक विद्यार्थी के साथ विवाह करके—उसीके साथ, साइबेरिया तक गई। दूसरी लड़की 'पिटर्सबर्ग' नगर में पढ़ने लगी; पर वहीं वह मर गई ! लोगों ने कहा,

नर-पशु

उसे राज-यक्ष्मा की बीमारी हुई थी। खैर, पाँच तो हो चुके, आगे खुदा हाफ़िज़ ! हम पादरियों में जनन-शक्ति यथेष्ट होती भी तो है।

इसके बाद वह अपनी जनन शक्ति की प्रबलता के कारण भी बताता गया। उन अद्भुत कारणों के वर्णन से लोग ठहाका मारकर हँसने लगते थे। जब हँसते-हँसते थक जाते थे, सिम्टजोफ अपनी लड़की की बात छेड़ देता था !

वह कहता था—मेरे एक लड़की थी। उसका नाम 'लिट्का' था। वह बड़ी मोटी थी—बेहद मोटी थी !

शायद इसके बाद उसे और कुछ भी याद नहीं रहा। कारण, वह पश्चात्ताप करता हुआ भूमि की ओर ताकने लगा—मुस्कुराया—फिर कुछ विशेष कहने को उसे नहीं मिला !

वह लोग अपनी बीती बातों की चर्चा बहुत कम किया करते थे, कदाचित् ही अतीत काल की घटनाओं को स्मरण करते थे। यदि कभी करते भी थे, साधारण रीति से चर्चा कर देते थे, सो भी हँसी, दिल्लगी के रूप में। शायद वे लोग जो बीती बातों को महज मामूली तौर से स्मरण कर लेते थे, सो बहुत अच्छा करते थे; क्योंकि अतीत की स्मृतियों से बहुत लोगों के उत्साह और शक्ति पर धक्का पहुँचता है और भविष्य की आशा पर भी पानी फिर जाता है।

बरसात के दिनों में और बदरीले शीत-काल में ये नर-पशु बेबिलफ की कलवरिया में एकत्र होते थे। वहीं इन लोगों की रोज की बैठक होती थी। इन्हें चोर और श्लगड़ालू समझ कर लोग इनसे डरा करते थे। इन्हें पियकड़ समझकर लोग इन से घृणा भी करते थे। हाँ, कुछ लोग इनकी इज्जत भी करते थे, इनकी बात भी मानते थे।

बेबिलफ की शराब की दूकान उस अड़ोस पड़ोस में एक ही

थी। वहाँ की मद्यप-मंडली में कप्तान के पार्श्वचर ही शिक्षित समझे जाते थे।

प्रति शनिवार को सन्ध्या समय, और प्रति रविवार को सबेरे से रात तक, उस शराब की दूकान पर लोगों की बड़ी भीड़ लगी रहती थी। खासकर कप्तान के पार्श्वचरों का तो वह खासा अड्डा ही था। उन लोगों के साथ, हाइस्ट्रीट के बाशिन्दों में से वे लोग भी आया करते थे, जो दुःख-दारिद्र्य की चक्कियों में पिस रहे थे। हाइस्ट्रीटवाले ऐसे खुश-मिजाज और विनोदी थे कि उनकी बातों से ऐसे लोगों के भी हृदय आनन्द-पूर्ण और हल्के हो जाते थे, जो दिन-रात उदर-समस्या हल करने में खटते-खटते थक जाते थे।

उन लोगों का, हास्य पूर्ण रीति से सभी विषयों पर बातें करने का, ढंग निराला ही था। वे किसी विषय पर सम्मति प्रदान करने में बड़े ही निर्भीक थे। वे बड़ी लापरवाही से अपने विचारों को प्रकट करने का साहस रखते थे। जिन बातों के लिये पड़ोसी लोग डरा करते थे, उन बातों में भी वे बड़े निर्भीक थे। अपनी हिम्मत-बहादुरी के ही कारण वे लोग लोक-प्रिय हो गये थे।

इसके अतिरिक्त उन लोगों में लगभग सब के-सब कानून की कुछ-न-कुछ बातें जरूर जानते थे। बहुत-से विषयों पर तो बड़े मजे में अपनी राय दे सकते थे। वे दरखास्तें या चिट्ठियाँ भी लिख सकते थे। साधारण व्यापारिक बातों में भी वे बड़ी आसानी से सहायता दे सकते थे। उन लोगों का मिहनताना या तो शराब के रूप में मिलता था या उनकी विविध-विषय-विभूषित बुद्धि की प्रशंसा के रूप में।

हाइस्ट्रीट के निवासियों में लगभग हो दल थे। दोनों में आदमियों की संख्या भी लगभग बराबर थी। इन तुल्य-संख्यक दलों के लोग

नर-पशु

कप्तान फोमिच के साथियों से सहानुभूति तो रखते थे; मगर दोनों की सहानुभूति में अन्तर था। एक दल के लोग समझते थे कि कप्तान फोमिच स्कूल मास्टर से कहीं श्रेष्ठ है—वह सचमुच धीरोदात्त-गुण सम्पन्न वीर नायक है, जो साहस और विद्या दोनों में स्कूल-मास्टर से बहुत ही बढ़ा-चढ़ा है। दूसरे दल के लोग स्कूल-मास्टर फोमिच से सर्वतोभावेन श्रेष्ठ समझते थे।

फोमिच के प्रशंसक वे ही लोग थे, जो नामी शराबी, चोर और लफंगे थे—जिन्हें न गरीबी का डर था—न जेल का। किन्तु स्कूल-मास्टर के यश-गायक वे लोग थे, जो कुछ अच्छे स्वभाव के थे; पर जिन्हें बराबर किसी वस्तु का अभाव बना रहता था। और जो प्रायः भूखे रहते थे।

स्कूल मास्टर और फोमिच की योग्यता का निर्णय निम्न-लिखित उदाहरण से हो सकता है—

एक बार शराब की दूकान पर वे लोग शहर की म्युनिसिपैलिटी के नियमों के विषय में बहस कर रहे थे। एक नियम के अनुसार पड़ोस के निवासियों को सड़क पर के गड्डों और पहियों की गहरी लीकों को बाध्य होकर भरना पड़ता था। इस काम में मकान के टूटे फूटे ईंट-पत्थरों का ही व्यवहार होता था।

मोकाई, जो अपनी स्त्री की पकाई रोटियाँ बेचा करता था, उक्त कार्य करने में आपत्ति करता हुआ बहुत ही कठुणा-जनक शब्दों में बोल उठा—मैं कहाँ का भूत-प्रेत या दैत्य-दानव हूँ कि रोड़े बटोरता फिर्लूँ ! मैं स्वयं एक बड़ा मकान बनवाना चाहता था; लेकिन जिन्दगी-भर कोशिश करने पर भी अब तक शुरू नहीं कर सका !

कप्तान ने सोचा—इस प्रश्न पर अपनी राय देनी चाहिये। मंडली

नर-पशु

का ध्यान आकर्षित करने के लिये उसने मेज पर जोर से हाथ पटक कर कहा—क्या तुमलोग नहीं जानते कि ईंट-पत्थर कहाँ मिलेंगे ? चलो, हम सब नौजवान मिलकर शहर के अन्दर चलें और टाउन-हॉल ही को ढाह कर गिरा डालें; तब हमलोग दुहरी सफरता प्राप्त कर लेंगे । एक तरफ हमलोग नागरिकों को इस बात के लिये मजबूर कर देंगे कि नया टाउन-हाल बनवायें, दूसरी ओर उसी पुराने असबाब से अपने पड़ोस की सड़क आदि का भी सुधार कर लेंगे । अहा ! क्या ही बढ़िया बात बन जायगी ! ईंट-रोड़े ढोने के लिये खुद 'मेयर' (नगराध्यक्ष) के घोड़ों से हमलोग काम ले सकते हैं । उसकी तीनों लड़कियों को भी तुमलोग साथ ले सकते हो । अहा ! साज-बाज पहने हुए उन घोड़ों के साथ वे लड़कियाँ कैसी अपूर्व शोभा देंगी ! या, नहीं तो एक काम करो । 'पेट-निकफ' का ही मकान चलो गिरा डालें—उसी की पुरानी लड़कियों से सड़क की मरम्मत कर डालें । माकाई ! मैं जानता हूँ कि रोटियाँ पकाने को चूल्हा जलाने के लिये तुम्हारी स्त्री किन वस्तुओं का व्यवहार करती है—वह खिड़कियों की शिलमिलियाँ और सीढ़ियों के तख्ते जलाती है न !

इस पर जब श्रोता-गण खूब भर-पेट हँस चुके और कप्तान के प्रस्ताव पर काफी मजाक भी कर चुके, तब गम्भीर प्रकृति वाला माली 'पेबलुगिन' पूछ बैठे—खैर, कप्तान साहब, आखिर क्या राय ठहरी ? आप क्या सलाह देते हो ?

मैं ? तुम लोगों को यही सलाह देता हूँ कि हाथ-पाँव कुछ मत चलाओ । यदि वर्षा सड़क को खराब करती है, तो करने दो । इसमें हमलोगों का कोई कसूर नहीं है !

कुछ मकानों का गिरना आरम्भ हो गया है ।

नर-पशु

उन्हें छोड़ दो, गिरने दो। यदि वे गिर पड़े, तो शहर वाले इसका हर्जाना दें। और, यदि अधिकारिवर्ग कुछ कान न दें।—हर्जाना देने से इन्कार कर दें, तो हमलोग मजिस्ट्रेट के यहाँ नालिश करें। ज़रा गौर से सोचो, पानी कहाँ से आता है? शहर से नहीं आता है! बस, इससे यह स्पष्ट सिद्ध हुआ कि जो मकान वर्षा के कारण गिरते हैं, उनका सारा दायित्व शहर ही के मत्थे है। दूसरा कौन दोष का भागी होगा?

शहरवाले कह बैठेंगे—इसमें वर्षा का पानी ही दोषी है!

लेकिन वही वर्षा का पानी शहर के मकानों को क्यों नहीं गिराता। शहर तुमसे टैक्स (कर) तो वसूल करता है; पर तुम्हें इतना भी अधिकार नहीं देता कि तुम अपने दाँव को पेश कर सको, लड़ भिड़कर अपने हक पर पहुँच सको। शहर ही तो तुम्हारे जीवन और तुम्हारी सम्पत्ति का सर्वनाश करता है। तारीफ यह कि तब भी तुम्हीं को दोषी ठहराता है—तुम्हीं पर इसकी जिम्मेवारी डालता है। यह अन्धेर नहीं तो क्या है?

सड़क के पड़ोस के आधे निवासियों ने फोमिच की बहस से दृढ़ विश्वस्त होकर यह निश्चय किया कि तब तक वे लोग प्रतीक्षा करें, जब तक शहर का जल उन लोगों की झोपड़ियों को बहा कर न ले जाय?

उन लोगों में से आधे लोग लगभग गम्भीर प्रकृति के थे। उन लोगों ने स्कूल-मास्टर से एक बहुत बड़ी और भावपूर्ण रिपोर्ट लिखवाई, जिसे वे लोग नगर के अधिकारियों के सामने पेश करना चाहते थे। इस रिपोर्ट में शहर के नियम-बद्ध कानून को न मानने के इतने युक्तिपूर्ण कारण दिये गये थे कि म्युनिसिपैलिटी को बाध्य होकर उसपर विचार कर उसे मंजूर करना पड़ा। उन लोगों को यह आशा मिल गई कि वे 'बैरक'—फौजी छावनी—की मरम्मत से जो कुछ ईंट-रोड़े बच जायँ, सब उठाकर ले जा सकते हैं। साथ ही, यह भी आशा हुई कि दम-कल

से पाँच घोड़े उन्हें इस काम के लिये मिलें कि वे उन्हें गाड़ियों में जोत कर उनपर ईंट-रोड़े ढोवें । इसके अलावा यह भी निर्णय हुआ कि सड़क के नीचे एक नाली भी पानी बहने के लिये बनवा दी जाय ।

यह महत्वपूर्ण कार्य इतना प्रभावशाली हुआ कि स्कूल-मास्टर बहुत ही लोक-प्रिय हो गया । वह दरखास्तें लिखता था और अखबारों में लेख भी दिया करता था ।

एक दफ़े 'बेबिलफ़' की दूकान पर आगन्तुकों ने देखा कि मछलियाँ और दूसरी तरकारियाँ ठीक तौर से नहीं पकी थीं । दो रोज के बाद 'बेबिलफ़' हाथ में अखबार लिए हुए आया । बोला—हाँ, यह बात ठीक है । बहुत दुरुस्त है । मुझे इसके विरुद्ध कुछ भी कहना नहीं है । वे मछलियाँ सचमुच उसी समय सड़ी हुई थीं, जब मैंने उन्हें खरीदी थीं । गोबी भी बहुत दिनों की पुरानी थी । अरे यह सर्वथा स्वाभाविक है कि सभी लोग अधिक-से-अधिक पैसे की बचत चाहते हैं । लेकिन होता है ठीक इसके विपरीत । मैंने पैसे बचाने की कोशिश की, लेकिन किसी चालाक आदमी ने मेरे लोभ का अन्त कर दिया !

उसके खंडन-मंडन से उसके श्रोताओं—आगन्तुकों—पर अपूर्व प्रभाव पड़ा । इससे 'बेबिलफ़' को सड़ी मछलियों और बासी गोबियों को भी खपा देने का अच्छा मौका मिल गया । लोग उन्हें गटागट निगलते जा रहे थे ! उनके स्वाद की तरफ किसी का ध्यान नहीं था ! इसका एक कारण था । उनमें गरम मसाले का इतना अधिक पुट दिया गया था कि सड़न की बू हवा हो गई थी !

उपर्युक्त घटना दो कारणों से महत्वपूर्ण हो गई । इससे केवल स्कूल-मास्टर की ही प्रतिष्ठा नहीं बढ़ी, बल्कि इसने वहाँ के निवासियों की दृष्टि में अखबारों का भी महत्व बढ़ा दिया ।

कभी-कभी स्कूल-मास्टर सच्चरित्रता पर भी बोला करता था। वह, मकान रँगने का काम करने वाले 'दुराइन' का ध्यान आकर्षित करते हुए, कहने लगा—दुराइन, आज यह मैंने अपनी आँखों देखा कि तुम अपनी स्त्री को किस तरह मार रहे थे !

उस समय दुराइन दो गिलास शराब पीकर नशे में मस्त था। मंडली के लोग कुछ डाँट-डराव सुनने की आशा से उसकी ओर देख रहे थे। शराब की दुकान पर निस्तब्धता छाई हुई थी।

दुराइन बोल उठा—अरे ! यदि तुमने देख ही लिया, तो मैं आशा करता हूँ कि तुमने उसे पसन्द भी किया होगा !

मंडली के लोग गम्भीर भाव से हँस पड़े।

स्कूल-मास्टर बोला—नहीं, मैंने उसे पसन्द नहीं किया !

उसके शब्द अत्यन्त गम्भीरतापूर्ण थे। श्रोता लोग भी मौन थे।

फिर दुराइन ने साहस-पूर्वक कहा—जो कुछ मैं कर सकता था, मैंने किया। वस्तुतः मैंने अपनी शक्ति-भर पूरी चेष्टा की। मेरी स्त्री पर खूब मार पड़ी है। वह आज बिछाने से उठ नहीं सकती।

स्कूल-मास्टर अपनी तर्जनी अँगुली से मेज़ पर कुछ निशान बना कर उनकी परीक्षा करते हुए बोला—हाँ दुराइन, बस यही कारण है कि मैं इसे पसन्द नहीं करता। पहले हम लोग इस प्रश्न को भली भाँति समझ लें कि तुम क्या कर रहे हो और उसका नतीजा क्या निकलेगा ! तुम्हारी स्त्री गर्भवती है। कल तुमने उसके सभी अंगों पर चोट की है। ऐसा करने से तुम गर्भस्थ बच्चे को भी मार डाल सकते हो। और, जब तुम्हारी स्त्री पर कड़ी मिहनत का बोझ पड़ेगा, तब वह या तो मर जायगी या सख्त बीमार पड़कर निकम्मी हो जायगी। बीमार स्त्री एक बड़ा भारी संकट है। वह तुमसे काफी रुपये खर्च करावेगी; क्योंकि बीमार होने पर

दवा की जरूरत पड़ेगी ही और दवा के लिये भी रुपये चाहिये। यदि संयोग-वश या सौभाग्यवश उसके गर्भ में तुम्हारा लड़का नहीं मरा, तो भी पेट के बच्चे को चोट पहुँचा कर तुम उसकी बड़ी क्षति करोगे। वह या तो कुबड़ा होगा या लँगड़ा ! निश्चय ही वह निकम्मा पैदा होगा। तुम्हारा यह बहुत ही महत्वपूर्ण कर्त्तव्य है कि लड़के को अपनी जीविका का निर्वाह करने योग्य उत्पन्न होने दो। यदि थोड़ी देर के लिये मान लो कि लड़का कमजोर पैदा हुआ, तो तुम्हारे लिये बड़ा बुरा होगा। फिर वह अपनी माँ के लिये भार स्वरूप हो जायगा। तब उसके लिये बराबर संयम और दवा की जरूरत होगी। तुम्हीं बताओ, तुम अपने ही लिये क्या बटोर रहे हो ? जिन्हें शारीरिक परिश्रम करके जीविका-निर्वाह करना हो, उनके लिये यह अत्यंत आवश्यक है कि वे स्वस्थ होकर जन्म लें और स्वस्थ बच्चे ही पैदा करें। क्या मैं दुस्त नहीं कह रहा हूँ ?

मंडली के लोग उसकी बातों का समर्थन करते हुए बोल उठे—ठीक है। बहुत ठीक है।

टुराइन कहने लगा—ऐसी घटना न घटेगी। मेरी स्त्री बड़ी मज़बूत है। उसके पेट के अन्दर के बच्चे को कोई चोट पहुँचा ही नहीं सकता ! और एक बात यह भी है कि उसे मारने के सिवा और कोई चारा भी नहीं है। वह ऐसी शैतान है कि महज मामूली बात के लिये भी मुझसे लड़ पड़ती है।

स्कूल-मास्टर उसी प्रकार शान्त-भावपूर्ण शब्दों में कहने लगा—मैं भी यह अच्छी तरह समझता हूँ कि तुम अपनी स्त्री को मारने की आदत नहीं छोड़ सकते ! इसके लिये चाहे तुम्हारे पास अनेक कारण क्यों न हों; लेकिन मेरी समझ में तुम्हारी स्त्री का बुरा स्वभाव इसका कारण नहीं कहा जा सकता। इसका कारण यह है कि तुम अशिक्षित हो, दुर्दर्शा-ग्रस्त हो। बस।

गर-पशु

दुराइन चिल्ला उठा—हाँ, बात तो यही है। सचमुच हम लोग बड़े अंधेरे में हैं। वह अन्धकार अमावस्या की रात से भी निविड़ है।

आह ! तुम्हारे जीवन की दशाएँ भी तुम्हें चिढ़ा रही हैं ! दुर्दशा को बुलाते हो तुम, और कष्ट पहुँचता है तुम्हारी स्त्री को। संसार भर में वही तुम्हारा अत्यन्त घनिष्ठ है। इसीलिए वह सबसे बढ़कर दुःख भी पाती है ! तुम उससे बलिष्ठ भी तो हो ! वह तुम्हारे समीप ही रहती है—तुमसे न दूर रह सकती है, न तुम्हारे पास से भाग ही सकती है। क्या तुम यह नहीं समझते कि यह कैसा भद्दा काम है ?

धिक्कार है उसे ! मैं अकेले क्या करूँ ? क्या मैं आदमी नहीं हूँ ?

ठीक है, तुम आदमी हो, लेकिन तुम क्या यह नहीं समझते कि मैं तुम्हें क्या समझा रहा हूँ ? यदि तुम उसे मारना ही चाहते हो, तो मारो; लेकिन सावधानता-पूर्वक मारो ! इस बात का बराबर ध्यान रखो कि उसके स्वास्थ्य पर या बच्चे पर आघात न पहुँचे। एक साधारण नियम के तौर पर यह याद रखो कि गर्भवती स्त्री की छाती पर न मारना चाहिये। मर्म स्थानों में उसे चोट कभी मत पहुँचाओ। उसकी पीठ में मारो या रस्सी लेकर केवल उसके मांसल अंगों—जाँघ, बाँह—पर मारो।

स्कूल-मास्टर ने ज्योंही वक्तृता समाप्त की, उसकी धँसी हुई काली-काली आँखें श्रोताओं की तरफ देखने लगीं; मानों वे कातर होकर क्षमा या और कोई ऐसी ही वस्तु माँग रही हों !

श्रोता-गण बड़े आनन्द में मग्न थे। सब-के-सब गप-शप—काना-फूसी—करने की धुन में मस्त थे।

एक साथी को जो सदाचार का उपदेश मिला, वह पूरी तरह से श्रोताओं की समझ में आ गया; लेकिन फिर भी यह शराब की दूकान थी—दरिद्रता का अड्डा !

नर-पशु

स्कूलमास्टर ने फिर पूछा—क्यों भाई दुराइन, क्या तुमने समझ लिया ?

दुराइन झुँझला कर ओठों के भीतर ही कहने लगा—टल जाय किसी सूरत से यह बला तो अच्छा हो !

फिर प्रकट रूप में बोला—तुम जो कुछ कह रहे हो, उसमें सचाई है ।

इतना ही कहकर वह चुप रह गया । वह अपने दोस्त की हँसी-दिल्लगी का जवाब शरमिन्दे चेहरे की मुस्कुराहट से देने लगा ।

इसी समय मोकाई तर्क-वितर्क करता हुआ बोल उठा—तब फिर यह सोचो कि स्त्री के साथ पुरुष का कैसा सम्बन्ध होता है । यदि उचित दृष्टि से देखा जाय, तो यह कहना चाहिये कि स्त्री वास्तव में सच्चे मित्र के समान है । वह मानों अपने पति के साथ, जीवन-भर के लिये, साथी-बन्दी की भाँति, प्रेम रज्जु में बँधी है । इसलिये पति को चाहिये कि वह स्त्री के साथ-साथ चलने की कोशिश करे । यदि कोई उस बंधन से छुटकारा पाने के लिये कूद-फाँद कर भागता है, तो वह बंधन आप ही छूट जाता है ।

इसपर जेकफ बोल उठा—चुप रहो, तुम भी तो अपनी स्त्री को मारते हो ! क्यों, क्या यह बात सच नहीं है !

मोकाई झेंपकर बोला—मैं तो यह नहीं कह रहा हूँ कि मैं नहीं मारता । जरूर मारता हूँ । मुझसे बिना मारे कब रहा जायगा ? यहाँ तक कि जब मुझे किसी मनुष्य को मारने की इच्छा होती है, तब मैं दीवार को भी अपने घूसे-तमाचे से मार सकता हूँ !

दुराइन बोला—भाई, मेरे साथ भी ठीक यही बात है । मैं भी ऐसा ही सोचता हूँ ।

मोकाई—भाइयो, हम लोगों का भी क्या ही विचित्र जीवन है !

नर-पशु

हाय ! ऐस सङ्कीर्ण ! ऐसा दुःखमय ! ऐसा पतित ! छिः ! मनुष्य होकर भी स्त्री का यथार्थ आदर-सत्कार करते नहीं बनता !

उस मंडली में से फिर कोई मजाक के तौर पर बोला—तो भी अपनी स्त्री को सावधानी से मारना चाहिये ।

×

×

×

×

इसी तरह, वे लोग रात को बड़ी देर तक गप-शप किया करते—या जब तक शराब के नशे में बेहोश नहीं हो जाते थे, तब तक बकशक करते ही रहते थे ।

मकान के बाहर वर्षा की बौछार खिड़कियों पर घहराती थी । बर्फीली हवा बड़े जोरों से सनसना रही थी । लेकिन भीतर की हवा कुछ गरम थी । सड़क भीगी, सर्द और अँधेरी थी । हवा का जबरदस्त झोंका खिड़कियों के शीशों से बेतरह टकराता था, मानों इस मंडली को बाहर निकलने का निमंत्रण दे रहा था—साथ ही, इस बात की धमकी भी दे रहा था कि धूल की तरह उन्हें पृथ्वी-तल से उड़ा ले जायगा । बीच-बीच में, हवा की सनसनाहट में, किसी के कराहने की एक दबी हुई आवाज़ सुन पड़ती थी । साथ ही-साथ, कभी-कभी, उच्च स्वर से किसी का हँसना भी सुनाई पड़ता था ।

इन शब्दों से मन में उस आगामी जाड़े की दुःखमयी स्मृति आती थी, जिसमें सूर्य-रहित छोटे बदरीले दिन होते हैं और बर्फीली लम्बी रात—जिसमें गरम पोशाक और प्रचुर भोजन की आवश्यकता पड़ती है । यदि कोई भूखा रह गया, तो जाड़े की लम्बी रात काटे नहीं कटती—सारी रात आँखों में काटनी पड़ती है । अरे जाड़ा आ रहा है जाड़ा । इसे न मालूम लोग कैसे काटेंगे !

ये दुःखमय विचार उन लोगों की चिन्ता को बढ़ाते थे । सारी

मण्डली की आह भरी आवाज़ से उनके ललाट की रेखाओं की संख्या बढ़ जाती थी। उन लोगों की अकेली आवाज़ इस सामूहिक आह के सामने बहुत हल्की मालूम पड़ती थी। उनके विचार मानों आपस में कभी मेल नहीं खाते थे। उनमें प्रायः जङ्गली जानवरों की भाँति क्रोध की आग धधक उठती थी—या भाग्य-विधाता के निर्हय हाथों से पीसे जाने के कारण प्रायः निराशा भी छा जाती थी—या वे अपने को एक ऐसे निर्हय शत्रु के पजे में जकड़बंद पाते थे, जिसने उनके जीवन को इस प्रकार निष्ठुरता से उलक्षण में डाल रक्खा था। परन्तु यह शत्रु (मद्य ? नहीं—क्रोध !) अज्ञात होने के कारण अजेय था।

प्रायः वे लोग आपस में लड़ते-झगड़ते भी थे। मार-पीट भी खूब करते थे। कुछ देर के बाद लड़ाई झगड़ों का निपटारा करके एक बार फिर मद्य-पान में रत हो जाते थे। पीते-पीते कभी अघाते न थे। जब जब के कुल पैसे उड़ जाते थे, तब वे लोग अपनी दूसरी चीज़ों को बन्धक रखना शुरू करते थे। जब सब चीज़ें, जिन्हें 'बेबिलफ' सस्ते दाम में रखना स्वीकार करता था, बन्धक रख चुकते थे, तब कहीं शराब पीने से मुँह मोड़ते थे !!!

इस प्रकार, सर्वनाशी क्रोध में, हृदय-विदारक दुःख में और अत्यन्त शोचनीय परिस्थिति में वे लोग जाड़े के दिन बिताते थे। अरे वे लोग इससे भी बढ़कर दुःखमय जाड़े की प्रतीक्षा किया करते थे !

किन्तु उन लोगों के उस दुःखपूर्ण समय में कप्तान फोमिच उनकी रक्षा के हेतु अपना दर्शन-विज्ञान लाता था। यह कहा करता था—
भाइयो, हिम्मत बाँधो। सब वस्तुएँ नाशवान हैं। जीवन के लिये यही विचार सर्वोत्तम महोषधि है। जाड़ा बीत जायगा, तब गर्मी आवेगी।

लोग कहते हैं, ग्रीष्म-ऋतु बड़ी सुहावनी है। इसमें गौरैया-पक्षी तक को जौ की शराब पीने को मिलती है।

परन्तु फोमिच के व्याख्यान किसी काम के नहीं हुए। कारण, चूल्ह-भर स्वच्छ पानी से खाली पेट की भूख नहीं मिट सकती।

‘टरास’ भी मंडली को गीत गाकर और कहानियाँ कहकर खुश करना चाहता था। उसे इसमें अधिक सफलता मिलती थी। कभी-कभी उसके उद्योग से शराब की दुकान पर एकाएक हँसी का फव्वारा फूट पड़ता था। वे गाते, नाचते, ठहाका मारकर हँसते और कुछ घंटों तक बौड़मों की तरह आचरण करते थे।

और तब ?

और तब वे लोग मानों निराशा की नदी में गिर कर तैरने लगते थे !

जब कलवरिया की भेड़ों को चारों ओर से घेरकर वे लोग लम्प और तम्बाकू के धुएँ के बीच में बैठे रहते थे—जब वे कठोर शंशावात का गर्जन सुनते रहते थे—जब निःस्तब्ध से होकर अपने होठों के बीच से धीमे शब्दों का उच्चारण करते थे, तब केवल एक ही विचार उन लोगों के मन में सबसे बढ़कर चकर काटा करता। वह विचार और कुछ नहीं, सिर्फ यही था कि अधिक-से-अधिक मदिरा कैसे मिल सकेगी, जिससे कि वे लोग अपनी चिन्ताएँ भूल कर ज्ञान-शून्य हो जायँ !

उस मंडली का प्रत्येक सदस्य एक दूसरे से घृणा करता था, लेकिन विचित्रता यह थी कि वह घृणा के भाव को अपने मन में गुप्त रखता था ?

२

सितम्बर का अन्त था। दिन में आकाश मेघ-शून्य था। कप्तान फोमिच हर रोज की तरह, सराय के दरवाजे के पास, अपनी आराम-कुर्सी पर बैठा था। 'बेबिलफ' की शराब की दूकान के पास व्यापारी 'पेटनिकफ़' का जो पक्का मकान बन रहा था, उसे वह देख रहा था। वह विचार-धारा में डूबा हुआ था। वह मकान, जहाँ से ईंटों की जोड़ाई का मचान भी नहीं हटाया गया था, मोमबत्ती का गुदाम रखने के लिये बनाया गया था। यह मकान, कुछ दिनों तक, कप्तान की आँखों में क़ाँटे की तरह गड़ता था। कारण, इस मकान की वजह से उसके निवास-स्थान के एक भाग का रुख मारा जाता था ! यह गुदाम खून की तरह लाल रङ्ग की ईंटों से बना होने के कारण अपूर्व शोभा धारण करता था। बेबिलफ की शराब की दूकान भूरे रङ्ग की थी। वह लकड़ी की बनी हुई थी। उसकी टेढ़ी छत पर काई लग गई थी—वह गुदाम की पक्की दीवार पर मुफ़्तखोर की तरह झुकी हुई थी, मानों उस दीवार ही के सहारे टिक रही हो !

कप्तान इसी विचार में मग्न था कि उसके पुराने मकान के बदले में नया मकान बनेगा और उसका निवास-स्थान ढहवा कर गिरा दिया जायगा। साथ ही, उसे इस चिन्ता ने भी घेर लिया कि मुफ़लिस मुसाफ़िरोँ और भड़ैतों के निवास के उपयुक्त अब कोई दूसरा मकान खोजना पड़ेगा। दूसरा मकान इतना सस्ता और सुखप्रद होगा या नहीं, यह भी एक सवाल था। सब से पहला कठिन सवाल तो यह था कि जिस मकान में रहने का वह अभ्यस्त हो गया था, उसे कैसे छोड़ा जाय !

नर-पशु

लेकिन उससे भी बढ़कर दुःखप्रद बात यह थी कि एक व्यापारी वहाँ पर मोमबत्ती और साबुन का कारखाना खोलेगा। कप्तान यही सोच रहा था कि शत्रु के उद्योग को नष्ट करने का मौका कैसे मिलेगा—यदि यह सम्भव होता, तो वह बहुत आनन्दित होता।

कल 'पेटनिकफ' आँगन में अपने लड़के और एक कारीगर के साथ घूमता था। पहले उन लोगों ने आँगन को शौर से देखा। फिर कई जगह खूँटियाँ गाड़ीं। जब वह चला गया, तब कप्तान फोमिच ने 'पुच्छल तारा' से कहा कि उन खूँटियों को उखाड़ कर फेंक दो।

पेटनिकफ बराबर कप्तान फोमिच की आँखों के सामने खड़ा रहा। नाटा, पतला और सिकुड़ा हुआ बदन। लम्बा ओवर-कोट और जैकेट। सिर पर मखमल की टोपी। पाँवों में पालिश किया हुआ जूता। गाल की हड्डियाँ निकली हुईं। भूरे रङ्ग की नोकीली दाढ़ी। उँची रेखाओं से चिह्नित ललाट। चेहरे के भीतर से छोटी-छोटी—भूरे रङ्ग की—अध-मुँदी और सतर्क आँखें नज़र आती थीं। नोकीली लम्बी नाक और पतले-पतले होंठ थे। शकल-सूरत से वह बड़ा ही इज्जतदार, लेकिन बदमाश, मालूम पड़ता था।

कप्तान फोमिच, पेटनिकफ के कुछ शब्दों को स्मरण करता हुआ, क्रोध के मारे अपने को धिक्कारता हुआ, कहने लगा—सुभर का बच्चा ! लोमड़ी का जना !

एक दिन म्युनिसिपैलिटी के एक सदस्य के साथ पेटनिकफ उस मकान को देखने आया। कप्तान फोमिच को देखकर उसने अपने साथी से पूछा—क्या यह आपका किरायेदार है ? यह तो पागल है !

×

×

×

×

इस घटना को हुए अठारह महीने बीत गये। उस दिन से दोनों में एक दूसरे को अपमानित करने की स्पर्द्धा होती रही !

कल फिर पेटनिकफ और कस्तान फोमिच में बातें बढ़ते-बढ़ते थोड़ी-सी कहा-सुनी भी हो गई। उस कारीगर को बिदा कर देने के उपरान्त पेटनिकफ, कस्तान के पास जाकर, बोला—क्या अभी तक बैठे हुए हो ? बराबर बैठे ही रहते हो ?

इतना कह कर पेटनिकफ उसकी टोपी की चोटी को इस तरह छूने लगा, जिससे यह निश्चय नहीं हो सका कि वह उसकी टोपी को सिर पर ठिकाने से बैठा रहा था या उसे सलाम कर रहा था।

और तुम ! तुम तो अभी तक किसी शिकार की टोह में चुपके-चुपके घूम रहे हो न ?

यह कहता हुआ कस्तान अपने निचले दाँतों को निपोरता हुआ अपनी लम्बी दाढ़ी इस तरह हिलाने लगा कि देखकर सभी को यह मालूम पड़ा कि वह भी बदले में सिर हिला कर सलाम कर रहा है। साथ ही, लोग यह भी अन्दाज़ लगा रहे थे कि ऐसी मुखाकृति उसने गुड़गुड़ी की नली को मुँह के एक कोने से दूसरे कोने में रखने के लिये बनाई है।

मेरे पास काफ़ी रुपये हैं। यही कारण है कि मैं बराबर उन्हें चलाता रहता हूँ। रुपये को कारोबार में लगा कर चलाने की आवश्यकता रहती है।

दबी जबान से यह कह कर पेटनिकफ अपने साथी की ओर मानों आँख चुराकर ताकने लगा।

इसका मतलब यह है कि तुम्हीं रुपये के गुलाम हो, रुपया तुम्हारा गुलाम नहीं है।

यह कह कर फोमिच, क्रोधपूर्ण दृष्टि से, अपने जानी दुश्मन की ओर

नर-पशु

देखने लगा । उसके मन में आया कि उस पाजी के पेट में कसकर एक लात जमा दे, लेकिन उसने किसी तरह अपने मनोवेग को रोक रक्खा ।

जहाँ रुपये का सवाल आता है, दोनों बातें एक-सी होती हैं । लेकिन जब तुम्हारे पास रुपये नहीं हैं.....

इतना ही कह कर पेटनिकफ चुप हो गया । वह कप्तान की ओर साहस से देखने लगा । बोलते वक्त उसके काँपते हुए होठों के अन्दर से भेड़िये की तरह दाँत नज़र आये !

कोई आदमी, जिसके पास बढ़िया दिमाग है और जिसकी आत्मा अच्छी है, रुपये के बगैर भी काम चला सकता है । रुपया साधारणतः तभी आता है, जब आत्मा को कुछ-न-कुछ कलुषित करना पड़ता है । ईमानदारी में जितनी कमी होगी, उतने ही अधिक रुपये मिलेंगे ।

यह बात बिल्कुल मुनासिब है । लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनके पास न इमानदारी है और न रुपये-पैसे हैं !

फ़ोमिच स्वच्छ हृदय से बोल उठा—वेशक ! वेशक !! अरे तुम जवानी की बात याद दिलाते हो ?

यह सुनते ही पेटनिकफ नाक सिकोड़ने लगा—आहँ भरने लगा । अपनी छोटी-छोटी आँखें बन्द करता हुआ बोला—हाय ! जब मैं जवान था, न मालूम मुझे कैसी-कैसी मुसीबतें उठाने की नौबत पड़ी थी ।

हाँ, यह बात मुझे खयाल करनी चाहिये ।

हाय ! मैंने इतनी कड़ी मिहनत की.....

लेकिन तुमने दूसरों को छकाते हुए परिश्रम किया था । तुम दूसरों को नीचा दिखाने के लिये ही मिहनत करते थे । यद्यपि उस वक्त तुमने कोई हत्या नहीं की, तथापि तुमने लूट-पाट खूब मचाई ।

पेटनिकफ का चेहरा पीला पड़ गया । सोचने लगा—यह अच्छा

नर-पशु

मौका है बातचीत की धारा पलट देने का। बोला—क्यों जी, तुम तो अद्भुत अतिथि-सत्कार करनेवाले हो ! सबसे बड़ा दोष तुममें यही है कि जब आगन्तुक खड़े रहते हैं, तुम कुर्सी डटाकर बैठे-बैठे बातें करते रहते हो।

अरे ! आगन्तुक से भी बैठने को कहो।

यहाँ बैठने की कोई चीज भी तो हो ?

अरे ! तुम्हें सूझता नहीं ! आखिर ज़मीन तो है ? जमीन किसी को अपने ऊपर उठने-बैठने से मना नहीं करती। अरे कूड़े-कचरे को तो मना ही नहीं करती, मनुष्य को क्यों बैठने से मना करेगी !

पेटनिकफ चुपचाप चल पड़ा। चुपके से फोमिच के कान में कहता गया—आगन्तुक तुमसे डरता है।

कप्तान फोमिच, पेटनिकफ को धीरे-धीरे बाहर खिसकते हुए देखकर, बहुत खुश हुआ। उसकी आँखें उस समय भी पेटनिकफ को नये गुदाम की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए देख रही थीं। उसके मन में प्रबल इच्छा हो रही थी कि कम्बख्त सीढ़ियों के ऊपर से फिसलकर गिर पड़ता, तो अच्छा होता—निगोड़े की पीठ चूर-चूर हो जाती !

लेकिन इसी तरह कई बार वह पेटनिकफ के गिर पड़ने का खयाली पुलाव पका चुका था। जब पहले-पहल पेटनिकफ अपने नये गुदाम की सीढ़ियों पर वैसे ही दनादन चढ़ता ही चला गया था, जैसे मकड़ा अपने जाल में तेज़ी से रेंगता हुआ बेधड़क चला करता है, तब भी फोमिच के मन में यही बात पैदा हुई थी कि पेटनिकफ के पाँवों के बोझ से नीचे का एक तख्ता खिसक पड़ता तो बड़ा अच्छा होता। कई बार फोमिच इस कल्पना के आनन्द में अपने आसन से उछल पड़ा था। लेकिन सब व्यर्थ ! पेटनिकफ अपने को मजे में सम्हाल कर चला करता था।

×

×

×

×

नर-पशु

सब दिनों की तरह आज भी फोमिच की आँखों के सामने एक बड़ी सी लाल रंग की कोठी दिखाई देती है। वह बहुत ही ठोस बनी है। उसकी नींव बड़ी गहरी है—इतनी गहरी, मानों वृक्ष की तरह वह भी पृथ्वी-तल से रस खींचकर अपनी खुराक लेती हो ! उसके मुँड़ेरे और गुम्बद देखने से ऐसा भी प्रतीत होता है कि वह अपनी खिड़कियों द्वारा कप्तान फोमिच को चिढ़ा रही है। इधर सूर्य भी, अपनी हेमन्त-ऋतु की मधुर किरणों द्वारा, उस अट्टालिका पर वैसे ही प्रकाश की वर्षा कर रहा, जैसे अड़ोस पड़ोस के टूटे-फूटे और गिरे-पड़े छोटे-छोटे शोपड़ों पर।

‘परन्तु—क्या—यदि’—यह कहता हुआ कप्तान फोमिच जोर से आप-ही-आप चिह्ना उठा। अपने विस्फारित नेत्रों से उस गुदाम के माप का अनुमान करता हुआ फिर जोर से बोल उठा—क्या...यदि...

उसके मन में जो विचार-स्रोत आया था, उससे सजग और उत्तेजित होकर उल्ललता-कूदता हुआ वह बेविलफ की शराब की दूकान पर जा डटा। वह मुस्कुरा रहा था। न जाने अपने मन में क्या-क्या कह रहा था।

बेविलफ उसके सामने से आ मिला। दोस्ताना तौर पर ठहाके की हँसी हँसते हुए पूछ बैठा—हज़रत ! आज इतने सबेरे ! कुशल तो है !

बेविलफ एक मँझोले कद का आदमी था। लह खल्वाट (चँदेल) था। उसकी गंजी खोपड़ी के चारो ओर झालरदार भूरे बाल शोभा दे रहे थे। उसके गाल खूब चिकने और गोरे थे ! मूछें सघन और लम्बी थीं। वह बड़ा ही खुशमिजाज और फुर्तीला था। मलिन जाकेट पहने हुए था। उसकी प्रत्येक गति से फोमिच को उसकी पुरानी अफसरी की झलक आती थी।

नर-पशु

फोमिच ने शीघ्रता से पूछा—क्या तुम्हारे पास दस्तावेज, अपने मकान का नक्शा और अपनी जायदाद की फ़िहरिस्त है ?

हाँ, सब मौजूद है ।

यह कहकर बेबिलफ ने अपनी सन्देशपूर्ण आँखों से फोमिच की ओर देखा । कप्तान के मुखड़े में कुछ विलक्षणता मालूम पड़ी ।

कप्तान, अपनी मुट्ठी से बेबिलफ की पीठ ठोकता हुआ, एक तिपाई पर बैठ कर जोर से बोल उठा—उन कागज़ों को मुझे अभी दिखाओ ।

बेबिलफ ने, कप्तान की उत्तेजित अवस्था का खयाल कर, सतर्क रहने का निश्चय करते हुए, पूछा—किस लिये ?

मूर्ख ! बक़्शक मत कर, उन्हे तुरत मेरे पास ला ।

बेबिलफ के कपाल की रेखाएँ सिकुड़ गई ।

दूकान की भीतरी छत की ओर मानों कुछ पूछने की अभिलाषा से देखता हुआ फोमिच बोला—अरे शैतान, वे कागज़ात कहाँ हैं ?

फोमिच ने छत की ओर से ज़मीन की ओर नज़र दौड़ाई । वह बेबिलफ की पीठ को अपनी अँगुलियों से ठोकने लगा । फिर चिल्ला उठा—इन असंगत बातों को छोड़ो । सब कागज़-पत्र लाकर मुझे दिखाओ ।

बेबिलफ भी पुराना सैनिक था । उसके प्रति फोमिच की श्रद्धा घट जाने का मुख्य कारण यह था कि एक भूतपूर्व फ़ौजी अफसर के लिये शराब का दूकानदार होने की अपेक्षा चोर बन जाना कहीं अच्छा है ।

बेबिलफ बोल उठा—ऐ फोमिच, अरे अब याद पड़ी, वे कागज़-पत्र अदालत में उस समय दाखिल कर दिये गये, जब कि... ..

बेबिलफ ? इन बेहूदी बोटों को छोड़ो; कागज़-पत्र मुझे दिखाने से तुम्हारे ही हक़ में अच्छा होगा । मुझे नक्रशे, क़बाला का दस्तावेज़ और

बाक्री जो कुछ जरूरी कागजात हों, फौरन दिखाओ। इससे तुम्हें सौ रुपये से अधिक का लाभ होगा। अब समझे ?

बेविलफ कुछ भी न समझ सका ! लेकिन कप्तान फोमिच इस प्रकार अधिकारपूर्ण और गम्भीर शब्दों में बोला कि उस वृद्ध सैनिक (बेविलफ) की आँखें अत्यन्त उत्सुकतापूर्ण हो गईं। वह यह कहता हुआ चोर-दर-वाज़े से गायब हो गया कि वह उन कागज़ों को लोहे की सन्दूक में खोजेगा।

क्षण-भर के बाद ही वह उन कागज़-पत्रों को हाथ में लिये हुए लौट आया। बोला—क्या बताऊँ, सब चीज़ें घर ही में रखी थीं !

फोमिच—अरे मूर्ख, भला कौन समझ सकता है कि तू लड़ाई का सिपाही था ?

फोमिच उसे शर्मिन्दा करने की कोशिश से बाज नहीं आया। उसने बेविलफ के हाथ से नीले रंग की रुईदार सन्दूक को, जिसमें मुकदमे के कागज़ात सहेज कर रखे थे, क्षपट्टे से अपने हाथ में ले लिया।

उसने बेविलफ के सामने ही कागज़ों को फैलाया। बेविलफ का कौतूहल बढ़ता जा रहा था।

कागज़ों को बड़े गौर से फोमिच पढ़ने लगा। बीच-बीच में वह ऐसा-ऐसा भाव दरसाता जाता था, मानों वह सभी बातें अच्छी तरह समझ रहा हो।

फोमिच यकायक उठकर दरवाज़े के पास गया और कागज़ों को वहीं रखकर बेविलफ से यह कहता हुआ चला कि ज़रा पल-भर ठहर जाओ, अभी इन्हें बन्द मत करो।

लेकिन बेविलफ ने उसकी बातों पर तनिक भी ध्यान न देकर उन कागज़ों को समेट लिया। फिर उन्हें बक्स में रखकर ताला बन्द कर

दिया । सावधानता-पूर्वक देख भी लिया कि बक्स ठिकाने से बन्द हुआ या नहीं । इसके बाद वह अपनी गंजी खोपड़ी को अँगुलियों से खुजलाता हुआ अपनी दूकान के फाटक के पास जा खड़ा हुआ । वहीं से उसने देखा कि कप्तान फोमिच अपने डगों से शराब की दूकान के सामने की जमीन नाप रहा है । वह बीच-बीच में इधर-उधर अँगुलियाँ हिलाता और फिर जमीन की लम्बाई नापना शुरू करता । कुछ देर तक तो वह उत्सुक रहा, पीछे सन्तुष्ट-सा दीख पड़ा ।

बेबिलफ के चेहरे पर पहले चिन्ता और क्षणशट की झलक नज़र आती थी ! पीछे उसके भाव में परिवर्तन हुआ । अन्त में उसका मुख-कमल आनन्द के प्रकाश से खिल उठा । कप्तान फोमिच के पास पहुँचकर वह चिल्ला उठा—फोमिच, क्या यह सम्भव है ?

फोमिच ने छूटते ही कहा—निश्चय । एक गज़ से भी अधिक जमीन दबा ली गई है । यह तो जगह का फैसला हुआ । लेकिन गहराई के बारे में अब विचार होगा ।

गहराई बत्तीस गज़ है ।

अरे ! मैं देखता हूँ कि जिस बात के पीछे मैं पड़ा हूँ, उसका अन्दाज़ा तुमने पा लिया है ! यद्यपि तुम महामूर्ख हो, तथापि मेरे भाव को ताड़ जाने में बड़े ही पटु मालूम पड़ते हो ।

बेबिलफ निहायत खुश होकर चिल्ला उठा—फोमिच ! तुम सचमुच बड़े ग़ज़ब के आदमी हो ! तुम्हारी आँख इतनी तेज़ है कि उसे ज़मीन के अन्दर दो गज़ तक सूझता है !

कुछ ही देर के बाद वे दोनों आकर शराब की दूकान के एक कमरे में आमने-सामने बैठे । कप्तान फोमिच, शराब की बोतल ढालता हुआ, बेबिलफ से बोला—तुम देख रहे हो कि गुदाम की कुल दीवारें तुम्हारी

ही ज़मीन पर खड़ी हैं। इस मामले में तुम निर्दय होकर आचरण करो। जब स्कूल-मास्टर आ जाय, हम लोग अदालत के लिये एक अर्ज़ी-नालिश तैयार करेंगे। क्षति-पूर्ति का हिसाब बहुत साधारण रीति से जोड़ेंगे, ताकि रसूम বেশी न लगे। साथ-ही-साथ इस बात का भी अर्ज बड़े ज़ोरों में करेंगे कि दीवारें ढहवा दी जायें। इस तरह का काय्य सीमोल्लघन कहलाता है। याद रखो, तुम्हारे लिये यह सौभाग्य का सौदा है। इतनी बड़ी दीवार को तुड़वा कर पीछे हटवाना कोई मामूली बात नहीं है। ऐसे कामों में बेशुमार रुपये खर्च होते हैं। तुम्हें दुश्मन को अच्छी तरह से मूँड़ने का बड़ा बढ़िया मौका हाथ लगा है। हमलोग इसका हिसाब लगा लेंगे कि उन दीवारों को गिरवाने में कितना खर्च पड़ेगा। साथ ही, हमलोग इसका भी ध्यान रखेंगे कि टूटी-फूटी ईंटों की क्या कीमत होगी और नई नींव खुदवाने में क्या खर्च पड़ेगा। हमलोग सबका हिसाब कर डालेंगे—यहाँ तक की समय का भी। क्या तुम समझते हो कि दो हजार रुपये भी न मिलेंगे ?

बेविलफ बोल उठा—वह इतना नहीं देगा।

फोमिच बड़े गर्व से बोला—देखें, कैसे वह इससे बचता है ! ज़रा सोच कर देखो, वह कर ही क्या सकता है ? दीवार गिराने के सिवा उसके लिये और कोई चारा ही नहीं है। तुम उनलोगों के चक्कर में न पड़ो। वे लोग तुम्हें घूस देकर अपनी तरफ मिला लेने की कोशिश करेंगे। लेकिन सावधान रहना। उन्हें हरगिज़ न छोड़ना। वे लोग तुम्हें डराने-धमकाने से बाज़ न आवेंगे। लेकिन डरना कभी नहीं। हमलोगों पर पूरा विश्वास रखो। हमलोग तुम्हारी पीठ पर रह कर दिन-रात तुम्हारी रक्षा करेंगे। दुश्मन तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर सकता।

कस्तान फोमिच की आँखें आनन्द के मारे चमक उठीं। उसका चेहरा खिल उठा। बेबिलफ के मन में लोभ की वासना जगाने में वह सफ़र मनोरथ हुआ। जहाँ तक जल्द हो सके, मुकद्दमा दायर करने के लिये बेबिलफ़ को उभाड़कर, बड़ी खुशी के साथ, ईर्ष्या और प्रतिक्रिया की भावना में मस्त हो, फोमिच वहाँ से चल दिया।

उसी दिन शाम को सभी समाज-बहिष्कृत लोगों ने कस्तान फोमिच के आविष्कार को जान लिया। वे लोग उत्सुकता-पूर्वक 'पेटनिकफ' की भावी कार्यवाहियों की आलोचना करने लगे। साथ ही, इसका भी खयाल उन लोगों को होने लगा कि जिस दिन दावे की नक़ल पेटनिकफ़ के हाथ में पड़ेगी, उस दिन वह कैसा चकित और आग-बबूला हो उठेगा !

कस्तान फोमिच तो उस दिन के अभिनय का प्रधान पात्र ही था। वह आनन्द से गद्गद् हो रहा था। सभी लोग उसके चारों ओर प्रसन्न बैठे थे। आँगन में कुछ काले-कलूटे लोगों की जमायत भी नज़र आती थी। वे लोग इस महत्वपूर्ण घटना से उत्तेजित होकर बड़ी उत्सुकता और अशान्ति के साथ बातें कर रहे थे। उनमें से सभी लोग पेटनिकफ़ को पहचानते थे। कारण, वह उन लोगों के समीप ही से प्रायः आता-जाता।

पेटनिकफ़ उन लोगों की तरफ़ वैसी ही तुच्छ दृष्टि से ताकता, जैसे वह आँगन के कोने में पड़े हुए कूड़े के ढेर की ओर देखता था ! उस समय वह मानों आन्तरिक सन्तोष की प्रत्यक्ष मूर्ति बन रहा था। उसका बूट-जूता भी मानों उन लोगों की तरफ़ घृणा की दृष्टि से देख रहा था। इसी से वे लोग उससे चिढ़ गये।

उन लोगों का ध्यान विशेष रूप से बुराई की तरफ़ आकर्षित हो चुका था। पेटनिकफ़ का यह अनिष्ट ही उन लोगों के लिये आसानी से

हाथ में आने लायक एक शस्त्र था। पेटनिकफ और बेविलफ के बीच लड़ाई छिड़ जाने से वे लोग बड़े ही खुश थे। उन लोगों को इसमें बड़ा मज़ा मिलता था।

पूरे दो हफ्ते तक वे लोग इस मामले की नई कार्यवाही की प्रतीक्षा करते रहे। उन लोगों ने समझ लिया था कि पेटनिकफ कहीं शहर से बाहर गया हुआ था, इसी से उसपर सम्मन नहीं तामील हुआ।

फोमिच, अदालती कार्यवाहियों में नाहक देर होते देखकर, अपने मन में बहुत कुढ़ रहा था। उसके पार्श्वचरों के मन में पेटनिकफ को देखने की बड़ी लालसा बनी हुई थी। आखिर एक दिन, सुहावनी सन्ध्या के समय, पेटनिकफ आ पहुँचा। वह घोड़ा-गाड़ी पर आया। उसका लड़का ही गाड़ी हाँकता था। उस नौजवान लड़के के कोमल गाल गुलाब के फूल-जैसे लाल थे—वह एक लम्बा ओवरकोट पहने हुए था—आस-मानी रंग का चश्मा भी लगाये हुए था।

युवक कोचवान ने घोड़े को बाँधकर अपनी जेब से फ्रीता निकाला। वह ज़मीन नापने वाला फ्रीता था। फ्रीते को उसने एक ओर खुद पकड़ा और उसके दूसरे छोर को अपने बाप के हाथ में थमाया। दोनों चुपचाप, लेकिन चिन्ता-सूचक मुद्रा से, ज़मीन नापने लगे।

कप्तान फोमिच बड़ी दिलेरी के साथ 'आह !' कहता हुआ चिल्ला उठा। सराय में रहनेवाले लोग फाटक के बाहर खड़े होकर बड़े शान्त भाव से बाप-बेटे की कार्यवाहियाँ देखने लगे। साथ ही, ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला कर अपनी-अपनी सम्मति भी प्रकट करने लगे।

कप्तान फोमिच मिथ्या सहानुभूति दिखलाता हुआ बोला—देखो, चोरी की आदत कैसी बुरी होती है। मनुष्य कभी-कभी अनजान में भी दूसरे की चीज़ हड़प लेता है। किन्तु हड़पी हुई चीज़ से वह जितना

लाभ उठाता है, उससे कहीं बढ़कर उसे हानि उठानी पड़ती है।

आखिर पेटनिकफ इन बदमाशों की बातों से उत्तेजित हो चिल्ला उठा—ऐे बदमाशों ! इधर देखो, यदि तुम लोग बात नहीं मानोगे, तो मैं तुम लोगों को मजिस्टर के पास पकड़ कर ले चढ़ूँगा।

कप्तान फोमिच ने उसे याद दिलाते हुए कहा—बिना गवाहों के मामला चलाना बेकार होगा। लड़का कभी बाप की ओर से गवाही नहीं दे सकता।

पेटनिकफ—अच्छा, हमलोग भी देख लेंगे। तुम बड़े जवाँमर्द अगुआ कहलाते हो। तुम्हें भी किसी न-किसी रोज़ अपने जोड़ का आदमी मिल जायगा।

यह कहकर पेटनिकफ ने फोमिच की ओर धमकी-भरी अंगुली हिलाई। किन्तु उसका लड़का, जो चुपचाप और गम्भीर भाव से जमीन का हिसाब जोड़ने में व्यस्त था, इन गन्दे लोगों की ओर—जो उसके पिता को चिढ़ा रहे थे—ज़रा भी मुखातिब न हुआ; यहाँ तक कि उसने एक दफ़े इनकी ओर देखा तक नहीं।

लीविङ्ग, जो पेटनिकफ के लड़के की गति-विधि को बड़े ग़ौर से देख रहा था, बोला—यह नया मकड़ा बड़ा उस्ताद मादूम होता है !

पेटनिकफ चुपचाप अपनी टमटम पर चढ़कर खाना हो गया। उसका लड़का बड़ी गम्भीर गति से बेबिलफ की कलवरिया में घुसकर लापता हो गया।

फोमिच बोला—यह सेंध डालनेवाला बड़ा भारी चोर है भाई ! ख़ैर, हमलोग इसका नतीजा देख लेंगे। यह कर क्या लेगा !

लीविङ्ग कह उठा—क्यों ? पेटनिकफ का लड़का बेबिलफ को ठीक कर डालेगा।

नर-पशु

फोमिच ने गम्भीर स्वर से पूछा—शायद उसमें तुम्हें खुशी होगी !
लीविङ्ग आँखें मीचता और हाथ मलता हुआ बोला—जब मनुष्य
की सोची हुई बात बिगड़ जाती है, तब सचमुच मुझे बड़ी खुशी
होती है !

कप्तान फोमिच मारे गुस्से के चुप रह गया । सब लोग चुपचाप
शराब की दूकान के दरवाजे की ओर ताक रहे थे । इस निस्तब्ध प्रतीक्षा
में डेढ़ घंटे का समय बीत गया ।

अन्त में बेविलफ़ की दूकान का दरवाजा खुला । पेटनिकफ़ का
लड़का वैसे ही शान्ति-पूर्वक निकल आया, जैसे पैठा था । वह क्षण-भर
ठहरा, थोड़ा खाँसकर गला साफ किया, अपने कोट के कॉलर को ऊपर
उठाया; और जो लोग उसकी तरफ़ ग़ौर से देख रहे थे, उनकी ओर
ज़रा-सा झाँक कर शहर जानेवाली सड़क की ओर चल पड़ा ।

जब तक वह नज़र से बाहर न गया, कप्तान बड़े ग़ौर से उसकी
ओर देखता रहा । फिर लीविङ्ग की ओर घूम कर व्यंग्य-पूर्ण मुस्कुराहट
के साथ बोला—अरे वह बिच्छू और गोजर की औलाद है ! उसकी देह
से सारी बुराइयों की दुर्गन्ध निकल रही है । मालूम नहीं, बेविलफ़ उससे
कितना ऐंठ सका है । यह तो निश्चय है कि उसे कुछ मिला है । अरे
वे दोनों चोर-चोर भौसेरे भाई हैं । मुझे धिक्कार है कि मैं उन लोगों के
लिये चिन्तित हो रहा हूँ । मैं कैसा बेवकूफ़ हूँ ! भाइयों तुम लोग तो
देखते हो, थूकी हुई मक्खी मानों थूकनेवाले की आँखों में फिर लौटकर
पैठ गई !

सभी लोग निराश हो गये, क्योंकि सब लोग सन्देह में पड़ गये ।
बलफ़ और पेटनिकफ़ के लड़के में जो बर्ताव या वार्त्तालाप हुआ था,

वह उन लोगों के अनुमान के विरुद्ध था। इसी से वे लोग सन्दिग्ध-चित्त हो गये थे।

दूसरों की भलाई करने में असमर्थ होने की अपेक्षा किसी की बुराई करना बहुत ही आसान काम है।

कप्तान फोमिच, जो बड़ी देर से कलवरिया की तरफ क्रोध-पूर्ण दृष्टि से देख रहा था, बोल उठा—अरे हमलोगों को अब यहाँ पर ठहरने से क्या मतलब ? चलो चलें।

‘एण्ड’ रूखेपन से हँस पड़ा।

फोमिच ने पूछा—क्यों जेलखाने के दारोगाजी, आपको क्या हुआ है ?

मैं शैतान कहाँ जाऊँ ?

कप्तान, सराय की ओर घूमता हुआ, बोला—दोस्त, यह तो एक टेढ़ा सवाल है। लेकिन डरो मत। तुम्हारा भाग्य ही तुम्हारे लिये निर्णय कर देगा।

उसके साथी बड़ी धीमी चाल से उसके पीछे हो लिये।

कप्तान उन लोगों के साथ घूमता-फिरता हुआ बोला—हमलोग तब तक प्रतीक्षा करेंगे, जब तक नाजुक मौक़ा न आवे। जब पीने को शराब मिल रही है, तब दूसरा शरण का स्थान खोजने के लिये काफ़ी समय मिलेगा। इस बीच में इन क्षणों में पड़कर जीवन नष्ट करने की क्या जरूरत। खतरनाक मौक़ों ही पर मनुष्य अपनी उन्नति कर पाता है। यदि सारा जीवन भाग्य-निर्णायक समय की प्रतीक्षा में ही बीत जाय—यदि कोई हर घड़ी अपनी ज़िन्दगी के नाजुक मौक़े की खोज में ही लगा रह जाय, तो दुनिया चल ही न सके।

नर-पशु

लीविङ्ग—तो क्या इसके मानी यह है कि मनुष्य एक दूसरे का गला घोटने को तैयार रहे ?

फोमिच—अरे तो इससे क्या हुआ ?

इतना कहने के बाद कप्तान ने अपने भावों का विशद वर्णन करना नहीं चाहा ।

लीविङ्ग—कुछ नहीं, सब ठीक है । जब कभी कोई अपने अभीष्ट स्थान को शीघ्रता से पहुँचना चाहता है, तब वह या तो अपने घोड़े को ज़ोरों से हाँकता है या अपने यंत्रमय वाहन को खूब तेज़ी से चलाता है ।

फोमिच—हाँ, यही बात है । यदि यकायक सारी पृथ्वी पर भाग लग जाय और वह टुकड़े-टुकड़े उड़कर चूर-चूर हो जाय, तो मैं यह देखकर निहायत खुश होऊँगा । हाँ, लेकिन शर्त यह कि सिर्फ मैं ही उन तमाशों को देखने के लिये बचा रह जाऊँ !

लीविङ्ग—तुम बड़े अच्छे आदमी मालूम होते हो !

फोमिच—मैं सब बन्धनों से छुटकारा पा चुका हूँ । इसलिये मैं दुनिया की दौलत पर थूक सकता हूँ । मैं जिस प्रकार का जीवन बिता रहा हूँ, उस प्रकार के जीवन में मुझे विवश होकर भूत-काल का खयाल भूल जाना पड़ता है । जिन्हें बढ़िया भोजन और बढ़िया कपड़ा नसीब है और जो मुझे इसलिये घृणा की दृष्टि से देखते हैं कि मुझे उन लोगों की तरह भोजन-वस्त्र नसीब नहीं, उन्हें मैं एकदम भूल जाता हूँ ।

लीविङ्ग—तुम्हारी ज़बान बड़ी भोड़ी है !

फोमिच—भौदू कहीं के ! तुम क्या समझोगे ? कुछ जानते भी हो ? तुम तो यह भी नहीं जानते कि बातें किस तरह सोची जाती हैं । लेकिन

मैंने बहुत मनन किया है। मैंने ऐसी-ऐसी पुस्तकें पढ़ी हैं, जिनका एक शब्द भी तुम नहीं समझ सकते।

हाँ-हाँ, मैं जानता हूँ, मैं तुम्हारे ऐसे विद्वान के जूते का फ्रीता खोलने लायक भी नहीं हूँ। लेकिन, यद्यपि तुमने बहुत पढ़ा है, बहुत मनन किया है और मैंने कुछ भी नहीं किया, तथापि हम दोनों में विशेष भेद नहीं है !

फोमिच चिल्ला उठा—तुम जहन्नुम में जाओ।

लीविङ्ग के साथ जब-जब वह बातें करता, तब-तब इसी तरह कट्ट शब्दों में समाप्त करता था। जब स्कूल-मास्टर पास में नहीं रहता, कप्तान यही समझता कि उसके व्याख्यान निरर्थक जा रहे हैं। कारण, उनको सुनने और समझने वाला दूसरा कोई था ही नहीं। लेकिन फिर भी वह गपशप करने से बाज नहीं आता। अब, अपने साथ बात करने वाले को डाँट देने से, वह अकेला रह गया ! अभी गपशप करने की उसकी इच्छा पूर्ण नहीं हुई थी। इसलिये एक प्रश्न लेकर सिम्तजोफ की ओर घूमा। पूछा—और तुम अपना पुराना सिर कहाँ रक्खोगे ?

बूढ़ा आदमी मुस्कुराया। अपनी नाक को अपने हाथ से मलने लगा। जवाब दिया—नहीं जानता, कहाँ रक्खूँगा, धीरे-धीरे जगह तजबीज करूँगा। मेरी गिनती ही किसमें है ! मुझे सिर्फ एक गिलास शराब चाहिये, और कुछ भी नहीं।

कप्तान—यह एक बड़ी प्रशंसनीय अभिलाषा है और एक तरह से महज़ मामूली भी है।

सिम्तजोफ कुछ देर तक चुप रहने के बाद बोला—मुझे औरों की अपेक्षा बहुत शीघ्र ही शरण मिलेगी; क्योंकि स्त्रियाँ मुझे पसन्द करती हैं।

यह बात सच थी; क्योंकि वेश्याओं में से दो या तीन उस बूढ़े के

पास हर वक्त मौजूद रहा करती थीं। तारीफ यह कि वे ही पारी-पारी से अपनी थोड़ी कमाई में से उसे मजे में रोज़ खिलाया करती थीं ! किन्तु वे उसे मारती भी थीं। वह उनकी चपतबाज़ी को हँसी-मज़ाक में उड़ा देता था, कठोर-हृदय होकर सह लेता था। वे भी उसे विशेष मारती नहीं थी—हँसी-ठठोली में बहुत मार चुकने के बाद वे उसपर दया भी दिखाने लगती थीं !

वह बुढ़ा भी बड़ा रसिया था। उन शोख औरतों की बड़ी तारीफ किया करता था। लेकिन साथ-साथ यह भी कहा करता था कि उसके जीवन-भर की सारी विपत्तियाँ केवल इन निगोड़ी औरतों ही के कारण उत्पन्न हुई थीं। वह स्त्रियों के साथ बहुत घुला-मिला रहता था। उसकी पोशाक ऐसे बारीक कपड़े की और इतनी साफ-सुथरी रहती थी कि उसके साथियों में किसी की भी वैसी पोशाक नहीं थी। उस सराय के फाटक के पास जमीन पर अपने संगी-साथियों के साथ बैठा हुआ वह इस बात का गर्व प्रकट किया करता था कि 'रेउका' नाम की एक औरत बहुत दिनों तक उसके पीछे पड़ी रही, लेकिन वह उसके साथ रहने से इसलिये बराबर इन्कार करता गया कि उसे अपनी मित्र-मंडली को छोड़ना पसन्द नहीं था। लोग उसकी बातें बड़े चाव के साथ सुना करते थे, लेकिन लोगों को उसके प्रति ईर्ष्या भी हो जाया करती थी; क्योंकि वे लोग भी 'रेउका' को चाहते थे।

'रेउका' वहाँ पहाड़ी के-समीप ही में रहती थी। कुछ ही महीने पूर्व वह दूसरी बार चोरी के अभियोग में सज़ा पाकर जेल काट आई थी। वह पहले दाई का काम करती थी। क़द की लम्बी, मज़बूत और देहात की रहनेवाली थी। उसके मुख पर चेचक के काले-काले दाग़ भौंरों-जैसे दृष्टिगोचर होते थे। आँखें बड़ी सुन्दर और मद-भरी थीं।

लीविङ्ग, सिम्रजोफ की ओर गौर से देखता और उस स्त्री को कोसता हुआ, बोल उठा—शैतान है निगोड़ी !

सिम्रजोफ—क्या तुम लोग जानते हो कि वे लोग मुझे क्यों पसन्द करती हैं ? क्योंकि मैं उनकी आत्मा की आकांक्षाओं को अच्छी तरह समझता हूँ ।

फोमिच जिज्ञासु होकर चिल्ला उठा—सच बताओ, क्या चाहती हैं ? मैं जानता हूँ कि औरतें किस तरकीब से मुझपर दया करेंगी !

× × × ×

पेटनिकफ उस सराय से जल्दी निकाला जानेवाला था । उसे इसकी खबर नहीं थी । सब लोगों को निश्चय था कि उसके निकाले जाने के दिन बहुत करीब हैं । शायद दो-चार रोज में ही वह निकाला जाय, तो कुछ ताअज्जुब नहीं । इसीसे उसके बारे में बहस करना उन लोगों ने व्यर्थ समझा ।

अभी जाड़ा नहीं पड़ा था, यद्यपि बरसात शुरू हो गई थी । आदमी शहर से बाहर कहीं भी जमीन पर सो सकता था ।

हरी घास पर वृत्ताकार कतार बाँध कर बैठे हुए वे लोग, बिना किसी खास मतलब के इधर-उधर की बातें कर रहे थे । बातें करते वक्त एक विषय को छोड़ कर तुरंत दूसरे पर चले जाते थे । वे अपने साथियों की बातों पर उतना ही भर ध्यान देते थे, जितना न देने से बातचीत खतम हो जाने का डर बना रहता था ।

उस मंडली में चुप रह जाना परम आपत्तिजनक दोष समझा जाता था । लेकिन ध्यानपूर्वक सुनना भी वैसा ही आपत्ति-जनक दोष था !

हाँ, इन पशुओं की—जो पहले कभी मनुष्य थे—मंडली में एक बड़ा भारी गुण अवश्य था । कोई भी यह कोशिश नहीं करता था कि

नर-पशु

वह जिस दशा में है, उससे अच्छी दशा में अपने को दिखावे। साथ ही, वे लोग दूसरों को भी इस बात के लिये बाध्य करते थे कि वह भी ऐसी कोशिश न करे कि वह अपनी असली हालत छिपाकर अपने को अधिक सुन्दर दरसावे।

अगस्त महीने का सूर्य अपनी किरणों की गर्मी बिना पश्चपात के, उन लोगों की पीठ पर के फटे-पुराने कपड़ों पर, उन लोगों के बिना कंधी किये बालों पर, जानवरों और वनस्पतियों तथा खनिज पदार्थों पर, पहुँचा रहा था। आँगन के कोनों में घासें बड़े जोरों से बढ़ चली थीं। खासकर तित्त स्वाद के लम्बे पौधे, जो काँटों से ढके थे—और दूसरे बेकार पौधे, जिनकी वृद्धि से केवल इन्हीं बेकार लोगो की आँखों को आनन्द मिलता था—अधिक संख्या में उपजे थे।

बेबिलफ़ की शराब की दूकान पर उस समय निम्न-लिखित दृश्य दृष्टिगोचर होते थे—

पेटनिकफ़ का वही लड़का भीतर पैठा। धीरे से चारों ओर देखा। घृणासूचक मुँह बनाया। आहिस्ते से भूरे रंग का टोप उतार कर दूकान के मालिक से, जिसने उसे मुस्कराहट के साथ सादर सलाम किया था, पूछा—क्या आप ही का नाम 'बेबिलफ़' है ?

जी हाँ, मैं ही हूँ।

यह जवाब देकर वह बूढ़ा सिपाही दोनों हाथों से ओसारे के खम्भे को पकड़ कर खड़ा हुआ मानों एक ही छल्लाँग में वहाँ से कूद जाने को तैयार था !

पेटनिकफ़ का लड़का बोला—मुझे आपसे कुछ काम है।

बड़ी खुशी की बात है। क्या आप पिछवाड़े के कमरे में नहीं चल सकते !

नर-पशु

वे लोग मकान के पिछवाड़े वाले कमरे में गये । एक गोल मेज़ के पास बैठे । पेटनिकफ का लड़का कपड़े से ढके हुए एक बड़े मोड़े पर बैठा और बेबिलफ उसके सामने की कुर्सी पर ।

उस कमरे के एक कोने में एक शमादान जल रहा था । वहाँ कोई देव-प्रतिमा थी । उसकी दीवारों पर तस्वीरें लटक रही थीं, जिनके फ्रेम खूब चमक रहे थे । कमरे के अन्दर एक तरफ़ टूटी-फूटी और पुरानी कुर्सियाँ, मेज़ें और सन्दूकें ढेर-की-ढेर पड़ी थीं । उनमें से तारपीन के तेल, तम्बाकू और खट्टी गोबी की बददू निकल रही थी !

पेटनिकफ के लड़के ने चारों तरफ़ एक नज़र दौड़ाई । फिर मुँह बनाने लगा ।

बेबिलफ आहें भरता हुआ उसके विकृत मुखड़े की ओर देखने लगा ।

दोनों बड़े शौर से एक दूसरे की परीक्षा करने लगे और एक दूसरे पर अपने मनोभाव का प्रभाव डालने में समर्थ हुए ।

पेटनिकफ का लड़का कहने लगा—आप सचमुच मुझे जानते हैं ? तब तो मेरे उद्देश्य का अनुमान कर सकते हैं !

बूढ़े सैनिक ने बड़ी नम्रता से उत्तर दिया—जहाँ तक मेरा अनुमान है, सम्मन के बारे में—

पेटनिकफ का लड़का उत्साहित होकर कहने लगा—ठीक है । वही बात है । मैं यह देखकर बहुत खुश हूँ कि आप बहुत सीधे मिजाज के आदमी हैं और साफ़ दिलवाले आदमियों-जैसा आचरण करते हैं ।

बेबिलफ बड़े नम्र भाव से बोला—आप जानते हैं कि मैं सैनिक हूँ ।

पेटनिकफ—हाँ, यह मैं जानता हूँ । चलेँ हमलोग इस काम को, जहाँ तक जल्दी हो सके, साफ़ दिल से करके, ख़तम ही कर डालें ।

बेबिलफ़—मैं सब तरह से तैयार हूँ ।

पेटनिकफ़—आपका दावा बहुत ठीक है । साथ ही, न्याय भी आपके पक्ष में है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं । मैं आपके हक़ में अच्छा समझता हूँ कि सच्ची बात आपसे तुरत कह डालूँ ।

अपनी आँखों की मुस्कुराहट छिपाने की कोशिश करता हुआ सैनिक बोला—मैं अपना अत्यन्त अनुग्रहीत हूँ ।

पेटनिकफ़—लेकिन मैं जानना चाहता हूँ कि आपने हमारे-जैसे भावी पड़ोसी के साथ परिचय प्राप्त करने का सबसे बढ़िया तरीका क्यों ढूँढ निकाला—ऐसी अवधिकर मुकद्दमेवाज़ी यकायक क्यों शुरू कर दी ?

बेबिलफ़ अपने कन्धों को सिकोड़ता हुआ चुप रहा ।

पेटनिकफ़—यह आपके हक़ में बहुत अच्छा होता कि आप हम लोगों के पास आते और हमलोग आपस में बातें तय कर डालते । क्या आप ऐसा ठीक नहीं समझते ?

बेबिलफ़—हाँ, यह तो सचमुच बहुत आनन्दप्रद होता । लेकिन आप क्या देखते नहीं कि इसमें एक अड़चन भी है ? मैंने अपनी ही इच्छा से कुल काम नहीं किये हैं । मुझे दूसरों ने बहका दिया है । पीछे मैंने भी समझा कि सबसे बढ़िया तरीका कौन-सा था । लेकिन तब तक बहुत देर हो गई थी और बातें बहुत आगे बढ़ चुकी थीं ।

पेटनिकफ़—यह ठीक है, मैं समझता हूँ कि किसी वकील ने आपको ऐसी सलाह देकर अदालती लड़ाई के लिये उतारू किया है ।

बेबिलफ़—हाँ, वकील नहीं, मगर वकील ही की तरह का आदमी ।

हाँ-हाँ, मैं समझ गया । लेकिन अब तो आप कचहरी से बाहर तसफ़िया करने को राज़ी हैं न ?

सैनिक बेबिलफ चिल्ला उठा—यह मेरी पूरी ख्वाहिश है ।

पेटनिकफ का लड़का कुछ देर तक चुप रहा । इसके बाद उसने कप्तान फोमिच की ओर झाँका । फिर रुखे शब्दों में बोला—क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप अब सुन्हा की इच्छा क्यों करते हैं ?

बेबिलफ इस सवाल का तुरत जवाब देने को तैयार न था; क्योंकि उसने इसका अनुमान भी नहीं किया था कि ऐसा प्रश्न उससे पूछा जायगा । उसके विचार से यह एक निरर्थक प्रश्न था । वह कन्धे हिलाता और पेटनिकफ की ओर देखकर नाक सिकोड़ता हुआ मुस्कुराया ।

पेटनिकफ का लड़का बोल उठा—आपके लिये हमलोगों के साथ शान्तिपूर्वक रहना ही ठीक है । मैं आपको यह बात खूब समझा दूँगा ।

सैनिक कुछ आश्चर्यान्वित हुआ ।

पेटनिकफ कहता ही रहा—आपके लिये यह आवश्यक है कि हम लोगों के साथ आप शान्ति-पूर्वक रहें, क्योंकि हम लोगों-जैसे पड़ोसियों के साथ हिल-मिलकर रहने से आपको बहुत लाभ होगा । सबसे बढ़कर लाभ तो आपको यह होगा कि हमारे नये गुदाम में काम करनेवाले सैकड़ों कुली-मजदूर आपके यहाँ रोज शराब पीयेंगे । यदि हर हफ्ते में, तनखाह बँटने के रोज, एक सौ मजदूर भी एक-एक गिलास शराब पीयेंगे, तो इसका मतलब यह है कि एक महीने में आप चार सौ गिलास बेशी शराब बेच सकेंगे । यह तो कम-से-कम औसत का हिसाब है । अभी तो आगे चलकर मजदूरों की संख्या और भी बढ़ाई जायगी । इसके अलावा उन लोगों के भोजन करने से भी आपको काफ़ी लाभ होगा । इतना लाभ समझने के लिये आप मूर्ख नहीं हैं । आपको इस व्यवसाय का अनुभव भी है । क्या अब भी आप इन सुविधाओं की ओर ध्यान न देंगे ? हमलोगों के पड़ोसी होने से आपको और भी कितने ही प्रकार के लाभ होंगे ।

नर-पशु

बेबिलफ अपना सिर हिलाते हुए कहने लगा—सच है। मैं इस बात को जानता था।

पेटनिकफ—तब फिर क्या। हमलोग आपस की शर्तें ठीक कर लें। मैं यह देखकर बहुत ही प्रसन्न हूँ कि आप अपना विचार बड़ी फुर्ती से निश्चित कर लेते हैं। मेरे पास यह एक शर्तनामा लिखा-लिखाया तैयार है। इसमें साफ़ लिखा है कि आप मेरे पिताजी के विरुद्ध की गई कुल अदालती कार्रवाइयाँ बन्द करने को राजी हैं। इसको पढ़कर इस पर हस्ताक्षर कर दीजिये।

बेबिलफ ने उस चालाक नौजवान छोकरे के मुँह की ओर बड़े गौर से देखा। उसे ज्ञात हुआ, यह कुछ अरुचिकर बात अवश्य कहेगा। वह बोला—जरा ठहरिये, किसपर दस्तखत करूँ? आपका मतलब क्या है?

पेटनिकफ का लड़का बहुत नम्रता-पूर्वक, अपनी अँगुली से सही करने की जगह को दिखाता हुआ, बोला—सिर्फ अपना नाम यहाँ पर लिख दीजिये।

यह तो मेरा मतलब नहीं है। मेरा तो कहना यह है कि उस ज़मीन के लिये आप क्या हर्जाना देंगे?

पेटनिकफ का लड़का उसको शान्त करता हुआ बोला—यह ज़मीन आपके किसी मसरफ़ के लायक नहीं है।

सैनिक बेबिलफ चिल्ला उठा—तो भी यह मेरी है।

ज़रूर आपकी है। इसमें ज़रा भी शक नहीं। खैर, आप माँगते क्या हैं?

बेबिलफ ज़रा हिचकिचाहट के साथ बोला—अच्छा, सम्मन पर जितना रुपया दर्ज है, मैं बता देता हूँ।

पेटनिकफ का लड़का मानों बड़ा खुश होकर हँस पड़ा। बोला—
छः सौ रुपये ! वाह ! यह तो खूब दिसगरी रही !

मुझे इतना माँगने का अधिकार है। मैं दो हजार का भी दावा कर सकता हूँ। मैं इस बात पर भी ज़िद्द कर सकता हूँ कि आपकी दीवार गिरा दी जाय, और यही मैं चाहता भी हूँ ! यही वजह है कि कम रुपये का दावा किया गया। मैं यह चाहता हूँ कि आप उसे गिरा डालें।

तब मामला चलने ही दीजिये ! यदि हमें दीवार गिरानी ही पड़ेगी, तो शायद दो या तीन वर्षों के बाद। तब तक तो आपको मुकद्दमे में, बहुत खर्च पड़ जायगा। इसके बाद हमलोग भी खुद अपना शराब-खाना खोलेंगे, जो आपकी दूकान से कहीं बड़ाचढ़ा होगा। आप दीवार को लेकर बैठे रहियेगा। मित्रवर ! आप बरबाद हो जायेंगे, इसकी भी कुछ खबर है ! हमलोग इस समय भी शराबखाना खोल सकते थे, लेकिन हमलोगों के हाथ में इतने काम हैं कि फ़ुरसत ही नहीं मिलती। साथ ही, हमलोगों को आप पर दया भी आ जाती है। दूसरे के मुँह का आहार बिना कारण कोई क्यों छीने !

बेबिलफ अपने ही ऊपर तरस खाने लगा; क्योंकि निर्दय लोभी बनिये के साथ काम आ पड़ा था।

पेटनिकफ का लड़का फिर बोला—ऐ मेरे दोस्त, हम लोगों के निकट पड़ोस में रहकर और हम लोगों के साथ मित्रता का भाव-वर्ताव रखकर आप कुछ पैसे कमा ले सकते थे। हमलोग आपकी मदद भी करते। मैं अभी आपको सलाह देता हूँ कि आप तुरत एक छोटी-सी दूकान खोल डालिये। उसमें तम्बाकू, दियासलाई, रोटी, ककड़ी आदि छोटी-छोटी चीजें रक्खा कीजिये। आपको बहुत से ग्राहक मिलेंगे।

बेबिलफ ने ध्यानपूर्वक सुन लिया। वह बेवकूफ नहीं था। उसने समझ लिया कि पेटनिकफ की उदारता और महानुभावता पर ही इस विषय को छोड़ देना उचित और सर्वोत्तम होगा। वस्तुतः उसके लिये वही एक मार्ग था। लेकिन वह अपने क्रोध और अपमान को हृदय के भीतर और अधिक देर तक छिपाने में असमर्थ होकर फोमिच के प्रति अपशब्दों का व्यवहार करने लगा। चिल्ला उठा—अरे पियकड़ ! सुअर का बच्चा कहीं का ! शैतान ! इसे जहन्नुम में ले जाय !

पेटनिकफ के लड़के ने चुपके से पूछा—ये अपशब्द उसी वकील के लिये लागू हो सकते हैं, जिसने तुम्हारी रिपोर्ट लिखी थी।

वह आह भरता हुआ फिर बोला—सचमुच, वह तो बहुत बुरी तरह तुमसे बदला लेता—यदि हम लोग तुम्हारे ऊपर दया नहीं करते।

विपत्ति का मारा सैनिक निराशा से अपना हाथ पटक कर बोला—आह ! उनमें दो ही थे। एक ने कारबार करना शुरू किया और दूसरे ने लिखना। वह अभागा लेखक हुआ।

कैसा लेखक ! क्या अखबार का लेखक !

हाँ, वह तो अखबारों में लेख लिखा करता है। वे दोनों तुम्हारे किरायेदार हैं। वे बड़े हज़रत हैं। उनसे अपना पिण्ड छुड़ा लो। उन्हें यहाँ से हटा डालो। वे डाकू हैं। सड़क पर एक को दूसरे के विरुद्ध उभाड़ कर वे लड़ाया करते हैं। उनको यहाँ रहने देने से सुख-शान्ति कहाँ ! उन्हें न्याय या कानून का ज़रा भी डर नहीं। सभी को उनसे चोरी या लुट जाने का भय बना रहता है।

पेटनिकफ ने बड़े भाव के साथ पूछा—यह अखबारों में लेख लिखने वाला कौन है ?

अरे वह ! वह एक शराबी है। वह पहले किसी स्कूल का मास्टर

था। वहाँ से निकाला गया। उसके पास जो कुछ जायदाद बची थी, सब उसने नशाखोरी में बरबाद कर डाली। अब वह अखबारों में लेख लिखा करता है। साथ ही नये-नये ढंग की दरखास्तें और रिपोर्टें भी तैयार करता है। सचमुच वह एक बड़ा बुरा आदमी है।

हाँ, ठीक है। मालूम होता है, तुम्हारी दरखास्त भी उसी ने लिखी थी।

ठीक है। सब तरह से यही साबित होता है कि उसी ने सीढ़ियों के बनने के बारे में लिखा है। उसीने सबको सुझाया कि सीढ़ियाँ कानून के मुताबिक नहीं बनाई गई हैं।

हाँ ! उस कुत्ते के लायक वह काम ठीक है। उसने यहीं पर शिक्षा पाई और यहीं वह बड़ा दिमाग़ दिखा रहा था कि वह पेटनिकफ को खर्च में डालेगा।

खैर, अब यह बताओ कि निर्णय कैसे होगा ! किन शर्तों पर ?

शर्त की बात !—यह कहकर सैनिक सिर हिलाने लगा। बहुत ग़ौर से सोच-विचार कर अपना सिर खुजलाता हुआ बोळ उठा—हाय ! हमलोगों की भी क्या ही शोचनीय स्थिति है !

पेटनिकफ एक सिगरेट जलाता हुआ बोला—तुम उसे सुधारने की कोशिश करो।

सुधारने की ! महाशय, यह कह देना तो बहुत ही आसान है, लेकिन कर दिखाना कठिन है। हमलोगों को स्वतंत्रता नहीं है, यही इस कठिनता का कारण है। ज़रा मेरे जीवन को देखिये। मैं बराबर आतङ्क में सतर्क रहता हूँ। मुझे ज़रा भी कार्य करने की स्वतंत्रता नहीं है। और इसका कारण क्या है ? डर ! वह निगोड़ा स्कूल-मास्टर मेरे बारे में अखबारों में लिख मारेगा। वह सफ़ाई-महाल के अप्रसरो को

मेरे विरुद्ध उभाड़ डालता है और मुझे जुर्माना देना पड़ता है। आपके इन किरायेदारों से वे लोग बराबर होशियार रहा करते हैं, ताकि ये लोग किसी का घर न जला डालें—किसी को लूट-पाट कर मार न डालें। मैं इन्हें कैसे रोक सकता हूँ? ये पुलिस से भी नहीं डरते। यदि इन लोगों को जेल की सज़ा होती है, तो भी ये खुश ही होते हैं, क्योंकि वहाँ इन्हें मुफ्त खाना मिलता है।

पेटनिकफ ने प्रतिज्ञा की और कहा—यदि आपके साथ हमलोगों का निपटारा हो जाय, तो उन लोगों से हमलोगों को कोई भय नहीं है।

बेबिलफ चिन्ता और उदासी से पूछ बैठा—निपटारे की शर्त क्या रहेगी?

आप ही अपनी शर्त कहिये।

अच्छा तो सम्मन के फारम पर जो छः सौ रुपये लिखे हैं, उतना ही सही।

पेटनिकफ ने नरमी से कहा—क्या सौ रुपये से काम नहीं चल सकता?

बेबिलफ की ओर गौर से देखकर और ज़रा मुस्कराकर फिर बोला—मैं तो इससे एक रुपया भी बेसी नहीं दे सकता।

यह कहकर उसने अपने चश्मे को उतारकर धीरे-धीरे अपने रुमाल से उसके शीशों को पोंछने लगा।

बेबिलफ मन में दुःखी होकर उसकी ओर देखने लगा—उसके प्रति विशेष सम्मान का भाव अनुभव करने लगा।

उस नवयुवक पेटनिकफ के गम्भीर मुखमंडल पर, उसकी बड़ी-बड़ी भूरे रंग की आँखों पर, उसके फूले गुला-जैसे गालों पर और उसके सम्पूर्ण दृष्टपुष्ट शरीर पर एक प्रकार के आन्तरिक सन्तोष और स्वावलम्बन का भाव झलक रहा था।

नर-पशु

बेबिलफ ने उस तरीके को पसन्द किया, जो पेटनिकफ ने उसे बताया; क्योंकि पेटनिकफ के स्वर में मित्रता के भाव का सम्मिश्रण था—उसमें कृत्रिमता का लेश भी न था, जैसे वह अपनी बराबरी के लोगों से बातें कर रहा हो।

पेटनिकफ की ओर प्रशंसात्मक दृष्टि से देखते हुए, उत्सुकता और कौतूहल के साथ बेबिलफ ने पूछा—आपने शिक्षा कहाँ पाई ?

पेटनिकफ मुस्कुराते हुए बोला—कला-विद्यालय में। लेकिन आप प्रश्न पूछते किस मतलब से हैं ?

अरे ! योही पूछ डाला। माफ़ कीजिये।

सैनिक ने अपना सिर नीचा किया और अचानक बड़ी उत्तेजना एवं ईर्ष्या से पूर्ण प्रशंसायुक्त शब्दों में कहा—हाँ, शिक्षा यही कर सकती है। सचमुच विद्या ही सब कुछ है। हमलोग विद्या-हीन होने के कारण उल्टू-पक्षी की भाँति अन्धकार ही में आनन्द मना रहे हैं। हम लोगों का दुर्भाग्य है ! खैर ! हमलोग इस मामले को तय कर डालें।

विचार—गम्भीर मुद्रा से पेटनिकफ की ओर हाथ फैला कर, लड़-खड़ाती ज़बान में, बोला—खैर, पाँच ही सौ रुपये सही।

सौ रुपये से अधिक नहीं—यह कहकर पेटनिकफ ने अपने कन्धे हिलाये, मानों बेशी देने में असमर्थ हो !

लाख हिलाने-डुलाने की चेष्टा करने पर भी पेटनिकफ अपनी शर्तों पर दृढ़ ही रहा। सौ रुपये से एक कौड़ी भी बेशी नहीं बढ़ा। आखिर बेबिलफ को उतना ही स्वीकार करना पड़ा। उसने कागज़ पर अपना नाम लिख दिया, सौ रुपये ले लिये और कलम को मेज़ पर लुढ़काता हुआ बोला—खैर, यह मामला तो खतम हुआ। अब मुझे उन लुन्हे-लुबारों की मंडली से निपटना पड़ेगा। वे शैतान मेरी खोपड़ी खा डालेंगे।

पेटनिकफ सिगरेट के घुएँ को मुँह से निकालते और उसे वृत्ताकार ऊपर उठकर वायुमंडल में अदृश्य होते हुए देखकर कहने लगा—तो क्या हानि है ? आप उन्हें बता दीजियेगा कि सम्मन में जितनी रकम दर्ज थी, कुल आप पा चुके ।

अरे वे लोग मेरी बातों पर कभी विश्वास नहीं करेंगे । वे बड़े चालाक और चंट हैं—ऐसे छँटे हुए हैं कि—

बेबिलफ इतना ही कहकर रुक गया । वह धैर्यहीन होकर पेटनिकफ की ओर ताकने लगा । लेकिन वह तो सिगरेट पीने में एकदम व्यस्त था । वह धुआँधार पीता ही गया । थोड़ी देर के बाद वह जाने को तैयार हुआ । जाते वक्त जब वह उसे सलाम करने लगा, तब इस बात की दिलजमई देता गया कि बहुत जल्द ही वह इन गुंडे-बदमाशों के घोसले—अड्डे—को उजाड़ डालेगा ।

बेबिलफ बड़े गौर से, आँहें भरता हुआ, कुछ द्वेषपूर्ण बातें मुँह से निकालने की प्रबल इच्छा करता हुआ, उसकी ओर देखने लगा । लेकिन वह सड़क पर पड़े हुए पहियों के गहरे गड्ढों और कतवारों को लाँघता हुआ तेजी से आगे बढ़ा चला जा रहा था ।

×

×

×

×

उस दिन, सन्ध्या समय, कप्तान फोमिच उस शराबखाने में आया । उसकी भौंहें ऊपर चढ़ी हुई थीं । बेबिलफ बड़े गौर से उसकी ओर ताकने लगा ।

कप्तान ने पूछा—उस मामले में क्या हुआ ?

आँखें नीचे की ओर झुकाकर बेबिलफ बोला—सब बातें तय हो गईं ।

फोमिच—मुझे भी इस बात में ज़रा भी शक नहीं है । लेकिन यह तो बताओ कि तुम्हें रुपये कितने मिले ?

कुल चार सौ !

सरासर झूठ ! इस बात की असत्यता मृत्यु की तरह निश्चित है । खैर, तो भी हम लोगों के लिये अच्छा ही है । अब और कुछ बातें न बना कर सबसे पहले मेरा मिहनताना, दस रुपये सैकड़े के हिसाब से, दे डालो । स्कूल-मास्टर को २५ रुपये सम्मन-रिपोर्ट वगैरह लिखने के लिये देना चाहिये । इस मंडली के लिये एक गैलन—३ सेर १० छटाँक—शराब चाहिये । अभी लाओ, रुपये मुझे दे दो । शराब-कवाब भी आठ बजे तक तैयार हो जाना चाहिये ।

बेबिलफ एक-टक फोमिच की ओर देखने लगा । फिर रुखी आवाज़ से बोल उठा—यह तो सरासर डकैती है । मैं कुछ नहीं देता । क्या तुम्हारा होश-हवास दुरुस्त है ? भाई, तुम्हें दावत खाने की भूख तब तक दबा रखनी पड़ेगी, जब तक दूसरा त्योहार न आ जाय । अब मेरी परिस्थिति बदल गई है । अब मैं ऐसी दशा में परिणत हो गया हूँ कि तुम लोगों से डरने का कोई कारण नहीं रहा ।

फोमिच गुस्सा-भरी आँखों से बेबिलफ को देखकर बोल उठा—मैं तुम्हें दस मिनट का समय देता हूँ । ज़रा ज़बान हिलाना बन्द कर मेरी बात का जवाब दो । क्या तुम्हें याद है कि अखबारों में 'बैसोफ' के मकान पर डाका पड़ने की खबर निकली थी ? अरे मुझे यह भी मालूम है कि 'एण्ड' तुम्हारे हाथों चोरी की चीज़ें बेचता आया है । याद रहे, उन्हें छिपाने का समय तुम्हें नहीं मिलेगा । आज ही रात को हज़रत ! समझते हो न ?

बूढ़ा सैनिक करुण शब्दों में बोला—क्यों फोमिच, तुम मेरे ऊपर इतना निर्दय और कठोर क्यों हो रहे हो ?

बेशी काँव-काँव मत करो । बोलो—'हाँ' या 'नहीं' ?

बेबिलफ ने अनुभव किया कि कस्तान फोमिच यदि चाहे, तो अनायास ही उसे बरबाद कर डाले। पहले तो बेबिलफ बल-प्रयोग करने पर उतारू हुआ, लेकिन फिर उसने अपना गुस्सा रोक लिया। बड़े ज़ोरों से आहें भरने लगा। फिर धीरे-धीरे नम्र भाव से बोला—फोमिच, मैंने तुमसे झूठ कहा है। मैंने अपने-आपको बड़ा काहियाँ समझा था। लेकिन कुल सिर्फ एक सौ रुपये मिले हैं !

फोमिच—तो इससे क्या ?

चार सौ रुपये की बात थी, जैसा मैंने पहले बताया था।

जो हो, मैं क्योंकि जान सकता हूँ कि तुमने उस दफे झूठ कहा या अबकी बार। मेरा मतलब तो सिर्फ तुमसे पैसठ रुपये लेने का है !

हे ईश्वर ! अरे मैंने तो तुम्हारा पावना दे दिया है। मैं इतना और तुम्हें दे तो दूँगा, परन्तु ईश्वर तुम्हें इसके लिये दंड देंगे।

कस्तान फोमिच गरज कर बोला—मुझे भगवान ने काफ़ी सज़ा दे डाली है। उसने मुझे एक ऐसी अवस्था में डाल रक्खा है कि मुझे मजबूर होकर तुम्हारे साथ भेंट-मुलाकात और बातचीत करनी पड़ती है। मैं तुम्हें यहीं पर मक्खी की तरह मसल डालूँगा।

यह कहकर उसने बेबिलफ की नाक ताककर धूँसा चलाया और दाँत पीसने लगा।

आँसू की दो बड़ी-बड़ी बूँदें बेबिलफ के गालों पर छड़क पड़ीं और उसकी दाढ़ी के बालों के अन्दर पैठकर अदृश्य हो गईं। जब फिर दो बूँदें निकलीं, तब बेबिलफ पिछवाड़े के कमरे में चला गया। अपने इष्टदेव के सामने घुटने टेककर बैठा। फिर कुछ देर तक स्तब्ध भाव से खड़ा रहा।

डेकन टरास को खुली हवा में घूमने-फिरने का बेहद शौक था।

उसने उन लोगों से—नरपशुओं से—यह प्रस्ताव किया कि अब कहीं बाहर मैदान में चलकर प्राकृतिक सौन्दर्य से पूर्ण किसी एक कन्दरा में, या खुले और चमकीले आकाश के नीचे, बैठकर बेबिलफ की दूकान की मदिरा का पान करना चाहिये। लेकिन कप्तान और दूसरों ने एकमत होकर उसके प्रस्ताव को रद्द कर डाला। सबने निर्णय किया कि अपने ही आँगन में मदिरा-पानोत्सव मनाया जाय।

फोमिच गिनने लगा—एक, दो, तीन..... हम लोग कुल मिलाकर तेरह हुए। स्कूल-मास्टर ला-पता है। किन्तु कुछ और लोगों का आ जाना भी सम्भव है। इसलिये बीस का अन्दाज हमलोग रक्खें। हर-एक के लिये ढाई-ढाई ककड़ियाँ, आध-आध सेर के लगभग रोटी और मांस, और एक-एक बोतल शराब काफ़ी है। कुछ खट्टी गोबियाँ, कुछ सेब और तीन तरबूजे भी। अब इससे बढ़कर क्या कोई शैतान चाहेगा? यह बुरी दावत नहीं हुई। क्यों भाइयो, तुम लोगों की क्या राय है? अब हमलोग बेबिलफ को निगल जाने की तैयारियाँ करें। खाने के लिये उसका मांस और पीने को उसका लहू! क्यों यारो, ठीक है?

उन लोगों ने अपने फटे कपड़ों को ज़मीन पर बिछा दिया—उन्हीं पर खाने-पीने की चीज़ें रक्खी गईं। सब लोग वृत्ताकार कतार बाँधकर बैठ गये। वे लोग अबतक बड़ी कठिनाई से शराब की प्यास को रोकें हुए थे; सबकी आँखों से यही शलकता था।

शाम हो रही थी। सन्ध्या की छाया आँगन पर पड़ रही थी। सूरज की आखिरी किरणें अधटूटे मकान की छत पर चमक रही थीं। सन्ध्या बड़ी ठंडी और शान्त थी।

कप्तान ने हुक्म दिया—भाइयो, अब हमलोग मद्यपान की ओर ध्यान दें। हमलोगों के पास कितने प्याले हैं? अरे सिर्फ छः! और हम-

लोग तेरह ! अच्छा, कुछ परवा नहीं, अब शराब ढालो । तैयार हो जाओ । सावधान ! हाँ, शुरू करो ।

वे लोग गटागट कुल पी गये ! तब लगे खाने ।

खाते-खाते फोमिच पूछ बैठा—स्कूल-मास्टर क्या हुआ ? क्या वह सचमुच यहाँ नहीं है ? क्या किसी ने उसे देखा है ?

नहीं जी, किसी ने नहीं देखा ।

अच्छा जाने दो, चलो, दूसरी बार पीओ ।

अबकी बार हमलोग कप्तान फोमिच का स्वास्थ्य-पान करें । हम लोगों का एकमात्र मित्र यही है । इसने जन्मभर हम लोगों को कभी न छोड़ा ।

लीविंग मुँह का कौर निगल कर चिल्ला उठा—हाँ, यह तो खूब कही ?

कप्तान फोमिच अपने बड़प्पन के खयाल में फूलता हुआ अपने पुराने इष्ट-मित्रों की ओर देखने लगा । चूँकि वह खा रहा था, इसलिये कुछ बोला नहीं !

दो-दो गिलास अच्छा-भर पी चुकने के बाद मद्यप-मंडली प्रसन्न हो उठी । 'टरास' कहानी सुनने की अच्छा प्रकट करने लगा । उधर कोई मोटी-ताज़ी औरतों की अपेक्षा दुबली-पतली औरतों की श्रेष्ठता सिद्ध करता हुआ बहस कर रहा था । 'पुच्छल तारा' ने इतना डटकर खा-पी लिया था कि उससे बैठा नहीं जाता था; इसलिये वह पड़े-पड़े बातें कर रहा था । कोई बड़े गौर से चुपचाप शराब की बोतल की ओर ताक रहा था । कोई अपनी जीभ से अपनी मूछों को पकड़ कर अपने दातों से उन्हें कुतर डालने की कोशिश कर रहा था ।

लीविङ्ग ने टायपा को छेड़ा—अरे पुराना राक्षस ! मैं जानता हूँ कि तू अपने रुपये कहाँ छिपाता है ।

टायपा कर्कश शब्दों में बोल उठा—तुम्हारे लिये यही काम सबसे अच्छा है !

लीविङ्ग—मैं किसी-न-किसी रोज़ तेरे रुपये ले लेने का इन्तज़ाम करूँगा ।

टायपा—यदि कर सको, तो कर डालो ।

फोमिच इन लोगों से बातें करने में प्रायः विरक्त हो जाता था । इनमें से कोई एक भी उसकी वाचालता को सुनने या समझने लायक नहीं था । वह अपने विचारों को जोर से प्रकट करता हुआ बोला—कहाँ है वह शैतान स्कूल-मास्टर ? निश्चय ही वह पैदल लौट रहा होगा । गाड़ी से नहीं आवेगा । भारी कंजूस है । अच्छा, सुनो यारो, यदि तुम लोग किसी रुपयेवाले आदमी की हत्या करो, तो उसमें मेरा भी हिस्सा ज़रूर बाँट देना । उन रुपयों से मैं अमेरिका की सैर करने जाऊँगा । वहाँ जाकर मैं इतनी उन्नति करूँगा कि संयुक्त-राज्य का राष्ट्रपति बन बैठूँगा । तब मैं योरप के राष्ट्रों के विरुद्ध लड़ाई की घोषणा करूँगा ! फिर तो उन्हें भलीभाँति छुकाकर उनके दाँत खट्टे कर डालूँगा । मैं योरप में ही रुपये के बल पर बेतनार्थी सेना इकट्ठी कर लूँगा । मैं फ़्रेञ्च, जर्मन, तुर्क, सभी को निमन्त्रित करूँगा । उन्हें अपने ही रिश्तेदारों को मारने में प्रवृत्त करूँगा । अजी रुपयों के जोर पर आदमी चाहे तो सारे योरप को चौपट कर मिट्टी में मिला सकता है ।

डेकन टरास भी अपनी गाथा गाने लगा—मोटी-ताज़ी औरत से दुबली-पतली कहीं अच्छी; क्योंकि उसमें खर्च की क़िफ़ायत होती है ! मेरी पहली बीवी अपनी पोशाक के लिये बारह गज कपड़े ख़रीदती थी और दूसरी सिर्फ़ दस ही गज में काम चला लेती है । हाँ, खाने-पीने में तो दोनों का खर्च एक-सा पड़ता है ।

‘अद्धा टरास’ चुपके से मुस्कराकर डेकन टरास की तरफ मुँह फेर-कर कहने लगा—किसी समय एक जोरू मुझे भी थी। वह बड़ी दुबली-पतली थी; लेकिन बहुत खाती थी। ज्यादा खाने ही से उसकी मौत भी हो गई !

लीविग पूर्ण विश्वास के साथ कह उठा—अरे काना ! तू ने ही तो उसे विष खिला कर मार डाला ।

अद्धा टरास—नहीं जी, विश्वास करो। उसने खटाई पड़ी हुई बहुत-सी मछलियाँ खा डाली थीं ।

लीविङ्ग—तुम्हीं ने यह किया। तुम्हीं ने उसे ज़हर दिया ।

टरास ने अपने दोस्त के प्रति यह कहते हुए लाठी उठाई—वह उसे विष खिला ही नहीं सकता था। उसे भला यह करने की क्या जरूरत थी ?

और मैं कहता हूँ कि उसने जरूर ज़हर दिया ।

कप्तान ने भय-प्रदर्शन-पूर्वक कड़े शब्दों में कहा—चुप रहो ।

क्रोध-भरी आँखों से उसने मण्डली की ओर ताका। मद्यपान के कारण उन लोगों के अर्द्ध-विकृत चेहरे पर ऐसी कोई भी चीज़ नहीं मिली, जिससे उसे आग बबूला होने का बहाना मिलता। तब उसने गर्दन झुका ली। कुछ देर तक चुप बैठा रहा। फिर ज़मीन पर हाथ-पाँव फैला कर लेट गया ।

‘पुच्छल तारा’ ककड़ी चबा रहा था। वह एक ककड़ी को अपने हाथ में लेकर उसका आधा मुँह में घुसेड़ता था और अपने पीले-पीले लम्बे दातों से उसे काटकर दो टुकड़े कर डालता था। नमक का पानी उसके मुँह के दोनों किनारे से निकल कर उसके गालों को भिगो देता था।

फोमिच पत्थर की मूर्ति की तरह अचल, उसी जगह, हाथ-पाँव

फैलाये, पड़ा रहा । वह स्थिर दृष्टि से शराब के पीपे की ओर ताकता रहा । इस वक्त तक पीपा आधे से अधिक खाली हो गया था ।

टायपा ज़मीन की तरफ एक-टक देख रहा था । गोश्त को ताबड़-तोड़ चबा-चबाकर अपने पुराने दाँतों से कुचल रहा था ।

लीविङ्ग पेट के बल पड़ा था । समय-समय पर खाँसता भी था । और लोग चुप थे, या तो बैठे थे या लेटे हुए थे । उनके फटे-चिथड़े कपड़े बिखर रहे थे । बड़ी मुश्किल से कोई उन्हें पहचान सकता था । कारण, गोधूली बेला की धुँधली रोशनी में वे उस आँगन में लेटे हुए थे, जिसमें कूड़ा-करकट का ढेर पड़ा था—जिसमें घास-पात का जंगल लगा था । नाना प्रकार से हाथ-पॉव फैलाये और सिकोड़े हुए, चिथड़ों के ढेर से ढँके हुए, वे लोग ऐसे मालूम पड़ते थे, मानों ऐसे डरावने जानवर हों, जिन्हें किसी भद्दी शक्ति ने खासकर मनुष्यों को चिढ़ाने के लिये बनाया हो ।

डेकन टरास शैतानी से मुस्कुरा रहा था । धीमी आवाज़ से गीत भी गा रहा था । उधर अद्धा टरास काम-वाण से पीड़ित होकर कटाक्ष कर रहा था !

रात हो रही थी । आकाश में तारे चमकने लगे थे । शहर की तरफ, पहाड़ी पर, रोशनी दिखाई दे रही थी । नदी की ओर से नाविकों की सिटी की आवाज़ सुन पड़ती थी ।

बेबिलफ के शराबखाने के किवाड़ कड़कड़ाहट के साथ खुले और उनके शीशों से भी शनक्षनाहट के-से शब्द सुन पड़े थे ।

दो काले आदमी उस आँगन में धुसे और उन शराब के नशे में चूर लोगों के पास—जो शराब के पीपे के पास बैठे थे—पहुँचे । एक ने कर्कश स्वर में पूछा—तुम भी तो पीते हो न भाई ?

नर-पशु

तबतक टरास के सिर के ऊपर से एक हाथ फैल कर गया, और बोतल को पकड़ लिया। जब बोतल से शराब गिलास में ढाली जाने लगी, तब एक अजीब गरगराहट की आवाज़ सुन पड़ी। एक कोई बड़े ज़ोर से खाँसने भी लगा।

एक घना-सा भारी मेघ, उस सराय के मकान के ऊपर, आकाश में, इधर-से-उधर धीरे-धीरे चला गया। शराबियों में से एक खरटि मारता हुआ सो रहा था। बाकी लोग, जो अब तक पीकर उन्मत्त नहीं हुए थे, अभी तक पी ही रहे थे। ठहर-ठहर कर बातें भी कर रहे थे। इस प्रचुर भोज और मद्य-पान से सन्तुष्ट हो कुछ लोग तान भी लड़ा रहे थे।

कप्तान फोमिच जमीन से अपना सिर उठाकर गानेवालों से बोला—
ऐ कुत्तो ! तुम लोग कुछ क्षण के लिये अपना भूँकना बन्द करो।

इतना कहकर वह फिर कान लगाकर कुछ सुनने लगा। बोला—
मालुम पड़ता है, घोड़ा-गाड़ी पर कोई आ रहा है।

रात के वक्त उस तरफ घोड़ा-गाड़ी का आना बड़ा भयप्रद समझा जाता था। अचानक सर्वसाधारण का ध्यान उस ओर आकर्षित हो जाता था।

सब लोग सिर उठाकर सुनने लगे। रात की नीरवता में पहियों की घरघराहट साफ सुनाई देती थी।

गाड़ी समीप आ पहुँची। कर्कश शब्दों में किसी ने पूछा—अरे वह सराय किधर है ?

कप्तान फोमिच चिल्ला उठा—पुलिस ! पुलिस !!

एक नशावाज़ धीरे से बोल उठा—अबे बेवकूफ, क्या पुलिस गाड़ी पर चढ़कर आवेगी ?

फोमिच उठकर फाटक के पास गया। किसी ने लड़खड़ाती ज़बान में पूछा—क्या यही सराय है ?

कप्तान फोमिच ने जोर से जवाब दिया—हाँ, यही कप्तान फोमिच का मकान है ।

हाँ, तब यही है, यही है । यही मकान है, जहाँ एक पत्र का संवाद-दाता 'टिटोफ' रहता था !

अहा ! तुम उसे लौटा कर ले आये हो !

हाँ ।

प्रमत्त अवस्था में !

नहीं, बीमारी की हालत में !

इसका मतलब है कि वह नशे में बे-तरह चूर है । क्यों ! अरे ओ स्कूलमास्टर ! तुम होश में नहीं हो क्या !

कप्तान ने हुक्म दिया—वहाँ क्षण रोशनी करो ।

'पुच्छल तारा' ने सराय के अन्दर जाकर लम्प जलाया । आँगन में उजाला छा गया । कप्तान, एक अपरिचित मनुष्य की सहायता से, स्कूलमास्टर को सराय के अन्दर ले गया । उसका सिर, कप्तान की छाती पर, बहुत ढीले तरीके से, झूल रहा था । उसकी टाँगें जमीन की ओर तथा उसकी बाँहें हवा में इस तरह लटक रही थीं, मानों वे टूट गई हों ।

टायपा की मदद से उन लोगों ने उसे एक तख्तपोश पर लिटाया । वह जोरों से कराह रहा था । उसका सारा शरीर भय से काँप रहा था ।

अपरिचित मनुष्य ने कहा—हम दोनों एक ही अखबार के आफ्रिस में काम करते थे । यह बड़ा ही अभाग था । मैंने इससे कहा कि इच्छा हो तो मेरे घर पर ठहर जाओ, मुझे कोई असुविधा नहीं होगी । लेकिन यह गिड़गिड़ाने लगा कि मुझे घर पहुँचा दो । यह एकदम बेचैन हो

उठा। मुझे डर मालूम हुआ कि मानसिक चिन्ता से कहीं इसकी बीमारी न बढ़ जाय। इसी लिये मैं इसको यहाँ ले आया। इसने यहीं का पता बताया। यही मकान है न ?

फोमिच—क्या तुम सोचते हो कि इसका कोई दूसरा घर-द्वार है ?

इसके बाद कप्तान ने टायपा से कहा—टायपा, जाकर थोड़ा ठंडा पानी तो ले आओ।

उस नाटे अजनबी आदमी ने कहा—अच्छा, तो अब मैं समझता हूँ कि यहाँ मेरी कोई जरूरत नहीं है।

कप्तान—नहीं, अब यहाँ तुम्हारी कोई जरूरत नहीं है। तुम्हारे ऐसे यहाँ घनेरे पड़े हैं।

अच्छा, बन्दगी।

नाटा आदमी चला गया। फाटक पर खड़े होकर उसने ऊँचे स्वरसे कहा—यदि कोई ऐसी बात हो, तो मेरे दफ्तर में खबर देना। मेरा नाम ‘रिज़ोफ़’ है। मैं संक्षेप में मृत्यु-समाचार लिख दूँगा।

कप्तान—ऐं ! मौत की खबर ? अच्छा, इसके मर जाने पर मैं इसकी एक टाँग काट कर तुम्हारे दफ्तर में भेज दूँगा। लेकिन तुम्हारे ही पते से भेजूँगा। तुम्हारे लिये वह मौत की खबर से कहीं बढ़कर सुखदायिनी होगी। इसकी टाँगें बड़ी मोटी-ताज़ी हैं, कम-से-कम तीन-चार दिनों तक भोज देंगी ! मैं जानता हूँ कि जब यह बेचारा जीता था, तब तुम लोग इसी के आसरे जीते थे। इसलिये, अब जब यह मर जाय, तब भी इसी के सहारे रहो।

नाटा आदमी बड़बड़ाता हुआ चला गया।

कप्तान तख्तपोश पर स्कूलमास्टर की बगल में बैठा ! उसके माथे और छाती पर हाथ रखकर धीरे से पुकारा—फिलिप्पे ! ऐ फिलिप्पे !!

कप्तान, स्कूल-मास्टर के चेष्टा-रहित शरीर को हाथों से पोंछता और उसके बिखरे बालों को सम्हालता हुआ, बोला—अब मुश्किल है !

मृत्यु के समय की विकृत मुख-कान्ति देखकर कप्तान दुःख प्रकट करने लगा । लम्प से धीमी रोशनी निकल रही थी; उसकी बत्ती धुक-धुक कर रही थी । सराय की गन्दी दीवारों पर अन्धकार की छाया चुपचाप नाचने लगी ।

टायपा एक बाल्टी पानी ले आया और जमीन पर, स्कूल-मास्टर के सिरहाने के पास, रख दिया । उसकी बाँह पकड़कर अपने हाथ पर तौलने लगा ।

कप्तान निराशापूर्ण शब्दों में बोल उठा—अब पानी की कोई जरूरत नहीं है । अब किसी चीज़ की दरकार नहीं है ।

कुछ देर तक वे लोग स्कूलमास्टर की ओर ध्यानपूर्वक देखते हुए बैठे रहे । लीविङ्ग आँगन में लेटे-ही-लेटे पूछने लगा—अरे वहाँ क्या हो रहा है ?

कप्तान तुरत बोल उठा—यह मर रहा है ।

लीविङ्ग कौतूहलवश पूछने लगा—क्या किसी ने मार डाला है ?

कप्तान ने जवाब नहीं दिया । कारण, उस वक्त भी वह शराब पी रहा था !

लीविङ्ग सिगरेट जला कर बोला—यह ठीक है ।

मानों लीविङ्ग जानता था कि स्कूल-मास्टर के श्राद्ध में फिर भोज खाने का मौका मिलेगा !

मद्यप-मंडली में से एक हँसा ! दूसरा ज़ोरों से कराहने लगा । अभी तक अधिकतर लोग उन्मत्तावस्था में ही बेहोश पड़े थे । सिर्फ डेक्कन ट्रास ही बड़ी व्यग्रता जताता था । उसके होंठ काँप रहे थे ।

नर-पशु

वह अपना सिर पीट रहा था। कभी-कभी चित्ता उठता था—मृतात्मा को शान्ति मिले !

लीविङ्ग बोल उठा—चुप रह। क्यों नाइक भूँकता है ?

टायपा भी बोल उठा—अरे बेवकूफ ! जब जीवात्मा शरीर से निकली जा रही हो, तुम लोगों को चुप रहना चाहिये। निस्तब्धता भङ्ग करना ठीक नहीं।

आकाश-मंडल मेघों से आच्छादित था। वर्षा की आशङ्का बनी हुई थी। पृथ्वी पर शरद-ऋतु की नीरव रात्रि विराज रही थी। जो लोग गाढ़ी नींद में सोये हुए थे, उनके खरटे से रात की निस्तब्धता भङ्ग हो रही थी। कभी-कभी गिलास में शराब के ढाले जाने और खाद्य के चवाने से जो शब्द होता था, उससे भी शान्ति भङ्ग हो रही थी ! मेघ एकदम नीचे तक लटक आये थे। मालूम होता था, जैसे पुराने मकानों की छतों को पकड़ कर मध्य-मंडली के लोगों पर उलट देंगे।

कस्तान अपना सिर झुकाकर तुतलाता हुआ बोला—हाय ! मनुष्य को शोक या दुःख कैसा अभिभूत कर लेता है ! खासकर उस वक्त, जब उसका कोई दोस्त मर रहा हो !

किसी ने उसकी बात का जवाब नहीं दिया।

कस्तान ने फिर कहा—तुम सब लोगों में यह सबसे बढ़कर ईमानदार, फुर्तीला और भला आदमी था। मुझे इसके लिये बड़ा अफसोस है।

डेकन टरास ने बड़बड़ाकर, अपने समीप के अर्द्धनिद्रित मित्र को केहुनी से मारकर जगाता हुआ, चित्ता उठा—स्वर्ग के देवता उसका स्वागत करें !

लीविङ्ग उसके पास कूदकर गया और क्रोध से कान में कुछ कहता हुआ बोला—तुम चुप रहोगे या नहीं ?

कप्तान के पास एक शराबी चुपचाप जाकर बैठ गया और धीरे से प्रस्ताव किया—हम लोग फिर एक बार ढालें तो क्या हानि है ?

कप्तान ने टटोल-टटोल कर गिलास खोज निकाला । दोनों पीने लगे !

टायपा ने कहा—मैं जाकर देख आता हूँ; उसे किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं है ।

कप्तान खाँसता हुआ बोला—और किसी चीज़ की नहीं, सिर्फ़ कफ़न की ।

लीविङ्ग ने हाथ जोड़ कर कहा—इस बारे में अब बातें मत करो ।

टायपा के बाद 'पुच्छल तारा' उठ बैठा । टरास ने भी उठना चाहा, लेकिन वह नीचे गिर गया !

जब टायपा चला गया, कप्तान ने एक के कन्धे पर चपत मारकर धीमी आवाज़ में कहा—अरे हरामी ! क्या तुझे फिलिप्पे के लिये अफ़सोस नहीं हो रहा है ?

जेलखाने का भूतपूर्व दारोगा बोला—नहीं, ज़रा भी नहीं ! मैं जिन्दगी से इतना ऊब गया हूँ कि जब मैं किसी को मार डालने की बात सोचता हूँ, तब मुझे बड़ा उत्साह मालूम होता है !

कप्तान उदासीनता-पूर्वक बोला—हाँ, ठीक है; अरे तब क्या, हम लोग फिर एक गिलास पीएँ !

मैं सच कहता हूँ, यह बड़ा भला आदमी था ! इसके दिमाग़ की तारीफ़ करनी चाहिये !

हाँ, ठीक कहा आपने ! जब इसे रुपये मिल जाते थे, अपनी मित्र-मंडली में व्यय करने में ज़रा भी आनाकानी नहीं करता था !

नर-पशु

सराय की दीवारों पर परछाइयाँ अभी तक नाच रही थीं, जैसे चुपचाप आपस में लड़ रही हों !

तख्तपोश के ऊपर स्कूल-मास्टर निष्प्राण-सा पड़ा था ! उसकी आँखें एकदम खुली हुई थीं ! उसकी छाती फूल रही थी । मुँह के दोनों कोने से फेन निकल रहा था ! उसके चेहरे से मालूम पड़ता था कि वह कुछ बोलने की कोशिश कर रहा है, मगर बोल न सकने के कारण असह्य वेदना हो रही है ।

कप्तान उसके सामने जाकर बैठा ! वह चुपचाप उस मरते हुए आदमी को बड़े गौर से देख रहा था ! आखिर बोल उठा—फिलिप्पे, मुझसे कुछ बोलो तो सही । अपने दोस्त से तसल्ली का एक शब्द भी तो कहो । क्या तुम जानते हो कि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ ? तुम मेरे कितने प्रिय थे मित्र ! क्या कुछ भी मुझसे नहीं बोलोगे ?

स्कूल-मास्टर एक बार बड़े ज़ोरों से कराहकर, आर्त्तनाद करता हुआ, मर गया !

कप्तान, आगे-पीछे घूमता-फिरता हुआ, फिर कहने लगा—दोस्त फिलिप्पे ! तुम्हें क्या हुआ है ? क्या तुम्हारी इच्छा है कि मैं तुम्हारे लिये थोड़ी-सी शराब ला दूँ ? किन्तु इस समय न पीना ही तुम्हारे लिये अच्छा है । अपने को रोको, और अगर आखिर जी न माने, तो थोड़ा पी सकते हो ! आत्म-संयम के अभ्यास की क्या ज़रूरत है ? बोलो फिलिप्पे ।

यह कह कर स्कूल-मास्टर के शरीर को खींचकर अपने समीप ले गया ! फिर बोला—हाय ! तुम तो सो गये हो फिलिप्पे ! खैर, सो जाओ ! अच्छा सलाम । यह रात तुम्हारे लिये सुख-पूर्वक बीते ! कल मैं तुम्हें समझा दूँगा । आशा है, इस बात पर तुम्हारा विश्वास जमा दूँगा कि

नर-पशु

अपने दोस्त से कोई बात छिपाना ठीक नहीं होता । अच्छा जाओ, यदि मर न चुके हो, तो अब आराम से सो जाओ !

कप्तान फोमिच चला गया । वहाँ फिर निस्तब्धता छा गई । जाकर अपने साथियों से कहने लगा—वह सो गया है या मर गया है, मैं कुछ निश्चय नहीं कर सका । मेरा भी होस-हवास ठीक नहीं है ।

टायपा लेट गया । ‘पुच्छल तारा’ मार खाये हुई औरत की तरह सिसक-सिसक कर रोने लगा ‘लीविङ्ग’ भयङ्कर चीत्कार करता हुआ जमीन पर पड़ रहा । वह बोला—ऐ शैतान ! हम सबको दुनिया से ले चलो । यहाँ सब लोग दुःख के मूल कारण हैं । जब मेरा वक्त आवेगा मैं भी वैसे ही मरूँगा, जैसे यह मरा है । मैं किसी से खराब थोड़े ही हूँ !

ठीक है, ठीक है—चिल्लाता हुआ कप्तान फोमिच लड़खड़ाकर जमीन पर गिर पड़ा । फिर चिल्लाने लगा—जब समय आ जायगा, दूसरों की तरह हम सब भी मरेंगे । हा-हा ! हो-हो !! हम लोग दूसरों की तरह रहते हैं या नहीं, यह कोई बड़ी बात नहीं है; लेकिन हम लोग दूसरों की तरह मरेंगे जरूर । कारण, यही जीवन का परिणाम है । आदमी मरने ही के लिये जीता है । ऐसी हालत में यह कहना या सोचना व्यर्थ है कि वह किस बीमारी से मरा या कैसे मरा ! सब बातें एक-सी हैं । चलो यारो, हम लोग फिर एक दफे और पीएँ । दूसरी बार, तीसरी बार, जब तक ज़िन्दगी रहे, बराबर ढालते ही चलें ।

वर्षा होने लगी । निविड़ अन्धकार ने उन समाज-बहिष्कृत लोगों के शरीरों को ढँक लिया । उस सराय से जो टिमटिमाती हुई रोशनी निकलती थी, वह और भी पीली पड़ गई । कुछ देर तक धुकधुक करती हुई जलती रही, पीछे अदृश्य हो गई । या तो हवा ने उसे बुझा दिया, या तेल ही चुक गया था । उस सराय की टिन की बनी छत पर जो वर्षा

नर-पशु

की बूँदें पड़ती थीं, वे ओले की तरह बड़ी चोट के साथ गिरती थीं। शहर की ओर से घंटे की आवाज कभी-कभी सुनाई देती थी, जिससे भालूम पड़ता था कि शहर के पहरेदार जगे हुए अपने काम पर डटे हैं। गिरजाघरों की चोटी से जो घंटे की आवाज आती थी, वह उस अन्धेरे में धीरे-धीरे बिलीन हो जाती थी; लेकिन जब तक घंटे का एक चोट का शब्द लुप्त होता था, दूसरी दफे घंटा फिर ठोका जाता था—इसके बाद तीसरी दफे, और इसी तरह सिलसिला जारी रहता था।

दूसरे रोज सबेरे टायपा ही पहले-पहल जागा। वह उठते ही आकाश की ओर देखने लगा। भूरे रंग के प्रभात में ठंडा और आर्द्र अन्धकार सूरज को छिपाये हुए था। आकाश के नीले रंग को ढँककर वह पृथ्वी पर उदासीनता फैला रहा था।

टायपा अपनी केहुनी के बल झुककर देखने लगा कि रात के पीने से कहीं शराब थोड़ी बची तो नहीं है। बोतल तो पास ही में रखी थी, लेकिन एकदम खाली पड़ी थी। अपने साथियों के ऊपर से रेंगता हुआ वह बोतल के पास गया और टटोलने लगा। सिर्फ एक बोतल भरी मिली। उसने उसे पी डाला और अपनी बाँह ही से अपना मुँह पोछ डाला। तब कप्तान से कहने लगा—अरे उठो भाई, क्या सुनते नहीं ?

कप्तान ने बड़ी मुश्किल से सिर उठाया। वह टायपा की ओर घुँघली और मदमाती आँखों से देखने लगा।

टायपा—हम लोगों को पुलिस में ज़रूर खबर देनी चाहिये।

कप्तान—बात क्या है ?

टायपा—क्यों, तुम जानते नहीं ? वह तो मर गया !

कौन मरा ?

स्कूल-मास्टर।

नर-पशु

हाय फिलिप्पे ! क्या सबमुच तुम मर गये !

टायपा ज़रा झुँझलाकर बोला—अरे तुम एकदम भूल गये क्या ?

कप्तान अँगड़ाइयाँ लेकर अपनी पीठ की हड्डियों को कड़कड़ाने लगा । कहा—अरे जाकर इत्तला दे आओ भाई ।

टायपा गम्भीर बन कर बोला—मैं नहीं जा सकता । मैं उन भूतों की सुरत भी देखना नहीं चाहता ।

खैर, जाओ, डेकन को जगा दो ।

हाँ, यह ठीक है । उठो, ऐ डेकन, जागो ।

कप्तान तख्तपोश के पास जा खड़ा हुआ, जिसपर स्कूल-मास्टर हाथ-पाँव फैलाये पड़ा था । उसका बायाँ हाथ उसकी छाती पर था, दाहिना पीठ के नीचे दबा था । कप्तान यही बात सोचने लगा कि गत तीन वर्षों से वे लोग एक ही जगह कितने हिले-मिले-से रहे हैं ।

टायपा अपना सिर इस तरह सरोष उठाये हुए आया, मानो सींग मारने वाला बकरा हो । वह स्कूल-मास्टर के सामने जाकर खड़ा हुआ । कुछ देर तक मृतक के शान्त एवं गम्भीर मुखमंडल की ओर देखता रहा । फिर कुछ विचारकर बोला—निश्चय ही यह मर चुका है । इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है । हाय ! मैं भी अब अधिक दिन नहीं जीऊँगा ।

कप्तान झुँझलाकर बोला—तुम्हारे मरने का वक्त भी आ ही गया है ।

टायपा—सो तो ठीक है, लेकिन तुम्हें भी अब मर जाना चाहिये । आज-कल जिस दशा में रहते हो, उससे तो मर जाना ही अच्छा है ।

वे लोग बहुत देर तक अपने मरे हुए साथी के पाँव की तरफ़ बैठे रहे । बीच-बीच में कभी-कभी उसकी तरफ़ बड़े शौर से झाँक भी लेते थे; परन्तु पीछे दोनों-के-दोनों शोकाभिभूत हो जाते थे ।

नर-पशु

अन्त में टायपा ने पूछा—क्या इसे तुम दफनाओगे ?

कप्तान—नहीं, पुलिस ही इसे दफनाने का इन्तज़ाम करेगी ।

टायपा—करना तो तुम्हीं को चाहिये ; क्योंकि तुम्हींने इससे उन रुपयों में हिस्सा लिया है, जो इसे बेबिलफ द्वारा दरखास्त की लिखाई में मिले थे । यदि तुम्हारे पास काफी रुपये न हों, तो मैं दे सकता हूँ ।

कप्तान—मेरे पास वे रुपये तो मौजूद हैं, लेकिन मैं दफनाने नहीं जाता !

टायपा—यह तो अच्छा नहीं मालूम होता । ऐसी हृदयहीनता दिखाना मानों मरे हुए आदमी को लूटना है । मैं सब लोगों से कह दूँगा कि तुम इसके रुपये रखे हुए हो ।

फोमिच क्रोध और अभिमान के साथ बोला—तुम पुराने बेवकूफ हो ।

मैं हरगिज़ बेवकूफ या दगाबाज़ नहीं हूँ । लेकिन तुम्हारा यह आचरण बड़ा ही असभ्यतापूर्ण और मित्रता के विरुद्ध हो रहा है ।

अच्छा, जाओ, उपदेश मत दो, मुझे अकेला ही छोड़ दो ।

कितने रुपये हैं ?

फोमिच असावधानतापूर्वक बोला—पच्चीस के लगभग ।

उसमें से मुझे सिर्फ पाँच ही देना ।

कप्तान झुंझलाकर टायपा के मुँह की ओर तीखी नजरों से देखकर बोल उठा—ऐ बुढ़े ! न मालूम तुम कैसे बदमाश हो ! मैं एक कौड़ी नहीं दूँगा—नहीं दूँगा । इसी रुपये से मैं इस बेचारे का एक स्मारक-चिह्न बनवा दूँगा ।

उससे इसको क्या फायदा होगा ?

नर-पशु

फायदा हो या न हो, एक पत्थर का टुकड़ा खरीद कर इसकी कन्न पर रख दूँगा ।

उससे क्या होगा ! ऐसी खन्त-भरी बातें क्यों करते हो !

तुम्हें इससे मतलब ?

अच्छा, कुछ परवा नहीं । अब मैं लोगों से कहकर तुम्हारी कलाई खोल दूँगा ।

फोमिच उसकी ओर गौर से देखकर चुप हो गया ।

उसी समय वहाँ पुलिस के अफसर, मजिस्टर और डाक्टर आ धमके । तीनों ही उस मुर्दे के पास गये । लाश की ओर इशारा करके पूछा—यह आदमी कैसे मरा है ?

कप्तान—उसी आदमी से पूछो । मैं जो बताऊँगा, तो तुमलोग विश्वास नहीं करोगे ।

मजिस्टर ने कड़क कर पूछा—तुम्हारे कहने का क्या मतलब है ?

यही कि मेरे खयाल से यह एक ऐसी बीमारी से मरा है, जिसे सहने का इसे अभ्यास नहीं था ।

खैर, ठीक है । क्या यह बहुत दिनों से बीमार था ?

डाक्टर बीच ही में बोल उठा—इसे उठाकर बाहर ले आना ठीक है । यहाँ कुछ भी दिखाई नहीं देता । इसकी देह पर कुछ चिह्न देखे जा सकते हैं ।

पुलिस-अफसर ने फोमिच से कहा—जाओ, किसी को बुला लाओ, लाश बाहर निकाली जायगी ।

कप्तान ने नम्र भाव से कहा—हुजूर, खुद आप ही उन लोगों को बुलाइये । मुझे लाश के हटाये जाने में ज़रा भी आपत्ति नहीं है ।

पुलिस-अफसर बिगड़कर बोला—हट यहाँ से बदमाश !

फोमिच अपनी जगह से ज़रा भी न हटा। नम्र शब्दों में, लेकिन गुस्ताखी के साथ, बातें करता रहा। बोला—यहाँ पर जाँच करना आसान होगा।

पुलिस-अफसर गरज उठा। उसका चेहरा क्रोध के मारे लाल हो गया। वह ललकार कर बोला—अबे हरामी का पिल्ला ! हट जा यहाँ से, ले यह चपत, इसे याद रखना।

इसी समय पेटनिकफ फाटक के अन्दर पैठा। सबको सलाम करके मीठी बोली में बोला—किसी की हत्या तो नहीं हुई है ?

मजिस्टर ने जवाब दिया—ऐसा ही मालूम होता है।

पेटनिकफ आह भरता हुआ बोला—हे भगवन् ! इसीलिये मैं बराबर इस भले आदमी को मना किया करता था कि यहाँ आश्रय लेने मत आया करो; लेकिन मेरी बात इसकी टेढ़ी खोपड़ी में नहीं घुसी ! ये लोग बड़े भयंकर जीव हैं !

पुलिस-अफसर—हम लोग इस सराय पर कब्जा कर लेंगे।

इसके बाद कप्तान की ओर देखकर बोला—मैं उस आदमी को भी भली भाँति जानता हूँ।

फोमिच बोला—हाँ दोस्त, हम लोग तो एक ही अखाड़े के जवान ठहरे। कई दफे मैंने तुम्हारी ज़वान बन्द करने और कलम रोकने के लिये तुम्हें घूस दिया है।

पुलिस-अफसर ने उपस्थित लोगों से कहा—महाशयों, आप लोगों ने इसकी बात सुन ली है न ? मैं आप लोगों से अनुरोध करता हूँ कि कृपया इसकी बातों को स्मरण रखें, मैं इसे अब माफ नहीं कर सकता। अच्छा बच्चू ! मज़ा चखोगे। मेरी दोस्ती कभी न भूलोगे। तुम्हें यादगार के तौर पर मैं एक अमिट चिह्न दे जाऊँगा।

नर-पशु

फोमिच शान्त होकर बोला — दोस्त, जब तक तुम इस जंगल से बाहर न हो जाओ, बेशी हल्ला गुल्ला मत करो ।

डाक्टर नौजवान आदमी था । चश्मा लगाये हुए बड़ा सुन्दर मालूम पड़ता था । पेटनिकफ के चेहरे पर विजय का गर्व झलक रहा था ।

एक कोई काला-कलूटा आदमी उसी समय चुपचाप आया और पेटनिकफ के पीछे खड़ा हो गया । उसकी टुड्ढी पेटनिकफ के माथे से ऊपर दिखाई देने लगी । डेकन टराम उसके पीछे खड़ा होकर झाँकने लगा ।

काले-कलूटे आदमी ने भयंकर मुँह बनाकर पेटनिकफ के सिर पर बड़े जोर से छींका । पेटनिकफ चौंककर चिल्ला उठा और उछल कर अलग जा खड़ा हुआ । पुलिस-अफसर के पाँवों में धक्का लगकर ज़रा—सी चोट भी आ गई ।

पेटनिकफ ने काँपते हुए और उस काले-कलूटे आदमी की ओर इशारा करते हुए, पुलिस से कहा—अब तो शायद आप लोग समझ गये होंगे कि ये लोग किस तरह के आदमी हैं !

फोमिच हँसी के मारे काँप रहा था । डाक्टर और मजिस्टर भी हँसने में उसका साथ दे रहे थे ।

उधर सराय के फाटक के पास अजीब तरह के लोग एकत्र होने लगे । कोई लाल-लाल चमकीली आँखों वाला था, कोई बिखरे बालों वाला था, कोई ऊँघ रहा था, कोई टकटकी बाँधकर देख रहा था और कोई कुछ चबा रहा था ।

एक पुलिस-सिपाही उन लोगों की पीठ पर झूलते हुए चिथड़ों को पकड़ कर और उन्हें धक्के देकर फाटक से बाहर निकालता हुआ जोर से बोल उठा—तुम लोग कहाँ घुसे जा रहे हो ?

नर-पशु

लेकिन वह सिपाही अकेला था और वे लोग बहुत बड़ी संख्या में थे। इसलिये वे चुपचाप घुसते चले गये। उन लोगों की ढकार से खट्टी शराब की बू निकल रही थी।

गूदड़वालों की भीड़ देखकर डाक्टर बड़े जोर से हँस पड़ा। मजिस्टर ने बड़ी तत्परता से अपनी हँसी रोक ली।

पेटनिकफ ने कहा—कुग करके आज आप लोग मेरी छोटी स्नोपड़ी खाली कर दीजिये। मैं चाहता हूँ कि आज ही इसे गिरवा डालूँ। आप लोग जल्दी अपना इन्तज़ाम कर लें। नहीं तो मुझे पुलिस की मदद लेनी पड़ेगी।

फोमिच हँसता हुआ बोल उठा—इसका मतलब यह है कि आप इस सराय में रहने वाले लोगों के साथ भलमनसी का बर्ताव करना नहीं चाहते ?

पेटनिकफ चुप हो गया। उसने अपनी जेब से एक मनी-बैग निकाला। कुछ देर तक उसमें रखे हुए रुपये-पैसे गिनता रहा। अन्त में दस आने पैसे निकाल कर मुर्दे के पाँव के पास रख आया; साथ ही, यह भी कहा कि ईश्वर इसकी आत्मा को शान्ति दें; ये पैसे इस पापमयी मिट्टी की बनी मूरत के दफनाने में खर्च हों !

कप्तान गरज कर बोला—यह क्या ! तुम दफनाने का खर्च दे रहे हो ! इसे वापस ले लो, ले लो, मैं हुक्म देता हूँ। बदमाश ! तुम्हारी इतनी हिम्मत कि एक ईमानदार आदमी की अन्त्येष्टि क्रिया के लिये, बेइमानी से हासिल किया हुआ पैसा दोगे ? तुम्हारी हड्डी-पसली तोड़ डालूँगा।

डरा हुआ पेटनिकफ गिड़गिड़ा कर पुलिस-अफसर की शरण में चला गया। डाक्टर और मजिस्टर बाहर चले गये।

अभी फोमिच की उत्तेजना शान्त नहीं हुई थी। पेटनिकफ के सिर पर घूसा जमाकर वह बड़े जोर से गरज उठा। वह अपनी लाल-लाल आँखों से पेटनिकफ को घूर रहा था। फिर बोला—चोटा बदमाश कहीं का ! अपने पैसे उठा ले। अबे मरदूद, मैं कहता हूँ, उन्हें वापस ले ले। नहीं तो उन्हें उठाकर मैं तेरी आँखों में घुसेड़ दूँगा। अपना भला चाहता है, तो अभी पैसे उठा ले।

पेटनिकफ ने काँपते हुए एक हाथ को पैसे लेने के लिये बढ़ाया और दूसरे हाथ से फोमिच के घूसे-तमाचे की धमकियों की ओर ढाल ताने हुए था। इसी दशा में वह पुलिस से कहता भी जाता था—आप लोग गवाह रहें। यह अत्याचार देखते हैं न ? यही भले आदमी का काम है ?

लीविङ्ग अपनी कर्कश ध्वनि में बोल उठा—अरे अभागा दूकानदार ! हम लोग भले आदमी कब के ?

पुलिस बिगुल बजा रही थी और पेटनिकफ की रक्षा भी कर रही थी; क्योंकि वह पुलिस का शरणागत था। किन्तु फोमिच ने अवसर पाते ही पेटनिकफ के कॉलर को पकड़ कर ऐसा धक्का दिया कि वह दरवाजे से बाहर लुढ़क गया। वह धड़ाम से उन गूदड़वालों के पास जा गिरा। चिल्लाता हुआ बोला—अरे बाप रे बाप ! अरे बाबा रे बाबा ! ये लोग मुझे मार रहे हैं। दौड़ो लोगो ! खून ! खून !! इन हत्यारों ने मुझे मार ही डाला।

एक ने धीरे से अपना पाँव उठाया और पेटनिकफ के सिर पर जोर से एक लात जमा दी। लीविङ्ग अत्यन्त हर्षित होकर उसके चेहरे पर थूकने लगा।

पेटनिकफ फिर अपने हाथ-पाँव के बल उठने लगा। तबतक दूसरा

धक्का खाकर फिर लुढ़क गया। किसी तरह रेंगता हुआ आँगन की तरफ गया। सब लोग बड़े ज़ोर से ठहाका मार कर हँस रहे थे। इसी समय पुलिस के दो सिपाही आँगन में पहुँच गये। फोमिच की तरफ इशारा करके विजयध्वनि करते हुए बोले—इसे पकड़ लर बाँध लो।

फोमिच अपने-आपको बचाता हुआ बोला—मैं ललकार कर कहता हूँ कि मुझे पकड़ लो, तो समझूँ कि तुम लोगों ने अपनी माँ का दूध पिया है। मैं मानूँगा नहीं; मगर तुमसे पकड़ा भी न जाऊँगा।

इसी समय एक बैल-गाड़ी लुढ़कती हुई आँगन में पहुँची। दो-तीन अपरिचित मनुष्य स्कूल-मास्टर की लाश को उठाकर सराय से बाहर ले जाने लगे।

फोमिच चुप था। वह दो पुलिसों के बीच में खड़ा था। स्कूलमास्टर की जो लाश बैल-गाड़ी पर जा रही थी, उसे वह बड़े गौर से देख रहा था।

पुलिस-अफसर ने, कप्तान फोमिच की तरफ इशारा करते हुए, सिपाहियों से कहा—इसे भी ले जाओ।

फोमिच ने इस गिरफ्तारी का विरोध नहीं किया। चुपचाप आँगन से बाहर निकल गया। गाड़ी हाँकनेवाला, घोड़े की पीठ पर लगाम पटकता हुआ, चिल्लाकर बोला—चल बे घोड़े चल।

गाड़ी चली—आँगन की ऊबड़-खाबड़ भूमि पर लुढ़कती और बेतरह हिलती हुई चली। स्कूलमास्टर की मृत देह कुछ चिथड़ों से ढँकी थी। गाड़ी के हिलने-डोलने से लाश भी हिलने-डोलने लगी। उसके चेहरे से ऐसा मालूम पड़ता था, मानो वह उस सराय से सदा के लिये बिदा लेने के कारण मुस्कुरा रहा है!

पेटनिकफ अपनी टोपी और पोशाक की धूल झाड़ने लगा। उसके

नर-पशु

मुख-मंडल पर उस समय सन्तोष और आत्म-विश्वास के भाव झलकने लगे, जब उसने देखा कि कप्तान फोमिच को पुलिसवाले शहर की तरफ लिये जा रहे हैं और उसके हाथ भी उसकी पीठ पर बँधे हैं ! पेटनिकफ त्रिज्योल्लासपूर्ण हँसी हँसने लगा ।

लेकिन यकायक वह ठिठक गया । काँपते-काँपते देखा—उसके सामने एक बूढ़ा आदमी खड़ा था, जिसके सारे शरीर पर चिथड़े लदे थे । वह बड़ा भयङ्कर दीख पड़ता था । वह अपने हाथ में एक लाठी भी लिये हुए था । उसकी पीठ पर एक बड़ा-सा बोरा था, जिसके बोझ से वह दबा जा रहा था ।

पेटनिकफ चिल्लाकर पूछने लगा—तुम क्या चाहते हो ? कौन हो ?

एक कर्कश स्वर में उत्तर मिला—क्यों ! मैं एक आदमी हूँ ।

एक आदमी ? क्यों जी, क्या आदमी की सूरत ऐसी ही होती है ?

आदमी अनेक प्रकार के होते हैं । ईश्वर की जैसी इच्छा होती गई, वैसे आदमी बनते गये । कुछ तो मुझसे भी गये-गुजरे हैं ।

वह वृद्ध पुरुष चुपचाप बड़े गौर से उस आँगन की भूमि को नापता और अन्दाज़ करता हुआ चला जा रहा था । उसकी दाढ़ी लम्बी और भूरे रङ्ग की थी ।

उस पुराने मकान की छत पर एक काग बैठा बड़े गर्व के साथ बोल रहा था । कभी-कभी वह चञ्चल दृष्टि से चारों ओर ताकता था, कभी आगे और कभी पीछे की ओर फुदकता था । उसकी गर्दन आगे की ओर झुकी हुई थी ।

नर-पशु

भूरे रंग के बादल, जो आकाश को ढँके हुए थे, ऐसे प्रतीत होते थे, मानों वे टूट-टूटकर जल-धारा के रूप में पृथ्वी पर गिरेंगे और मूसल-धार वर्षा करके भूतल के मलिन और दुर्गन्धित पदार्थों के साथ-साथ संसार के दुःख-दारिद्र्य को भी बहा ले जायेंगे ।

उच्चकोटि के उपन्यास और कहानियों

के

लिए



काशी

को न भूलिये ।

